A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 24 जुलाई, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 315, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

क्या 'डेमोक्रेसी' की जगह 'कॉस्मोक्रेसी' एक बेहतर विकल्प हो सकती है?

गणेश देवी

मेरे कई मित्र मुझसे कहते रहते हैं कि वे भूल गए हैं कि चैन की नींद किस चिड़िया का नाम है। भविष्य की अनिश्चितताओं से वे लगातार चिंतित रहते हैं- अंतरराष्ट्रीय नियामकों के पतन, प्रतिशोध के नाम पर हो रहे युद्ध, निर्दोष नागरिकों की बेपरवाह हत्या, राष्ट्राध्यक्षों के सनक भरे फैसले, विश्वविद्यालयों पर अंकुश, छात्रों के निष्कासन, जंगल की विनाशकारी आग, बड़े पैमाने पर आने वाली बाढ़, अप्रत्याशित तापमान, सोशल मीडिया का बहरा कर देने वाला शोर। इस तरह हर जगह डर व आतंक के प्रसार ने उन्हें परेशान कर रखा है।

कुछ लोग बताते हैं कि एक सदी पहले यानी 1920 के दशक के आसपास दुनिया बहुत अलहदा किस्म की हुआ करती थी। अफसोस, सिर्फ़ एक सदी बाद प्रकृति और मानव के बीच सामंजस्य, राष्ट्रों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और लोकतंत्र की अवधारणा बड़ी तेजी से गायब होती जा रही है।

अतीत का मोह समझ का विस्तार तो नहीं करता लेकिन यह एक ताजादम सोच को तो प्रेरित कर ही सकता है। 'द इकोनॉमिस्ट' का हालिया वैश्विक लोकतंत्र सूचकांक बताता है कि 2024 में, 166 देशों में से केवल 25 देशों में रहने वाली विश्व की कुल आबादी का 6.6 प्रतिशत ही पूर्ण लोकतंत्र का लाभ उठा रहा है। 2006 में पहले वैश्विक लोकतंत्र सूचकांक ने 28 देशों को, जो विश्व की 13 प्रतिशत आबादी का प्रतिनिधित्व करते थे, 'पूर्ण लोकतंत्र ' का दर्जा दिया था। दस साल बाद, 2016 में, इसमें तेज गिरावट दर्ज की गई, जिसमें 19 देश और विश्व की केवल 4.5 आबादी ही इस श्रेणी में थी।

'द इकोनॉमिस्ट' अपने परिणामों को 60 मापदंडों के आधार पर चार श्रेणियों में पेश करता हैः 'पूर्ण लोकतंत्र', 'दोषपूर्ण लोकतंत्र', 'मिलीजुली व्यवस्था', और 'सर्वसत्तावादी शासन'। पिछले दो दशकों में, विश्व के पांचवें हिस्से से भी कम देशों को पूर्ण लोकतांत्रिक देश के रूप में वर्णित किया गया है। अब 2025 में विश्व की शीर्ष 10 'बड़ी अर्थव्यवस्थाओं' में से केवल तीन को स्पष्ट लोकतांत्रिक साख प्राप्त है। ये 10 बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं- संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, चीन, जर्मनी, भारत, जापान, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, इटली, कनाडा और ब्राजील। इनमें से केवल तीन–जर्मनी, जापान और कनाडा–को लोकतंत्र सूचकांक में 'पूर्ण लोकतंत्र' की श्रेणी में शामिल किया गया है, छह देश–अमेरिका, भारत, फ्रांस, यूके, इटली और ब्राजील–को 'दोषपूर्ण लोकतंत्र ' के रूप में दिखाया गया है, और चीन को 'सर्वसत्तावादी शासन' के रूप में चिह्नित किया गया है।

जब हम अर्थशास्त्र से समाजशास्त्र की ओर बढ़ते हैं, तो तस्वीर और भी निराशाजनक हो जाती है। 'द इकोनॉमिस्ट' के मानकों के अनुसार, दस सबसे अधिक आबादी वाले देशों में, एक भी देश में 'पूर्ण लोकतंत्र' की मौजूदगी नहीं है। इनमें भारत, चीन, अमेरिका, इंडोनेशिया, पाकिस्तान, नाइजीरिया, ब्राजील, बांग्लादेश, रूस और इथियोपिया शामिल हैं।

देशों की इस सूची को विभिन्न अन्य विचारों, जैसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, सरकारी निकायों में लिंग और नस्ल का अनुपात, सूचना तक पहुंच, संवैधानिक लोक व्यवहार, न्याय का निष्पक्ष वितरण और राजनीतिक वित्तपोषण में पारदर्शिता के आधार पर जांचा-परखा जा सकता है। लेकिन तब भी नतीजा वही निकलेगा। एक शासन व्यवस्था के रूप में लोकतंत्र तेजी से कमजोर हो रहा है, लेकिन यह अभी भी सार्वजनिक विमर्श में प्रचलित है। अधिकांश 'दोषपूर्ण लोकतंत्र' या 'हाइब्रिड सिस्टम' अभी भी खुद को लोकतंत्र ही कहा जाना पसंद करते हैं। यहां तक कि सबसे खराब सर्वसत्तावादी शासन भी लोकतंत्र की अवधारणा को स्पष्ट रूप से नकारना पसंद नहीं करते। लोकतंत्र अभी भी विश्व की राजनीतिक कल्पना को एक सार्वजनिक रूप से प्रशंसित विचार और हर प्रकार के राजनीतिक व्यवस्था के लिए वैधता प्राप्त करने के लिए एक आकर्षक शब्द के रूप में प्रभावित करता है।

इसके अलावा, कई देशों में अभी भी राजनीतिक दल हैं, जो लोकतंत्र को पुर्नस्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। लगभग हर जगह, नागरिक समाज संगठन सर्वसत्तावादी शासनों की लहर को पलट देने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, अप्रैल के आखिरी सप्ताह में, लगभग 90 देशों के लोकतांत्रिक दलों ने हैदराबाद में एकत्र होकर आगे की राह पर विचार किया। पिछले 10 वर्षों में कई बार, दुनिया के कई हिस्सों में सर्वसत्तावादी शासनों के खिलाफ नागरिक समाज के बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन देखे गए हैं। फिर भी, लोकतंत्र समर्थक नागरिक समाज समूहों, दलों और राष्ट्रों के बीच इस बात पर सहमति नहीं बन पाई है कि लोकतंत्र की अवधारणा को कैसे सुरक्षित रखा जाए। इस दिशा में हमें अतीत से बहुत कुछ सीखना है।

अभी हाल ही में ऑस्ट्रेलियाई दार्शनिक जॉन कीन की किताब 'द शॉर्टेस्ट हिस्ट्री ऑफ डेमोक्रेसी' (2022) प्राचीन सीरिया में शासन की विधि के रूप में 'परामर्श' के उद्भव से लेकर, ग्रीक और लैटिन इतिहास में इसके विभिन्न रूपों, लॉक और रूसो के समय से इसके आधुनिक रूपों, और हमारे वर्तमान समय तक की यात्रा का वर्णन करती है।

उनका यह आख्यान उस लंबी यात्रा के उतार-चढ़ाव को दर्शाता है जिसे कीन मूलतः 'लोकतंत्र' कहते हैं। वे इसे तीन चरणों में विभाजित करते हैंः पहला, सभा आधारित लोकतंत्र जहां लोगों के बीच आमने-सामने परामर्श होता था; दूसरा है संसदीय लोकतंत्र वाला चरण, जिसमें निर्वाचित प्रतिनिधि बड़े समूहों के प्रतीक बनते हैं; और तीसरा है- निगरानी लोकतंत्र, जिसमें नागरिक स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर तक कई स्तरों पर परामर्श में भाग लेते हैं। कीन के एक अन्य तर्क के अनुसार, लोकतंत्र के भविष्य में एक विकल्प 'कॉस्मोक्रेसी' का हो सकता है। कॉस्मोक्रेसी वास्तव में क्या हो सकती है और यह लोकतंत्र से कितनी अलग होगी? इसके बारे में कीन नहीं, बल्कि पोलिश राजनीतिक दार्शनिक हेनरिक स्कोलिमोव्स्की (1930-2018) तर्क देते हैं कि होमो सेपियन्स का प्रकृति से पूर्ण विच्छेदन हो चुका है। इसका समाधान यह है कि सत्ता और सरकार को जीवन के सभी रूपों–पौधों, जानवरों, पक्षियों और मछलियों–के प्रति संवेदनशील बनाकर, उनके प्रति बेहतर कानून बनाकर समूची जीवन और शासन व्यवस्था को पुनर्संयोजित किया जाए।कीन आगे कहते हैं कि शायद आंशिक-मशीन, आंशिक-मन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता को भी जीवन के व्यापक ताने-बाने में शामिल किया जाना चाहिए। इस प्रकार, डेमोस, जो लोकतंत्र की नींव बनाता था, उसकी जगह कॉस्मोस ले सकता है, जिसमें अस्तित्व के सभी रूप और संभावनाएं शामिल हों। कॉस्मोक्रेसी के समर्थक उन विचारों को विकसित कर रहे हैं जो कानूनों और जीवन के सभी रूपों को आपस में समाहित कर देंगे. क्या यह कभी साकार हो सकेगा? हालांकि कॉस्मोक्रेसी हर दोषपूर्ण लोकतंत्र के लिए विकल्प नहीं हो सकती। एकमात्र विकल्प लोकतंत्र का एक विकसित संस्करण है, चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारा जाए। उस दिशा में मनुष्य ने सोचना शुरू कर दिया है।

(द वायर हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

इटारसी में तेज बारिश

● बाजार-रेस्ट हाउस, बिजली स्टेशन डूबे

शाजापुर में गाज गिरने से युवक की मौत, नर्मदापुरम के खेतों में पानी भरा, भोपाल में झमाझम

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में एक बार फिर बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव हो रहा है। बुधवार सुबह उज्जैन में तेज बारिश हुई। नर्मदापुरम के इटारसी में बाजार और सरकारी रेस्ट हाउस में पानी भर गया। जमानी गांव का बिजली सब स्टेशन डूब गया। कर्मचारी को बाहर निकालकर सप्लाई बंद करनी पड़ी। सिवनी मालवा तहसील के ग्रामीण इलाकों में खेत और रास्ते डूबे रहे। डिंडौरी में दोपहर 12 बजे के बाद पानी गिरा। शाजापुर में नदी से मछली पकड़ने गए 27 वर्षीय विशाल केवट की आकाशीय बिजली की चपेट में आकर मौत हो गई।

गुना में सबसे ज्यादा 3 इंच पानी गिरा–बीते 24 घंटे के दौरान 20 से ज्यादा जिलों में बारिश हुई। गुना में सबसे ज्यादा 3 इंच पानी गिर गया।

इसके अलावा भोपाल, नर्मदापुरम, हरदा, शाजापुर, बालाघाट, ग्वालियर, रायसेन, सिवनी, दमोह, इंदौर, उज्जैन, सागर, छिंदवाड़ा, सतना, बैतूल, सीहोर, रतलाम, धार, मंडला, रीवा समेत कई जिलों में हल्की बारिश का दौर चलता रहा।

4 घंटे की बारिश से बाढ़ जैसे हालात,खर्रा नदी उफान पर, जमानी गांव टापू बना

नर्मदापुरम जिले में छह दिनों के बाद बुधवार सुबह बारिश का दौर शुरू हुआ। इटारसी के जमानी क्षेत्र में सुबह 7:30 से 11:30 बजे तक 4 घंटे में करीब 5 इंच बारिश दर्ज की गई। खर्रा नदी उफान पर है, जिससे चार गांव प्रभावित हुए हैं। जमानी गांव टापू में तब्दील हो गया। सेमरी खुर्द, खटामा और रोहना में भी लोगों के घरों में पानी घुस गया है। खर्रा नदी का पानी पुल के ऊपर से बह रहा है, जिससे इटारसी–सिवनी मालवा मार्ग कुछ घंटे बंद रहा। डोलरिया में हथेड़ नदी के पुल पर पानी आने से नर्मदापुरम–हरदा स्टेट हाईवे पर आवागमन बंद कर दिया गया। जमानी सब स्टेशन परिसर में करीब 4 फीट और पैनल कक्ष में 2 फीट तक पानी भर गया। स्थिति बिगड़ती देख वहां ड्यूटी पर तैनात कर्मचारी पानी के बीच से निकलकर सुरक्षित स्थानों पर पहुंचे।

इन जिलों में बारिश का अलर्ट

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों में रायसेन, सीहोर, राजगढ़, मुरैना, भिंड, मंडला–डिंडौरी में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया है। ग्वालियर, श्योपुर, अशोकनगर, आगर–मालवा, नर्मदापुरम, खंडवा, देवास, हरदा, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा में भी बारिश का दौर शुरू होगा। दोपहर बाद अनूपपुर के अमरकंटक, शहडोल, सीधी, पन्ना, भोपाल, शाजापुर, विदिशा, गुना, शिवपुरी, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर के खजुराहो, सतना के चित्रकूट, मैहर, रीवा, मऊगंज, सिंगरौली, उमरिया, जबलपुर, कटनी, सागर, दमोह, नरसिंहपुर, सिवनी, बालाघाट, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी, इंदौर, धार, उज्जैन, रतलाम, नीमच और मंदसौर में भी बारिश होने की संभावना है।

ऑपरेशन सिंदूर

अब खत्म होगी तकरार चर्चा को मान गई सरकार

● लोकसभा में 28, राज्यसभा में 29 को चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर लोकसभा में 28 जुलाई और राज्यसभा में 29 जुलाई को चर्चा होगी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, दोनों सदनों में बहस के लिए 16-16 घंटे का समय निर्धारित किया गया है। संसद के मानसून सत्र की शुरुआत 21 जुलाई को हुई थी। पिछले 3 दिनों से विपक्ष ऑपरेशन सिंदूर, बिहार वोटर वेरिफिकेशन जैसे मुद्दों पर हंगामा कर रहा है। तीन दिनों में दोनों सदनों में लगातार एक आधे घंटे भी कार्यवाही नहीं चल सकी। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को कहा कि सरकार कहती है ऑपरेशन सिंदूर चालू है, जबकि डोनाल्ड ट्रम्प बंद कराने का दावा कर चुके हैं। ट्रम्प ने 25 बार बोला कि उन्होंने सीजफायर कराया। वो कौन होते हैं बोलने वाले, ये उनका काम नहीं है। लेकिन पीएम मोदी ने इस पर एक जवाब नहीं दिया। ऐसा लगता है दाल में कुछ काला है। इससे पहले लोकसभा में बिहार वोटर वेरिफिकेशन मुद्दे पर हंगामा हुआ। विपक्षी सांसद नारेबाजी करते हुए वेल में चले आए।

दोनों सदनों में 16-16 घंटे बहस विपक्ष हुआ ऐक्टिव

सुप्रभात

आप हस्ताक्षर करें
अस्तित्व पर जब
क्या स्वयं को
मैं तभी स्वीकृत करूँगी ?
कोटरों की ओट में जीवन न होगा
प्लेट सी गोलाई में नर्तन न होगा
मन्ज़िलों का रूप धुँधलाएगा निश्चित
स्वप्न की गन्धों का गर लेपन न होगा
उड़ मैं सकती हूँ
अगर पंछी सदृश तो
बाँह भर आकाश
क्यों आवृत करूँगी ?
जो अपरिचित था उसे मैं जान पाई
अपनी आवाज़ों को अपना मान पाई
जब निरन्तर राह पे आगे बढ़ी मैं
ज़िन्दगी के रूप को पहचान पाई
आत्मविश्लेषण
लिखूँगी जब कभी फिर
क्यों किसी की पंक्तियाँ
उद्धृत करूँगी ?
धूप में क्या लकड़ियाँ तापी गयी हैं
अपनी ही परछाइयाँ नापी गयी हैं
शुभ्र निर्मल कामना पूरित ऋचाएँ
निर्जनी दीवार पर थापी गयी हैं
ऊसरी धरती पे यदि
चलना पड़ा तो
स्वयं को
जलधार बन कृत कृत करूँगी।

- सोनरूपा

उपराष्ट्रपति चुनाव अगस्त के आखिर में संभव

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश को नया उपराष्ट्रपति अगस्त महीने के आखिर तक मिल सकता है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, चुनाव का शेड्यूल अगले 72 घंटे में जारी हो सकता है। चुनाव आयोग ने बुधवार को बताया कि चुनाव की प्रक्रिया शुरू हो गई है। जब सारी तैयारियां पूरी हो जाएंगी, फिर चुनाव की आधिकारिक घोषणा करेंगे।

स्थानीय स्तर पर रोजगार की संभावनाओं के लिए तैयार करें पाठ्यक्रम : राज्यपाल पटेल

स्किल ही करेंसी है: सीएम डॉ. यादव

युवाओं के लिए आईटी और एग्रीकल्चर क्षेत्र में शुरू हुए रोजगारपरक कोर्स : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि स्थानीय स्तर पर रोजगार की संभावनाओं को पहचान कर विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम तैयार करें। उन्होंने प्रदेश में देश विदेश से निवेश प्रस्ताव प्राप्त करने के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव की पहल की सराहना की है। अपेक्षा की है कि निवेश परियोजना क्रियान्वयन के साथ ही उद्योग में रोजगार के लिए उपयुक्त अभ्यर्थी उपलब्ध कराने के लिए कोर्स प्रारम्भ करें, जिससे परियोजना शुरू होने के साथ ही आवश्यकता अनुसार स्थानीय स्तर के युवा उपलब्ध हो सकें।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आज करेंसी का जमाना है, लेकिन स्किल (कौशल) ही करेंसी है, भारत इसे अच्छी तरह समझता है। इसीलिए हम नवाचार करते हुए कौशल विकास की ओर कदम बढ़ा रहे हैं। मध्यप्रदेश एक कृषि प्रधान और तेजी से बढ़ता राज्य है। इसीलिए हम खेती की

पढ़ाई को सामान्य महाविद्यालयों तक लेकर गए हैं। अगर कोई युवा खेती में करियर बनाना चाहे तो उसे आधुनिक तकनीक की जानकारी होनी चाहिए। विश्वविद्यालयों के दायरे विस्तृत होने चाहिए। सभी कोर्स यहां से संचालित होने चाहिए।

राज्यपाल श्री पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उक्त विचार उच्च शिक्षा विभाग द्वारा विकसित मध्यप्रदेश @2047 'रोजगार आधारित शिक्षा-रूझान एवं नए अवसर' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला को संबोधित करते हुए कही है। कार्यशाला का आयोजन बुधवार को कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में किया गया।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि राष्ट्रीय रोजगार आधारित शिक्षा-रूझान एवं नए अवसर कार्यशाला समय की आवश्यकता है। भविष्य की तैयारी का सशक्त मंच है। रोजगार केन्द्रित शिक्षा और विकसित भारत के निर्माण में प्रदेश के योगदान को बढ़ाने की प्रभावी पहल है। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि शिक्षा समाज की रीढ़ है। यह समय के साथ तालमेल बैठाने, नवाचारों को अपनाने और नवीन अवसरों का लाभ उठाने के लिए व्यक्ति, समाज और राष्ट्रह्य को सक्षम बनाती है। इसलिए हमारी शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों को रोजगार के अवसरों तक सुलभ पहुंच देने के साथ ही उन्हें आत्मनिर्भरता की दिशा में सशक्त बनाए।

सिया दफ्तर पर ताले के बाद मुख्ययंत्री का एक्शन

पर्यावरण विभाग से नवनीत कोठारी और उमा माहेश्वरी को हटाया, चंद्रमोली बने अपर सचिव

भोपाल (नप्र)। सिया के चेयरमैन से विवाद के बाद मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रमुख सचिव पर्यावरण डॉ नवनीत मोहन कोठारी और एप्को की कार्यपालन संचालक उमा माहेश्वरी आर को हटा दिया है। इसके साथ ही राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव केसी गुप्ता को भी स्थानांतरित कर दिया गया है। जबकि चंद्रमोली को अपर सचिव मुख्यमंत्री सचिवालय की जिम्मेदारी सौंपी गई हैं।

डॉ. कोठारी को राज्यपाल का प्रमुख सचिव बनाया गया है। राज्य शासन द्वारा जारी आदेश में केसी गुप्ता अपर मुख्य सचिव को राजभवन से हटाते हुए अपर मुख्य सचिव कुटीर और ग्रामोद्योग विभाग पदस्थ किया गया है।

इसके अलावा कई आईएएस अफसरों को अतिरिक्त प्रभार सौंपे गए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के दुबई प्रवास के दौरान पर्यावरण विभाग के प्रमुख सचिव डॉ कोठारी और सिया के चेयरमैन एसएन चौहान के बीच चल रहे विवाद में तब बखेड़ा खड़ा हो गया था जब एप्को परिसर स्थित सिया के चेयरमैन के दफ्तर में ताला लगा दिया गया और इसके बाद सिया के चेयरमैन ने पूरे मामले की शिकायत चीफ सेक्रेटरी से की थी।

सीएम को भी दुबई प्रवास के दौरान भी यह जानकारी मिली थी। इसके बाद साढ़े तीन बजे सिया चेयरमैन के दफ्तर का ताला खोल दिया गया था।

चंद्रमोली की सीएम सचिवालय में एंट्री, इन्हें मिला अतिरिक्त प्रभार

सामान्य प्रशासन विभाग द्वारा जारी आदेश में अपर मुख्य सचिव अशोक बर्णवाल को अपने पूर्व की जिम्मेदारियों के साथ अपर मुख्य सचिव पर्यावरण विभाग, पर्यावरण आयुक्त और महानिदेशक एप्को का भी अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। चंद्रमौलि शुक्ला को वर्तमान दायित्वों के साथ अपर सचिव मुख्यमंत्री का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है।

दीपक आर्य को ग्रामीण सड़क विकास प्राधिकरण के सीईओ के साथ कार्यपालन संचालक पर्यावरण नियोजन और समन्वय संगठन एप्को का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है।

अपर मुख्य सचिव केसी गुप्ता के कुटीर और ग्रामोद्योग का चार्ज लेने के बाद अमित राठौर प्रमुख सचिव वाणिज्यिक कर कुटीर व ग्रामोद्योग के अतिरिक्त प्रभार से मुक्त होंगे।

उमा माहेश्वरी आर अब सिर्फ ओएसडी सह संचालक भारतीय चिकित्सा पद्धति और होम्योपैथी की जिम्मेदारी संभालेंगी, दीपक आर्य के चार्ज लेने के साथ वे कार्यपालन संचालक पर्यावरण नियोजन और समन्वय संगठन की जिम्मेदारी से मुक्त होंगी

भोपाल का तापमान
अधिकतम 35 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 24 जुलाई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

पहले भी इसका हिस्सा रहा, मैं नहीं कर सकता सुनवाई

● जस्टिस वर्मा केस से सीजेआई गवई ने कर लिया किनारा ● अब नई बेंच करेगी इसकी सुनवाई,बहुत जल्द होगा गठन

नई दिल्ली (एजेंसी)। जस्टिस यशवंत वर्मा के कैश कांड की सुनवाई से चीफ जस्टिस बीआर गवई ने खुद को अलग कर लिया है। बुधवार को सुनवाई के दौरान उन्होंने कहा,मेरे लिए इस केस की सुनवाई में शामिल होना उचित नहीं होगा, क्योंकि मैं पहले भी इसका हिस्सा रहा हूं। दरअसल, 19 जुलाई जस्टिस वर्मा ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल की थी। इसमें उन्होंने इन-हाउस कमेटी की रिपोर्ट और महाभियोग की सिफारिश रद्द करने की अपील की थी। रिपोर्ट में घर में कैश मिलने के मामले में जस्टिस वर्मा को दोषी ठहराया गया है।

सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस वर्मा की ओर से सीनियर एडवोकेट कपिल सिब्बल ने दलील रखी। उन्होंने कहा कि इसमें कुछ संवैधानिक मुद्दे हैं। कृपया जल्द से जल्द बेंच गठित करें। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि मामले पर सुनवाई के लिए नई बेंच गठित करेंगे। दूसरी तरफ, संसद में जस्टिस यशवंत वर्मा के खिलाफ महाभियोग की कार्यवाही भी शुरू हो गई है। जस्टिस वर्मा को हटाने के लिए 152 सांसदों ने 21 जुलाई को लोकसभा में अध्यक्ष ओम बिरला को ज्ञापन सौंपा।

राज्यसभा में 50 से ज्यादा सांसदों ने प्रस्ताव पर साइन किए। याचिका में जस्टिस वर्मा बोले- घर से नोट मिलना साबित नहीं करता कि ये मेरे थे 18 जुलाई को जस्टिस वर्मा ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। इसमें उन्होंने तर्क दिया था कि उनके आवास के बाहरी हिस्से में कैश बरामद होने मात्र से यह साबित नहीं होता कि वे इसमें शामिल हैं, क्योंकि आंतरिक जांच समिति ने यह तय नहीं किया कि नकदी किसकी है या परिसर में कैसे मिली। समिति के निष्कर्षों पर सवाल उठाते हुए उनका तर्क दिया है-ये अनुमान पर आधारित है। याचिका में जस्टिस वर्मा का नाम नहीं है, बल्कि सुप्रीम कोर्ट डायरी में इसे 'जस्टिस बनाम भारत सरकार व अन्य' के टाइटल से दर्ज किया गया है। जस्टिस वर्मा ने 5 सवालों के जवाब मांगे जस्टिस वर्मा ने अपनी याचिका में 5 सवालों के जवाब मांगे हैं, साथ ही 10 तर्क दिए हैं, जिनके आधार पर जांच समिति की रिपोर्ट रद्द करने की मांग और महाभियोग की सिफारिश रद्द करने का अनुरोध किया।

नकली दूतावास खोला चार फर्जी देश बनाए

यूपी एसटीएफ ने धर दबोचा, आरोपी लंदन से है एमबीए

गाजियाबाद (एजेंसी)। यूपी के गाजियाबाद में फर्जी दूतावास का खुलासा हुआ है। एसटीएफ ने मंगलवार को छापा मारकर हर्षवर्धन जैन को अरेस्ट किया। उसके पास से वीआईपी नंबर वाली लग्जरी 4 गाड़ियां जब्त की गई हैं। इसके साथ ही अलग-अलग देशों और कंपनियों की 34 मोहरें भी मिली हैं। इसके अलावा, विदेश मंत्रालय की मोहर लगे कूटरचित दस्तावेज और 44.70 लाख रुपए नकद भी बरामद किए गए। एसटीएफ एसपी सुशील घुले ने बताया-हर्षवर्धन केबी 35

कविनगर में किराए का मकान लेकर अवैध रूप से 'वेस्ट आर्कटिक दूतावास' चला रहा था। वह खुद को वेस्ट आर्कटिक, सबोरगा, पुलावाविया, लोडोनिया देशों का कॉन्सुल एंबेसडर बताता है। हालांकि, इन नामों के कोई देश नहीं हैं। उन्होंने बताया- हर्षवर्धन डिप्लोमेटिक नंबर प्लेट लगी गाड़ियों से चलता था। लोगों को प्रभावित करने के लिए प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और कई अन्य बड़े लोगों के साथ अपनी मॉर्फ की हुई फोटो का इस्तेमाल करता था। उसका मुख्य काम कंपनियों और प्राइवेट व्यक्तियों को बाहर के देशों में काम दिलाने के नाम पर दलाली करना था।

शिवाजीराव कदम ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस इंदौर में बुधवार को मप्र पुलिस का 'नशे से दूरी है जरूरी' अभियान के अंतर्गत शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया। समारोह में डीजीपी श्री मकवाना वर्चुअल रुप से उपस्थित रहे। साथ ही कार्यक्रम में उमाकांत चौधरी, नितिश दीक्षित, करणीसिंह और डॉ.पीयूष त्रिवेदी आदि उपस्थित थे।

अखिलेश ने मस्जिद में सपा सांसदों के साथ की मीटिंग

डिप्टी सीएम बोले-वो नमाजवादी,अखिलेश बोले-हम जोड़ने वाली आस्था के साथ

लखनऊ (एजेंसी)। संसद के बगल की मस्जिद में अखिलेश यादव और उनके सांसदों की कथित मीटिंग पर विवाद बढ़ता जा रहा है। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक ने अखिलेश को नमाजवादी बताया। कहा- संविधान में साफ लिखा है कि हम धर्म का इस्तेमाल राजनीतिक उद्देश्यों के लिए नहीं करेंगे। लेकिन सपा मुखिया हमेशा संविधान का उल्लंघन करते रहे। उन्हें संविधान पर कोई भरोसा नहीं है। अखिलेश ने डिप्टी सीएम के बयान पर पलटवार किया।

कहा- आस्था जोड़ती है। जो आस्था जोड़ने का काम करती है, हम उसके साथ हैं, लेकिन भाजपा चाहती है कि कोई न जुड़े, दूरियां बनी रहें। हम सभी धर्मों में आस्था रखते हैं। भाजपा का हथियार धर्म है। दरअसल, मंगलवार को जब सदन की कार्यवाही स्थगित हुई, तब अखिलेश यादव अपने सांसदों के साथ बैठे थे। उसी दौरान रामपुर से सांसद मोहिबुल्ला नदवी ने उस मस्जिद के बारे में बताया, जहां वे इमाम हैं। इस पर अखिलेश ने पूछा कि मस्जिद यहां से कितनी दूर है। जवाब में मोहिबुल्ला नदवी ने कहा- बस सड़क के उस पार है। कार्यवाही स्थगित होने के कारण अखिलेश यादव अपने सांसदों के साथ नदवी के साथ मस्जिद देखने चले गए। कुछ देर तक सभी वहां रुके थे।

करुणाधाम में विश्व कल्याण के संकल्प के साथ वंदे राष्ट्र मातरम प्रतिष्ठा महोत्सव शुरू

भोपाल! करुणाधाम आश्रम के तीन दिवसीय वंदे राष्ट्र मातरम् प्रतिष्ठा महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत बुधवार को सर्वप्रथम गणेश और अन्य देवता के पूजन के साथ लोक और विश्वकल्याण का संकल्प ले कर कार्यक्रम को शुरू किया गया। कार्यक्रम में महाभारत कालीन क्षेत्रों, पर्वत, पठार, नदियों आदि तत्वों का स्मरण किया गया।

साथ ही 16 कलशों की स्थापना कर प्रेमपुरा घाट में जल देवता एवं जल के अन्य तत्वों की पूजा कर विशाल जल यात्रा का आयोजन किया गया। इसमें भक्त गणों ने आश्रम के पीठाधीश्वर गुरुदेव श्री सुदेश जी शांडिल्य महाराज से प्रेमपुरा घाट का नाम प्रेम सरोवर रखने के लिए मांग की, जल यात्रा प्रेमपुरा घाट से नेहरू नगर होते हुए, आश्रम में प्रवेश की जहां यात्रा का भव्य रूप से स्वागत किया गया और जलपूर्ण कलशों को यज्ञ मण्डप पर स्थापित किया गया।

उल्लेखनीय है कि करुणाधाम में मां महालक्ष्मी की स्थापना के 10 वर्ष पूर्ण होने पर वन्देराष्ट्रमातरम् प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। बुधवार को पंचांग प्रयोग और संजय मेहता और उनके ग्रुप का ड्रामा कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

गुरुवार 24 जुलाई को भूमंडल स्थापन और पंडित श्री राजेंद्र गंगानी जी द्वारा कथक नृत्य प्रस्तुति का आयोजन होगा। शुक्रवार 25 जुलाई समापन पूर्ण आहुति एवं विशाल भंडारा का आयोजन होगा। शाम को माँ महालक्ष्मी की दिव्य आरती होगी।

चीनी नागरिकों को 5 साल बाद फिर वीजा देगा भारत

● आज से आवेदन शुरू,गलवान संघर्ष के बाद से बंद थी सर्विस

नई दिल्ली/बीजिंग (एजेंसी)। भारत सरकार अब चीनी नागरिकों को फिर से वीजा देने जा रही है। रॉयटर्स की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत पांच साल बाद पहली बार चीनी नागरिकों को पर्यटन के लिए वीजा देना शुरू करेगा। कोरोना काल के बाद यह सर्विस बंद हो गई थी। इसके बाद जून 2020 में हुए गलवान संघर्ष ने दोनों देशों के रिश्तों को और खराब कर दिया था। बीजिंग स्थित भारतीय दूतावास ने इसकी

पुष्टि की है। दूतावास ने बताया कि यह प्रक्रिया 24 जुलाई 2025 से शुरू होगी। इस जानकारी को चीन की सरकारी मीडिया ग्लोबल टाइम्स ने भी प्रकाशित किया है, जिसमें कहा गया है कि भारतीय दूतावास ने बुधवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म वीबो पर इस संबंध में जानकारी साझा की है। भारतीय दूतावास ने कहा है कि चीन के लोग अब भारत घूमने के लिए वीजा के लिए आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें सबसे पहले ऑनलाइन आवेदन फॉर्म भरना होगा। फिर वेबसाइट पर जाकर अपॉइंटमेंट लेनी होगी। इसके बाद उन्हें अपने पासपोर्ट और जरूरी दस्तावेज लेकर वीजा केंद्र जाना होगा। ये वीजा केंद्र बीजिंग, शंघाई और ग्वांगझू जैसे शहरों में हैं, जो दक्षिण चीन के ग्वांगडोंग प्रांत में आते हैं।

विमान हादसे में एयर इंडिया ने कर दी अमानवीय हरकत

2 ब्रिटिश परिवार को भेज दिए गलत शव,गुस्से में घर वाले

लंदन (एजेंसी)। गुजरात से लंदन जा रहे एयर इंडिया विमान के मारे गए यात्रियों की पीड़ा कम होने का नाम नहीं ले रही है। ब्रिटेन के एक परिवार ने बताया कि पीड़ितों के परिवारवालों को गलत शव भेजे जा रहे हैं। किसी का शव दूसरे परिवार को भेज दिया जा रहा है। यही नहीं यह भी पता चला है कि कुछ मृतक यात्रियों की गलत पहचान की गई और फिर उन्हें ब्रिटेन भेज दिया गया। एयर इंडिया की इस गलती से मृतकों के परिवारवालों की पीड़ा और बढ़ गई है। कई पीड़ितों के परिवारवालों ने अपने प्रियजन के अंतिम संस्कार को उस समय स्थगित कर दिया जब उन्हें यह बताया गया कि गलत शव के साथ ताबूत को उनके पास भेज दिया गया है। ब्रिटिश अखबार मिरर की

रिपोर्ट के मुताबिक एक से ज्यादा लोगों के शरीर के अवशेष एक ही ताबूत में रखे गए थे जो बेहद हैरान करने वाला है। इन अवशेषों को अंतिम संस्कार से पहले अलग करने की जरूरत थी। अहमदाबाद एयरपोर्ट के पास हुए एयर इंडिया हादसे में 261 लोग मारे गए थे। यह विमान लंदन जा रहा था। इसमें ब्रिटेन के 52 नागरिक थे। बताया जा रहा है कि दो ऐसी घटनाएं सामने आई हैं जिसमें लाशों की अदला बदली हो गई। अब आशंका भी जताई जा रही है।

भारतीयता ही विश्व की सभी समस्याओं का समाधान

पश्चिम पूरी तरह रहा विफल:भागवत

● संघ प्रमुख ने पाठ्यक्रमों में बदलाव की बात का किया समर्थन

नई दिल्ली (एजेंसी)। दुनिया में विज्ञान और आर्थिक क्षेत्र में हुई सभी प्रगतियों ने विलासिता की चीजें ला दीं। इससे लोगों का जीवन आसान तो हुआ, लेकिन दुखों का अंत नहीं हुआ। अब पूरी दुनिया जीवन में खुशी और संतोष के लिए भारत की तरफ देख रही है। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने मंगलवार को यह बातें कहीं। उन्होंने लोगों से भारतीयता को आत्मसात करने और दुनिया को उन सभी समस्याओं का समाधान दिखाने का आह्वान किया, जिनका वह सामना कर रही है। भागवत ने यहां एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भौतिकवाद के चलते विश्व अनेक

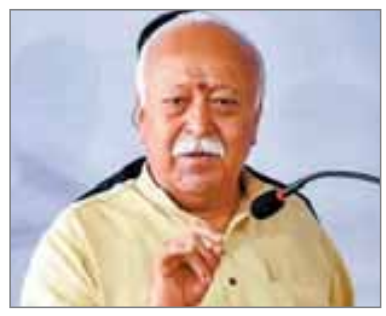

समस्याओं का सामना कर रहा है। अब वह इनके उत्तर के लिए भारत की ओर देख रहा है। उन्होंने कहाकि पिछले 2,000 साल में लोगों के जीवन में खुशी लाई गई है।

परिवर्तन के लिए रहें तैयार, यह बेहद जरूरी

उपस्थित लोगों से परिवर्तन के लिए तैयार रहने का आह्वान करते हुए भागवत ने कहा, 'हम जो इतिहास जानते हैं, वह पश्चिम द्वारा पढ़ाया जाता है। मैं सुन रहा हूं कि हमारे देश के पाठ्यक्रम में कुछ बदलाव किए जा रहे हैं।' आरएसएस प्रमुख ने कहा कि पश्चिमी देशों के लिए, भारत का कोई अस्तित्व नहीं है। यह विश्व मानचित्र पर तो दिखाई देता है, लेकिन उनके विचारों में नहीं। अगर आप किताबों में देखेंगे, तो आपको चीन और जापान ही मिलेंगे, भारत नहीं।

● बढ़ रही गरीब और अमीर के बीच की खाई- इग्नू और अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास की ओर से संयुक्त रूप से आयोजित इस कार्यक्रम में भागवत ने कहा, 'शोषण बढ़ा, गरीबी बढ़ी। गरीब और अमीर के बीच की खाई दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है।' उन्होंने कहा कि प्रथम विश्व युद्ध के बाद शांति की वकालत करते हुए कई किताबें लिखी गईं, भविष्य में फिर से युद्ध न हो, इसके लिए राष्ट्र संघ का गठन किया गया, लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन हुआ लेकिन आज हम सोच रहे हैं कि क्या तीसरा विश्व युद्ध होगा। भागवत ने कहा कि भारतीयता ही आज दुनिया के सामने मौजूद सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान है। आरएसएस प्रमुख ने कहा कि भारत का होने का क्या अर्थ है। भारतीयता नागरिकता नहीं है। बेशक, नागरिकता आवश्यक है। लेकिन, भारत का हिस्सा बनने के लिए भारत का स्वभाव होना जरूरी है। भारत का स्वभाव पूरे जीवन के बारे में सोचता है। हिंदू दर्शन में चार पुरुषार्थ हैं...मोक्ष जीवन का अंतिम लक्ष्य है। इसी धर्म के अनुशासन के कारण भारत कभी सबसे समृद्ध राष्ट्र था और दुनिया इसे जानती है।

एसआईआर को लेकर तेजस्वी पर भड़के सीएम नीतिश

विधानसभा में बोले-तुम बच्चे हो अभी कुछ नहीं जानते

पटना (एजेंसी)। बिहार में एसआईआर के खिलाफ विपक्ष के आक्रामक तेवर कम होते नहीं दिख रहे। बिहार विधानसभा में तीसरे दिन भी इस मसले पर विपक्ष का जोरदार हंगामा हुआ। बिहार में वोटर लिस्ट के लिए स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन अभियान चल रहा है। इसे लेकर बुधवार को बिहार विधानसभा में मुख्यमंत्री नीतिश कुमार और विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव के बीच तीखी नोकझोंक देखने को मिला।

बिहार विधानसभा के मानसून सत्र की तीसरे दिन की कार्यवाही में भी जमकर हंगामा हुआ। सदन गुरुवार तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। लेकिन कार्यवाही खत्म होने के साथ तेजप्रताप और डिप्टी सीएम विजय सिन्हा की तस्वीर सुर्खियों में आ गई। तेजप्रताप ने विजय सिन्हा के साथ विधानसभा के गेट पर फोटो खिंचवाई। हाथ जोड़कर प्रणाम किया। विजय सिन्हा ने भी उनकी पीठ थपथपाकर आशीर्वाद दिया। तेजस्वी ने बिहार एसआईआर के मुद्दे पर सरकार को घेरने की कोशिश की। दोनों डिप्टी पर भी तंज कसा। जिसके बाद सदन में जमकर हंगामा हुआ। तेजस्वी बोल ही रहे थे कि मुख्यमंत्री नीतिश कुमार उठे और कहने लगे, पहले क्या था। तुम्हारे माता-पिता मुख्यमंत्री थे.. क्या किया। इस दौरान उन्होंने तेजस्वी यादव को बच्चा कह दिया।

शहरों में 5 डिग्री तक बढ़ा तापमान,दिल्ली में बाढ़ का खतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के प्रमुख शहरों में रात का तापमान आसपास के ग्रामीण इलाकों से कितना अधिक रहता है, इस पर वर्ल्ड बैंक की एक चौंकाने वाली रिपोर्ट सामने आई है। इस रिपोर्ट के मुताबिक, दिल्ली, चेन्नई, लखनऊ जैसे घनी आबादी वाले शहरों में रात के समय तापमान काफी अधिक रहता है। इस रिपोर्ट ने न सिर्फ आने वाले समय में घनी आबादी वाले इलाकों में गर्मी के बढ़ते खतरे की ओर इशारा किया गया है, बल्कि इसकी गंभीरता और वजह पर चिंता जताई गई है। रिपोर्ट में 24 शहरों को शामिल किया गया है।

पाकिस्तान के टेरर नेटवर्क की गर्दन मरोड़ने की तैयारी

भारत के साथ मिलकर मालदीव करेगा दुश्मन पर शिकंजा

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार से पड़ोसी मुल्क मालदीव की दो दिन की यात्रा पर रहेंगे। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग को मजबूत करने पर जोर दिया जाएगा। भारत और मालदीव के इस पहल से हिंद महासागर क्षेत्र में ड्रग्स के अवैध कारोबार पर लगाम कसने में मदद मिलेगी। ड्रग्स का यह गैर-कानूनी व्यापार पाकिस्तान की ओर से प्रायोजित सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा देता रहा है और यह भारत और मालदीव के लिए भी बहुत बड़ी चुनौती बन चुकी है। मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू भारत के साथ हैं।

मुख्यमंत्री आज वन विकास निगम के स्वर्ण जयंती वर्ष का उद्घाटन और राष्ट्रीय कार्यशाला का करेंगे शुभारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने पर 24 जुलाई को स्वर्ण जयंती वर्ष का उद्घाटन एवं राष्ट्रीय कार्यशाला का शुभारंभ करेंगे। वे 'विजन डॉक्यूमेंट-2047' का विमोचन एवं प्रदर्शनी का उद्घाटन भी करेंगे। कार्यक्रम में निगम के उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारी-कर्मचारी को सम्मानित भी किया जायेगा। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री श्री दिलीप सिंह अहिरवार, अपर मुख्य सचिव वन श्री अशोक बर्णवाल और प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं वन बल प्रमुख श्री असीम श्रीवास्तव भी उपस्थित रहेंगे।

गुरुवार 24 जुलाई को प्रातः 10:30 बजे से भारतीय वन प्रबंधन संस्थान नेहरू नगर भोपाल के ऑडिटोरियम में होने वाले कार्यक्रम के संबंध में प्रबंध संचालक मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम श्री व्ही.एन. अम्बाड़े ने जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि कार्यशाला में महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, तेलंगाना और कर्नाटक राज्य के वन विकास निगम के प्रबंध संचालक द्वारा विभिन्न विषयों जैसे थिनिंग व फेलिंग, जनरल प्लानटेशन, मियॉवाकी प्लानटेशन, डिपॉजिट वर्क, थीम वर्क, ईको टूरिज्म विषय पर प्रस्तुतीकरण दिया जायेगा। कार्यशाला का उद्देश्य मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम लिमिटेड द्वारा विगत 50 वर्षों में किये गये वानिकी, वन एवं वन्य जीव संरक्षण कार्य को रेखांकित किया जाना है। कार्यक्रम में वन विकास निगम के कार्यों पर आधारित डॉक्यूमेंट्री फिल्म का प्रदर्शन भी किया जायेगा।

वनीकरण में निगम की अनेक उपलब्धियां – मध्यप्रदेश राज्य वन विकास निगम की स्थापना 24 जुलाई 1975 को हुई थी। निगम की स्थापना का उद्देश्य निम्न कोटि के वन क्षेत्रों को तेजी से बढ़ने वाली बहुमूल्य तथा बहु उपयोगी प्रजातियों के रोपण द्वारा उच्च कोटि के वन क्षेत्रों में उत्पादन क्षमता एवं गुणवत्ता में सुधार लाना है। निगम का कार्य प्रदेश के 22 जिलों में संचालित है। निगम अंतर्गत कुल 13 काष्ठागार एवं 15 स्थाई रोपणियां स्थापित हैं। निगम को लगभग 4.25 लाख हेक्टेयर क्षेत्र प्राप्त हुआ है, जिसमें से वर्ष 2025 तक 3.90 लाख हेक्टेयर क्षेत्र का उपचारण किया जा चुका है एवं 3.14 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में रोपण किया गया है। विगत 2 वर्षों में निगम द्वारा 2 करोड़ 48 लाख पौधों का रोपण किया गया है। निगम की रोपणियों में वर्ष 2025 में कुल 1 करोड़ 70 लाख सागौन रूटशूट सागौन का उत्पादन हुआ है।

टाइगर रिजर्व में चुनौती पूर्ण कार्य – वन विकास निगम की अधिकांश परियोजना मंडल टाइगर रिजर्व, राष्ट्रीय उद्यान एवं अभयारण्य क्षेत्र बफर जोन से लगे हैं। इन क्षेत्रों में बाघ, तेंदुआ, भालू एवं हिरण आदि वन्य जीवों के विचरण की उपस्थिति दर्ज की गई है। वन्य जीवों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिये निगम द्वारा बोरीबंधान, तालाब निर्माण एवं झिरियां निर्माण का कार्य किया जाता है।

मुख्यमंत्री ने भारतीय मजदूर संघ के स्थापना दिवस पर दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने देश के सबसे बड़े केंद्रीय श्रमिक संगठन भारतीय मजदूर संघ के स्थापना दिवस पर श्रमिकों और प्रदेशवासियों को बधाई एवं शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्रमिक वर्ग के समग्र कल्याण के लिए लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ निरंतर संघर्ष करने वाले श्रमिक संगठन की उत्तरोत्तर मजबूती के लिए प्रार्थना की है।

किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए संवेदनशील पहल जरूरी

'आई सपोर्ट माय फ्रेंड्स' नामक नया प्रशिक्षण मॉड्यूल लॉन्च किया गया

भोपाल। देश में किशोरों और युवाओं की बढ़ती मानसिक स्वास्थ्य ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने यूनिसेफ और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरोसाइंस (एनआईएमएचएएनएस) के साथ मिलकर आज भोपाल में आयोजित एक राष्ट्रीय परामर्श सत्र में किशोर एवं युवा मानसिक स्वास्थ्य पर एक राष्ट्रीय तथ्य पत्र और 'आई सपोर्ट माय फ्रेंड्स' नामक नया प्रशिक्षण मॉड्यूल लॉन्च किया। यह मॉड्यूल पहले से चल रहे राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम के अंतर्गत मौजूद साथी-समर्थन मॉड्यूल का विस्तार है। नया मॉड्यूल किशोरों को ऐसे व्यावहारिक उपकरणों से लैस करता है, जिनकी मदद से वे अपने दोस्तों में भावनात्मक तनाव के संकेत पहचान सकें, संवेदनशीलता से उन्हें सहारा दे सकें, ज़रूरत पड़ने पर आगे मदद से जोड़ सकें और साथ ही अपनी सीमाओं और मानसिक भलाई का भी ध्यान रख सकें। यूनिसेफ और डब्ल्यूएचओ के एक वैश्विक संसाधन पर आधारित इस मॉड्यूल को एनआईएमएचएएनएस ने भारत के परिप्रेक्ष्य में ढालकर विकसित किया। यह एक दिवसीय यह प्रशिक्षण 'लुक, लिसन, लिंक' (देखो, सुनो और जोड़ो) रूपरेखा पर आधारित है, जिसमें इंटरैक्टिव गतिविधियां, परिदृश्य आधारित शिक्षण और मार्गदर्शित आत्ममंथन शामिल हैं।

इसका उद्देश्य है किशोरों में भावनात्मक समझ, सहानुभूतिपूर्ण संवाद और ज़िम्मेदार साथी-संबंधों को बढ़ावा देना। इस अवसर पर प्रदेश के स्वास्थ्य राज्यमंत्री एन शिवाजी पटेल ने कहा आज के किशोरों पर पढ़ाई, परिवार और सामाजिक माहौल का जबरदस्त दबाव है। हमें ऐसे सिस्टम तैयार करने होंगे जहां वे खुलकर बोल सकें, उन्हें सुना जाए और उन्हें पूरा समर्थन

मिले। मानसिक भलाई में निवेश केवल नीति नहीं, बल्कि नैतिक ज़िम्मेदारी और हमारे साझा भविष्य के प्रति वचनबद्धता भी है। प्रदेश के उपमुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री राजेंद्र शुक्ला ने कहा कि हमारे किशोरों को खुद की और अपने साथियों की मानसिक सेहत का ध्यान रखने में सक्षम बनाना, मध्य प्रदेश और देश के उज्ज्वल भविष्य में निवेश करने जैसा है। राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम और यह नया साथी-समर्थन मॉड्यूल एक ऐसा समाज गढ़ने में मदद कर रहे हैं, जहां युवाओं की आवाज़ सुनी जाती है, उन्हें समर्थन मिलता है और वे आगे बढ़ने में सक्षम बनते हैं।

स्वास्थ्य मंत्रालय में किशोर स्वास्थ्य की डिप्टी कमिश्नर डॉ ज़ोया अली रिज़वी ने कहा कि यह मॉड्यूल देश में मानसिक स्वास्थ्य नीति और व्यवहार को सुदृढ़ करने की बड़ी राष्ट्रीय योजना का हिस्सा है। भारत अब एक ऐसे मानसिक स्वास्थ्य तंत्र की ओर बढ़ रहा है जो युवाओं की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी हो। हमारा लक्ष्य है ऐसे राष्ट्रीय दिशा-निर्देश बनाना जो प्रारंभिक स्तर पर सहयोग को प्रोत्साहित करें, स्थानीय तंत्र को मजबूत करें और साथी-समर्थन जैसे वैज्ञानिक उपायों से किशोरों को सशक्त बनाएं। एनआईएमएचएएनएस की निदेशक डॉ. प्रतिमा मूर्ति ने कहा कि किशोरों की जटिल मानसिक स्वास्थ्य आवश्यकताओं को देखते हुए ज़रूरी है कि स्कूलों और समुदायों जैसे रोज़मर्रा के माहौल में ही मानसिक स्वास्थ्य सहयोग की शुरुआत की जाए। ऐसे परामर्श सत्र, जहां तकनीकी विशेषज्ञ, युवा, नीति निर्माता और मीडिया एक साथ हों, 'विकसित भारत' की सोच को साकार करने में अहम भूमिका निभा सकते हैं।

यूनिसेफ इंडिया के स्वास्थ्य प्रमुख डॉ विवेक सिंह ने भारत में हाल के वर्षों में मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई प्रगति की सराहना करते हुए कहा कि अब ज़रूरत है कि हम प्रतिक्रियात्मक देखभाल से सक्रिय, समुदाय-आधारित मानसिक स्वास्थ्य प्रणालियों की ओर अग्रसर हों। हमें एक एकीकृत मानसिक स्वास्थ्य ढांचे पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। यूनिसेफ इस बदलाव में सरकार को व्यापक, युवा-नेतृत्व वाले दृष्टिकोणों के माध्यम से सहयोग देने के लिए प्रतिबद्ध है, खासकर ऐसे मॉडलों के जरिए जो बड़े पैमाने पर लागू हो सकें और जिनका नेतृत्व स्वयं युवा करें। यूनिसेफ मध्य प्रदेश के फील्ड ऑफिस के प्रमुख अनिल गुलाटी ने कहा कि राज्य और समुदाय स्तर की व्यवस्थाएं ही राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य प्राथमिकताओं को जमीन पर उतार सकती हैं। यदि हम सुरक्षित वातावरण बना सकें, साथी-समर्थकों को प्रशिक्षित कर सकें और फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं को सशक्त बना सके, तो देश के किसी भी कोने में रहने वाला हर किशोर समर्थन, समझ और आशा पा सकेगा।

सत्रों के दौरान यह ज़ोर दिया गया कि मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों, जैसे कि चिंता, आत्म-संकोच, डिजिटल लत, मानसिक अवसाद और आत्म-हानि, से जूझ रहे किशोरों को शुरुआती मदद मिलनी चाहिए और इनके इर्द-गिर्द बने सामाजिक कलंक को दूर करना होगा। चर्चा में यह भी उभरा कि सामाजिक सोच, पारिवारिक अपेक्षाएं, शैक्षणिक दबाव और रिश्तों में तनाव जैसे कारक किशोरों पर गहरा असर डालते हैं। देशभर से आए युवा प्रतिनिधियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए इस बात को रेखांकित किया कि युवाओं के लिए सुरक्षित और सहयोगी वातावरण सबसे ज़रूरी है। इस कार्यक्रम में मध्य प्रदेश सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग और महिला एवं बाल विकास विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, डॉ सलोनी सिडाना (मिशन निदेशक, एनएचएम), डॉ सैयद हुब्बे अली (स्वास्थ्य विशेषज्ञ, यूनिसेफ) और अनिल गुलाटी (मुख्य फील्ड ऑफिसर, यूनिसेफ मप्र) समेत एम्स, टीआईएसएस, एनआईएमएचएएनएस और सेंटर फॉर मेंटल हेल्थ लॉ एंड पॉलिसी के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

खरगोन क्षेत्र में 12 कॉलोनियों में 85 मकान खतरे की जद में

मकान मालिकों को नोटिस जारी

भोपाल (नप्र)। खरगोन शहर और आसपास के क्षेत्रों में ट्रांसमिशन लाइनों के प्रतिबंधित क्षेत्रों में हुए अवैध निर्माण पर 85 मकान मालिकों को अतिक्रमण हटाने के लिये नोटिस जारी किये गये हैं। उल्लेखनीय है कि खरगौन में मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी (एम.पी. ट्रांसको) की 132 के.व्ही. से लेकर 220 के.व्ही. तक की छह प्रमुख ट्रांसमिशन लाइनों के समीप मानव जीवन के लिये घातक और विद्युत सुरक्षा मानकों के विरूद्ध अनाधिकृत निर्माण कर लिये गये है।

ट्रांसमिशन लाइनों की प्रतिबंधित सीमा में हुये निर्माण – खरगौन के अनेक क्षेत्रों में ट्रांसमिशन लाइनो के प्रतिबंधित सीमा में अनाधिकृत निर्माण किये गये है, जिनमें विद्युत मानकों के अनुरूप न्यूनतम सुरक्षा दूरी का उल्लंघन किया गया है। यहां के ओंकार दत्त रेजिडेंसी, निमरानी, द्वारका धाम कॉलोनी, साकेत नगर, जेतपुरा, यमुना नगर कॉलोनी, खरगोन मोतीपुरा, हिंगलाज नगर, स्मार्ट पार्क टाउनशिप, माँ रेवा विन्यास कॉलोनी, पानवा एवं भीलगांव आदि क्षेत्रों में ट्रांसमिशन लाइन और निर्माण के बीच बेहद कम क्लियरेंस पाया गया है। यह अति उच्च वोल्टेज की बिजली से जुड़े संभावित करंट, स्पार्किंग, और अग्निकांड जैसे गंभीर खतरे उत्पन्न कर सकता है।

इन ट्रांसमिशन लाइनों के समीप हुये निर्माण – खरगौन जिले में मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी की छह ट्रांसमिशन लाइने हैं जिनके समीप विद्युत सुरक्षा मानकों के विरूद्ध निर्माण कर लिये गये हैं। इन ट्रांसमिशन लाइनों में 132 के.व्ही. भीकनगांव-खरगोन डी.पी. लाइन, 132 के.व्ही. बिस्टन-लिलो लाइन, 132 के.व्ही. निमरानी-कसरावद लाइन, 220 के.व्ही. निमरानी-छैःगांव लाइन, 220 के.व्ही. निमरानी-ओंकारेश्वर लाइन एवं 220 के.व्ही. महेश्वर-पीथमपुर लाईन शामिल हैं।

जरूरी है 27 मीटर का कॉरिडोर – केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण के अनुसार, 132 के.व्ही. या इससे अधिक वोल्टेज की ट्रांसमिशन लाइन के नीचे कम से कम 27 मीटर की सुरक्षित दूरी आवश्यक है, ताकि हवा में झूलते तारों से संपर्क न हो और दुर्घटना टाली जा सके।

600 से 950 गुना अधिक रहता है ट्रांसमिशन लाइनों से जान का खतरा – आम घरों में उपयोग होने वाली विद्युत आपूर्ति की तीव्रता मात्र 230 वोल्ट होती है। यह स्तर भी इतना अधिक होता है कि यदि कोई व्यक्ति गलती से इसके संपर्क में आ जाए तो गंभीर रूप से घायल हो सकता है या उसकी जान भी जा सकती है लेकिन इससे भी कहीं अधिक खतरनाक होती हैं। शहर भर में क्रियाशील एक्स्ट्रा हाईटेंशन ट्रांसमिशन लाइनें, जिनमें विद्युत तीव्रता 132 के.व्ही. (यानी 132,000 वोल्ट) एवं 220 के.व्ही. (यानी 2,20,000 वोल्ट) होती है। यह घरेलू बिजली की तुलना में 600 से 950 गुना अधिक रहती है। यह अंतर दर्शाता है कि अगर मात्र 230 वोल्ट के संपर्क में आने से जान को खतरा हो सकता है, तो 132 या 220 के.व्ही. की ट्रांसमिशन लाइनों के पास रहने या निर्माण करने से कितना बड़ा जोखिम हो सकता है। ट्रांसमिशन लाइनों के आसपास निर्धारित प्रतिबंधित क्षेत्र में निर्माण करना न सिर्फ गैरकानूनी है, बल्कि यह जानलेवा जोखिम भी उत्पन्न करता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्रद्धेय चंद्रशेखर आजाद को दी श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश की माटी के गौरव, स्वतंत्रता संग्राम के नायक श्रद्धेय चंद्रशेखर आजाद की जयंती पर उन्हें कोटि-कोटि नमन कर श्रद्धांजलि अर्पित की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मात्र 13 साल की उम्र में स्कूल के बाहर धरना देते गिरफ्तार किए गए चंद्रशेखर ने अपना नाम 'आजाद' और पिता का नाम 'स्वाधीनता' बताया था। उन्होंने कहा कि वे सच्चे राष्ट्रवादी थे। मां भारती के ऐसे सपूत के ऋण से राष्ट्र कभी उऋण न हो सकेगा।

मंत्री विजय शाह के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में नई याचिका

● कर्नल सोफिया पर बयान दिया था; कांग्रेस नेता जया ठाकुर ने हटाने की मांग की

भोपाल (नप्र)। कर्नल सोफिया कुरैशी को लेकर विवादित बयान देने वाले मंत्री विजय शाह को पद से हटाने की मांग को लेकर कांग्रेस की नेता जया ठाकुर ने सुप्रीम कोर्ट में एक और याचिका दाखिल की है। याचिका में कहा गया है कि मंत्री शाह का आचरण संविधान के अनुच्छेद 164 (3) के तहत ली गई शपथ का उल्लंघन करता है। इसी आधार पर याचिकाकर्ता ने उनके खिलाफ क्वो-वारंटो रिट जारी करने की मांग की है, जिससे उन्हें मंत्री पद से हटाया जा सके। याचिका में कहा गया है-मंत्री ने कर्नल सोफिया कुरैशी के खिलाफ एक विवादित टिप्पणी की थी, जो किसी और के लिए नहीं बल्कि केवल उन्हीं के लिए हो सकती है। क्योंकि मंत्री द्वारा की गई कमेंट के विवरण के मुताबिक कोई और नहीं है। महू में जलसंरक्षण कार्यक्रम के दौरान मंत्री विजय शाह ने आपत्तिजनक बयान दिया।

कोर्ट ने कहा था- अलग से याचिका दायर करें – शाह केस की सुप्रीम कोर्ट में 28 मई को हुई सुनवाई के दौरान कांग्रेस नेता जया ठाकुर ने कैविएट दायर की थी। इसमें कहा गया था कि उन्हें सुने बगैर सुप्रीम कोर्ट शाह केस में कोई फैसला न दे। इस दौरान जया ठाकुर की तरफ से एडवोकेट वरुण ठाकुर, विवेक तन्खा और बाकी लोग भी कोर्ट रूम में मौजूद थे।

प्रदेश में इंग्लिश भाषा के शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जायेगा

वर्ल्ड पॉवर चैम्पियनशिप में 10 लाख से अधिक स्कूली छात्रों ने की भागीदारी

भोपाल (नप्र)। प्रदेश के सरकारी स्कूलों में इंग्लिश भाषा के शिक्षकों के प्रशिक्षण दिया जायेगा। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा इसकी विशेष व्यवस्था की जा रही है। प्रशिक्षण के लिये भोपाल में एक राज्य स्तरीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान इंग्लिश लर्निंग ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट (ईएलटीआई) कार्यरत है। यह संस्थान राज्य के समस्त शासकीय, प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षण संस्थानों में इंग्लिश भाषा संबंधी अकादमिक और प्रशिक्षण के क्षेत्र में मार्गदर्शन एवं सहयोग कर रहा है। ईएलटीआई संस्थान इंग्लिश भाषा अध्यापन क्षेत्र में सतत उन्नयन एवं स्तरीकरण के लिये हैदराबाद के इंग्लिश एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय (ईएफएलयू) से सहयोग प्राप्त कर रहा है।

इंग्लिश ओलम्पियाड – संस्थान ने पिछले वर्ष इंग्लिश विषय में कक्षा-2 से 8 के लिये संकुल, विकासखण्ड तथा जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिये ओलम्पियाड प्रश्न बैंक तथा प्रश्न-पत्रों का निर्माण किया था। पिछले वर्ष ओलम्पियाड में शामिल छात्रों की संख्या 10 लाख से अधिक रही। संस्थान ने माध्यमिक शालाओं में इंग्लिश विषय पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिये आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण के लिये मेन्युअल का भी निर्माण किया है। संस्थान ने राज्य द्वारा निर्मित कक्षा-1 से 8 तक की इंग्लिश की पाठ्य-पुस्तकों और एनसीईआरटी से जुड़ी कक्षा-9 से 12 तक की पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में समन्वय का कार्य भी किया है।

इंग्लिश भाषा शिक्षकों का प्रशिक्षण

स्कूल शिक्षा विभाग ने प्रदेश के सरकारी सकूलों में इंग्लिश भाषा पढ़ाने वाले शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष जोर दिया है। प्रशिक्षण के लिये ईएलटीआई ने शिक्षण सत्र के लिये कैलेंडर तैयार किया है। संस्थान इंग्लिश भाषा के मूल्यांकन के लिये विभिन्न स्तरों के प्रश्न-पत्रों के निर्माण और अन्य विषय के प्रश्न-पत्रों के अनुवाद कार्य में भी सहयोग कर रहा है। इंग्लिश भाषा के शिक्षकों को प्रदेश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से जुड़े डिप्लोमा कोर्स कराने के लिये उनकी चयन प्रक्रिया में भी सहयोग कर रहा है। प्रदेश के ग्रामीण एवं आदिवासी अंचलों में कार्यरत शिक्षकों के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन में संस्थान विशेष ध्यान दे रहा है। संस्थान समय-समय पर विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता के आकलन एवं मूल्यांकन के कार्यों को भी सतत रूप से कर रहा है।

जबलपुर में 2 घोड़े लड़ते हुए शोरूम में घुसे

फिर यात्रियों से भरे ऑटो में जा घुसा एक घोड़ा; ड्राइवर समेत 3 घायल

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर के नागरथ चौक पर दो घोड़े आपस में भिड़ गए। वहां मौजूद लोगों ने उन्हें भगाने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो पाए। देखते ही देखते घोड़े शोरूम में जा घुसे। लड़ाई के दौरान शोरूम में काफी तोड़फोड़ हुई। लड़ते-लड़ते दोनों घोड़े सड़क पर आ गए। इसी बीच चौराहे से सवारियों से भरा एक ई-रिक्शा गुजर रहा था, तभी एक घोड़ा सीधे उसमें घुस गया। ऑटो चालक सहित दो यात्रियों को गंभीर चोटें आई हैं। लोगों ने दौड़कर घायलों को ऑटो से बाहर निकाला और एम्बुलेंस बुलाई गई। इसके बाद लोगों ने कड़ी मशक्कत के बाद घोड़े को ऑटो से निकाला। तब तक वह छटपटाता रहा। करीब आधे घंटे तक चले हंगामे के बाद दोनों घोड़े वहां से चले गए।

लोग बोले- नगर निगम ने नहीं की कार्रवाई – प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि बीते दो-तीन दिनों से ये दोनों घोड़े अक्सर चौराहे पर लड़ते देखे गए हैं। नगर निगम को इसकी सूचना दी गई थी, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसी लापरवाही का नतीजा है कि आज तीन लोग घायल हो गए। स्थानीय निवासी मेहमूद ने बताया, जिनके घोड़े हैं, उनके खिलाफ कार्रवाई की जाए। अगर इन घोड़ों को रेस्क्यू कर शहर से बाहर नहीं किया गया, तो आगे चलकर इससे भी बड़ा हादसा हो सकता है। -

घोड़ों के कारण हो रहे हादसे – प्रत्यक्षदर्शी राजू ने बताया कि चौराहे पर तीन घोड़े अक्सर दिखाई देते हैं। इनके कारण एक्सीडेंट होते हैं। आज ही लड़ते हुए घोड़े एक ऑटो में घुस गए, जिससे ऑटो चालक को चोट आई है। उसे मेडिकल कॉलेज भेजा गया है। वहीं उसका ऑटो भी खराब हो गया है। ऐसे हादसे आए दिन होते रहते हैं।

पति के जेल जाने के डर पर महिला का सुसाइड

2 महीने बाद बेटी की शादी होने वाली थी; परिजनों का पुलिस पर पैसों की डिमांड का आरोप

भोपाल (नप्र)। भोपाल के शाहजहांनाबाद इलाके में महिला ने पति के जेल जाने के डर से फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। घटना मंगलवार-बुधवार की दरमियानी रात की है। दरअसल महिला के पति पर ईटखेड़ी पुलिस ने एक साल पहले चोरी का माल खरीदने के आरोप में कार्रवाई की थी। यह केस फिलहाल न्यायालय में विचाराधीन है। जानकारी के मुताबिक नूर बानो पति अनीस खान (42) संजय नगर शाहजहांनाबाद की रहने वाली थीं। उनके पति एक साल पहले तक ईटखेड़ी इलाके में कबाड़े की दुकान चलाते थे। मृतका के भाई फारूख ने बताया कि जीजा अनीस को ईटखेड़ी पुलिस ने एक साल पहले हिरासत में लिया था। उन पर चोरी का सामान खरीदने के आरोपों में एफआईआर दर्ज थी। इस केस के बाद जीजा ने दुकान को बंद कर दिया। इसके बाद भी आए दिन पुलिस उन्हें थाने बुलाती थी, पैसों की डिमांड करती थी। दूसरे केस में फंसाने की धमकी देती थी। जेल भिजवाने की धमकी दी जाती थी। इन तमाम बातों को लेकर नूर बानो तनाव में रहने लगी। परिजनों की मौजूदगी में बुधवार को नूर बानो के शव का पीएम हमीदिया अस्पताल की मर्चुरी में कराया गया।

पेशी से एक दिन पहले लगाई फांसी – फारूख का कहना है कि बहन ने मंगलवार-बुधवार की दरमियानी रात को फांसी लगाकर सुसाइड किया है। बुधवार को जीजा अनीस की पेशी थी, बहन को डर था कि इस पेशी के बाद जीजा को जेल भेज दिया जाएगा। इसी तनाव में उन्होंने जान दी है। अनीस को धमकाने वाले पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई होना चाहिए, वे लगातार अनीस को कॉल करते थे।

नीट काउंसलिंग में शामिल होने की अस्थायी अनुमति नहीं

सुप्रीम कोर्ट ने इनकार किया; इंदौर के कई एग्जाम सेंटर्स में बिजली गुल हुई थी

इंदौर (नप्र)। नीट जी 2025 की 4 मई को हुई परीक्षा में बिजली कटौती का शिकार हुए स्टूडेंट्स को सुप्रीम कोर्ट ने काउंसलिंग में शामिल होने की अस्थायी अनुमति देने से इनकार कर दिया है। बुधवार (23 जुलाई) को सुप्रीम कोर्ट में जस्टिस पीएस नरसिम्हा और एएस चंदुरकर की बेंच ने याचिका पर सुनवाई की।

याचिकाकर्ता स्टूडेंट नव्या नायक और एस साई प्रिया के वकील ने कहा कि काउंसलिंग के लिए एक अधिसूचना जारी की गई है। इसमें बिजली कटौती प्रभावित स्टूडेंट्स को भी भाग लेने के लिए अस्थायी अनुमति मिलनी चाहिए, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने अनुमति देने से इनकार कर दिया। याचिका पर अब शुक्रवार को सुनवाई होगी। साथ ही 51 अन्य स्टूडेंट्स की याचिका पर भी इसी दिन सुनवाई होगी।

हाईकोर्ट के फैसले को छात्रों ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी – नीट यूजी के एग्जाम के दौरान बिजली गुल होने के मामले में 14 जुलाई को एमपी हाईकोर्ट की इंदौर बेंच ने 75 से ज्यादा प्रभावित स्टूडेंट्स की दोबारा परीक्षा कराने संबंधी याचिकाएं खारिज कर दीं थी। हाईकोर्ट ने परीक्षा कराने वाली नेशनल टेस्टिंग एजेंसी एनटीए की रिट अपील मंजूर करते हुए अपना फैसला सुनाया था। हाईकोर्ट द्वारा एनटीए की रिट अपील मंजूर करने के बाद उसी दिन शाम को ऑर्डर वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया था। इसके बाद शाम 6 बजे एनटीए ने उन 75 स्टूडेंट्स, जिनके रिजल्ट पर स्टे था, उसे घोषित कर दिया। इसकी सूचना हर स्टूडेंट को उनके मेल पर दी गई।

पेसा एक्ट के बेहतर क्रियान्वयन के लिए त्रि-पक्षीय अनुबंध 24 जुलाई को

भोपाल (नप्र)। पेसा एक्ट के मध्यप्रदेश में बेहतर क्रियान्वयन के लिए त्रि-पक्षीय अनुबंध होगा। अनुबंध सचिव पंचायती राज मंत्रालय, भारत सरकार, प्रमुख सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास एवं इंदिरा गांधी नेशनल ट्राइबल यूनिवर्सिटी अमरकंटक के बीच होगा। कार्यक्रम मध्यप्रदेश जल एवं भूमि प्रबंध संस्थान वाल्मी भोपाल में 24 जुलाई को शाम 4 बजे से होगा।

कार्यक्रम में पेसा एक्ट पर बनी पुस्तिका का विमोचन भी किया जाएगा। इस दौरान देशभर से आए पेसा एक्ट पैनलिस्ट, विशेषज्ञों के बीच चर्चा होगी। प्रदेश में पेसा एक्ट के बेहतर क्रियान्वयन, उपनियमों को लागू करना, जनजातीय समुदाय को प्रशिक्षण देना, जनजातीय समुदाय की परंपराओं की रक्षा, नए शोध, जनजातीय कलाओं को सुरक्षित रखे जाने और जनजातीय समुदाय के बीच हो रहे बेहतर कार्यों का प्रचार-प्रसार पर विचार-विमर्श होगा।

कार्यक्रम में भारत सरकार के सचिव पंचायती राज मंत्रालय श्री विवेक भारद्वाज, प्रमुख सचिव पंचायत एवं ग्रामीण विकास श्रीमती दीपाली रस्तोगी एवं संचालक सह आयुक्त पंचायत राज संचालनालय श्री छोटे सिंह सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहेंगे।

संपादकीय

शहरी विकास : नई चुनौतियां

विश्व बैंक की ताजा रिपोर्ट पर भरोसा करें तो भारत में आने वाला समय शहरों और उनके विकास का है। रिपोर्ट के मुताबिक अगले पांच सालों में देश की 70 फीसदी नौकरियां शहरों से ही आएंगी। इसका सीधा मतलब है कि पहले ही बुनियादी सुविधाओं की कमी से जूझ रहे भारत के शहरों पर और दबाव बढ़ेगा। हमे आवास, सड़क, सीवरेज, परिवहन तथा ऊर्जा की और तथा बढ़ते प्रदूषण को काबू में करने की ज्यादा व्यवस्था करनी होगी।

केन्द्रीय आवास एवं शहरी कार्य मंत्रालय के साथ मिलकर तैयार की गई 'टुवर्ड्स रेसिलिएंट एंड प्रोस्पेरोउस सिटीज इन इंडिया' (भारत में समुत्थानशील और समृद्ध शहरों की ओर) नामक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत की शहरी आबादी 2050 तक दोगुनी होकर 95.1 करोड़ होने की उम्मीद है। इसके लिए 2070 तक 14.4 करोड़ से अधिक नए घरों की जरूरत होगी। हालांकि रिपोर्ट का सकारात्मक पहलू यह है कि भारत के शहरों में आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं। 2030 तक 70 प्रतिशत नई नौकरियां शहरों से ही आएंगी। रिपोर्ट में भारतीय शहरों को जलवायु जोखिमों से निपटने के लिए 2050 तक कम कार्बन उत्सर्जन वाले बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए 2.4 लाख करोड़ डॉलर से अधिक के निवेश की आवश्यकता पर बल दिया गया है। बढ़ते शहरीकरण के चलते शहरी के तापमान में 3-4 डिग्री का इजाफा भी होगा। इसके अलावा इन क्षेत्रों में वर्षाजन्य बाढ़ की संभावनाएं भी बढ़ेंगी। चेन्नई, इंदौर, नई दिल्ली, लखनऊ, सूरत और तिरुवनंतपुरम पर विशेष ध्यान केंद्रित करते हुए 24 भारतीय शहरों का अध्ययन करने वाली नई रिपोर्ट में पाया गया है कि समय रहते कम कार्बन उत्सर्जन वाले बुनियादी ढांचे के निर्माण से भविष्य में मौसम के प्रभावों से होने वाले अरबों डॉलर के वार्षिक नुकसान को टाला जा सकता है। उदाहरण के लिए वार्षिक वर्षाजन्य बाढ़ से होने वाले नुकसान को वर्ष 2030 तक 5 अरब डॉलर से अधिक और वर्ष 2070 तक 30 अरब डॉलर से अधिक का नुकसान होने की संभावना है। 2050 तक अपेक्षित 50 प्रतिशत से अधिक शहरी बुनियादी ढांचे का निर्माण भी किया जाना है, इसलिए भारत के पास उन्नतशील शहरी बुनियादी ढांचे के विकास को आगे बढ़ाने का एक महत्वपूर्ण अवसर है। विश्व बैंक के कंट्री डायरेक्टर ऑगस्टे तानो कौमे ने कहा कि भारत के लिए बड़े पैमाने पर समुत्थानशील शहरों का निर्माण करना स्पष्ट रूप से अनिवार्य है। आवास, परिवहन और नगरपालिका सेवाओं सहित अधिक हरित और स्थिति अनुकूलित शहरी विकास में निवेश करके, शहरों में अत्यधिक गर्मी और शहरी बाढ़ की स्थिति को बेहतर ढंग से कम किया जा सकता है और रोजगार में वृद्धि की जा सकती है। रिपोर्ट में नई चुनौतियों से निपटने के लिए कुछ सिफारिशें भी की गई हैं। जिसके मुताबिक अत्यधिक शहरी गर्मी और बाढ़ की समस्या के लिए ग्रीन बेल्ट का बेहतर विनियमन, ठंडी छतों की स्थापना व प्रभावशाली पूर्व चेतावनी प्रणालियां को विकसित करना, स्थिति अनुकूलित बुनियादी ढांचे और नगरपालिका सेवाओं, कुशल ऊर्जा और समुत्थानशील आवास में निवेश करना, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन का आधुनिकीकरण करना और शहरी परिवहन को बाढ़ प्रतिरोधी बनाना। निजी क्षेत्र की बेहतर भागीदारी के माध्यम से शहरी वित्त तक पहुंच में सुधार करना आदि शामिल है। आज भारत में बड़े शहरों के सामने सबसे बड़ी चुनौती तो बढ़ती आबादी के लिए समुचित पेयजल उपलब्ध कराने की है। हाल ही जारी एक अध्ययन रिपोर्ट में कहा गया है कि बेंगलुरू जैसे शहरों में पांच साल बाद भूजल लगभग सूखने की स्थिति में होगा, क्योंकि करीब 1 करोड़ आबादी वाले इस शहर में भूजल का दोहन इतनी बेरहमी से हो रहा है कि लोग आने वाले समय में पानी को तरस जाएंगे।

चीन से संवाद, अमेरिका से साझेदारी : भारत का वैश्विक संतुलन

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक 'नृप'
लेखक स्तंभकार हैं।

भारत ने रूस से सस्ते तेल और रक्षा उपकरण खरीदने की परंपरा को जारी रखा, तो वहीं अमेरिका से रणनीतिक, तकनीकी और डिजिटल साझेदारी को भी प्रगाढ़ किया। भारत ने चीन के प्रति दोहरी नीति अपनाई है-एक ओर सीमा पर आक्रामकता का ठोस जवाब दिया है, वहीं दूसरी ओर संवाद और कूटनीतिक खिड़कियाँ खुली रखी हैं। 2024 में बीजिंग में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन की बैठक के दौरान भारत ने पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ जिस स्पष्टता से संयुक्त घोषणापत्र में आतंकवाद का उल्लेख कराया, वह कूटनीतिक विजय रही। ब्रिक्स में भारत के प्रयासों से पहली बार आतंकवाद के विरुद्ध स्पष्ट निंदा दर्ज की गई, जिसमें पाकिस्तान आधारित आतंकी समूहों का संकेत भी था। इसी बैठक में भारत ने चीन द्वारा अरुणाचल प्रदेश को 'दक्षिण तिब्बत' बताने और मानचित्र विवाद पर भी तीव्र प्रतिक्रिया दी। इससे यह स्पष्ट हो गया कि भारत अपनी सीमाओं, संप्रभुता और आत्मगौरव पर किसी प्रकार का समझौता नहीं करेगा।

भारत और चीन दो प्राचीन सभ्यताएँ हैं, जिनके बीच आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संबंधों का इतिहास हजारों वर्षों पुराना है। किंतु समकालीन संदर्भ में दोनों देशों के बीच रिश्ते विशेष रूप से 2020 के गलवान संघर्ष के बाद जटिल हो गए थे। गलवान घाटी में भारतीय सैनिकों के बलिदान नेद्विपक्षीय संबंधों में ऐसी तल्ख़ी पैदा कर दी थी, जिसे सामान्य करना आसान नहीं था। इसके बाद सीमा पर गश्त, चरागाही गतिविधियों, और सैनिकों की तैनाती पर दोनों देशों में तनातनी बनी रही। परंतु वर्ष 2024 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग की कज़ान (रूस) में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान हुई वार्ता ने इस दिशा में एक नई शुरुआत का संकेत दिया।

साथ ही हाल ही में विदेश मंत्री एस. जयशंकर की बीजिंग यात्रा और चीनी उपराष्ट्रपति हान झेंग के साथ हुई बातचीत में यह स्पष्ट हुआ कि अब दोनों देश 'सामान्यता की बहाली' के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहते हैं। इस यात्रा में कैलाश मानसरोवर यात्रा के पुनः प्रारंभ होने की चर्चा तथा एलएसी पर तनाव कम करने की प्रतिबद्धता जैसे सकारात्मक संकेत उभर कर सामने आए। भारत की ओर से विदेश मंत्री ने कहा कि सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिरता बहाल करना और शांति बनाए रखना दोनों देशों के लिए प्राथमिकता होनी चाहिए। वहीं चीनी नेतृत्व ने भी भारत के प्रति 'नए दृष्टिकोण' और 'पारस्परिक सम्मान' की बात कही।

भारत की विदेश नीति का मौजूदा स्वरूप 'सार्वभौमिक संतुलन' की नीति का अनुपम उदाहरण है। भारत ने बीते वर्षों में अमेरिका, चीन और रूस जैसे तीनों वैश्विक ध्रुवों से अपनी साझेदारी को इस प्रकार साधा है कि किसी एक ध्रुव पर निर्भरता न बने और न ही किसी एक से दूरी बने। यह नीति विशेष रूप से तब और महत्वपूर्ण हो जाती है जब अमेरिका और चीन के बीच व्यापार, तकनीकी, और सैन्य तनाव चरम पर हो, और रूस यूक्रेन युद्ध के कारण पश्चिमी देशों से अलग-थलग पड़ा हो।

भारत ने रूस से सस्ते तेल और रक्षा उपकरण खरीदने की परंपरा को जारी रखा, तो वहीं अमेरिका से रणनीतिक, तकनीकी और डिजिटल साझेदारी को भी प्रगाढ़ किया। भारत ने चीन के प्रति दोहरी नीति अपनाई है-एक ओर सीमा पर आक्रामकता का ठोस जवाब दिया है, वहीं दूसरी ओर संवाद और कूटनीतिक खिड़कियाँ खुली रखी हैं। 2024 में बीजिंग में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन की बैठक के दौरान भारत ने पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ जिस स्पष्टता से संयुक्त घोषणापत्र में आतंकवाद का उल्लेख कराया, वह कूटनीतिक विजय रही। ब्रिक्स में भारत के प्रयासों से पहली बार आतंकवाद के विरुद्ध स्पष्ट निंदा दर्ज की गई, जिसमें पाकिस्तान आधारित आतंकी समूहों का संकेत भी था। इसी बैठक में भारत ने चीन द्वारा अरुणाचल प्रदेश को 'दक्षिण तिब्बत' बताने और मानचित्र विवाद पर भी तीव्र प्रतिक्रिया दी। इससे यह स्पष्ट हो गया कि भारत अपनी सीमाओं, संप्रभुता और आत्मगौरव पर किसी प्रकार का समझौता नहीं करेगा।

भारत और चीन के संबंधों में ताइवान, दलाई लामा, ब्रह्मपुत्र नदी के जल विवाद और जम्मू-कश्मीर में चीन-

पाक गठजोड़ जैसे मुद्दे दीर्घकालिक तनाव के कारक हैं। भारत ने इन सभी विषयों पर अपनी स्थिति स्पष्ट की है। चीन यदि 'वन चाइना पॉलिसी' की पुनः पुष्टि चाहता है, तो उसे भी 'वन इंडिया' नीति का सम्मान करना होगा अर्थात् अरुणाचल प्रदेश, लद्दाख, और जम्मू-कश्मीर भारत के अभिन्न अंग हैं और उन पर चीन की कोई टिप्पणी या गतिविधि अस्वीकार्य है।

भारत-चीन व्यापार संबंधों में असमानता एक बड़ी चुनौती है। चीन से भारत का आयात बहुत अधिक है, जबकि निर्यात सीमित है। भारत ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा, फार्मा और उच्च तकनीक क्षेत्रों में चीन पर निर्भरता कम करने का प्रयास किया है। साथ ही व्यापार संतुलन सुधारने के लिए विविध बाजारों की तलाश की है। दूसरी ओर, भारत ने अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया और यूरोपीय संघ के साथ तकनीकी सहयोग और निवेश को बढ़ावा दिया है, जिससे वैश्विक मूल्य श्रृंखला में भारत की हिस्सेदारी मजबूत हो सके।

भारत की विदेश नीति में एक विशेष गुण उभर कर सामने आया है जिसे 'संवेदनशील सतर्कता' (सेंसिटिव विजिलेंस) कहा जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि भारत अपनी राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक गौरव को बनाए रखते हुए भी व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाता है। यह नीति ना तो एकपक्षीय झुकाव में विश्वास करती है, और ना ही भावनात्मक प्रतिक्रिया में बहती है। भारत-चीन संबंधों के संदर्भ में यह नीति विशेष रूप से सार्थक सिद्ध हुई है। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि वह चीन के साथ सहयोग चाहता है, परंतु यह सहयोग समानता, पारस्परिक सम्मान और पारदर्शिता की बुनियाद पर ही टिकेगा।

21वीं सदी को 'एशियाई सदी' कहा जा रहा है और इस सदी में भारत और चीन के बीच प्रतिस्पर्धा भी होगी और साझेदारी की संभावनाएँ भी। चीन जहां अपनी सैन्य और आर्थिक शक्ति के बल पर प्रभाव जमाना चाहता है, वहीं भारत वैचारिक समावेशिता, लोकतांत्रिक मूल्यों और मानवता-केन्द्रित विकास मॉडल के ज़रिए वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाना चाहता है। चीन की बेल्ट ऐंड रोड इनिशिएटिव (बी. आर. आई.) जैसी परियोजनाओं में भारत की अनुपस्थिति यह दिखाती है कि भारत अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को बनाए रखना चाहता है। वहीं अमेरिका और पश्चिमी देशों के साथ रणनीतिक संवाद, क्वाड जैसी संस्थाओं में भागीदारी, और वैश्विक दक्षिण (ग्लोबल साउथ) की आवाज़ बनने की भारत की कोशिशें यह संकेत देती हैं कि भारत अब सिर्फ 'क्षेत्रीय शक्ति' नहीं, बल्कि 'ग्लोबल सॉफ्ट पावर' के रूप में देखा जा रहा है।

भारत का रुख अब प्रतिक्रिया तक सीमित नहीं है, वह समाधान की ओर भी उन्मुख है। चाहे वह यूक्रेन युद्ध पर भारत का संतुलित रुख हो या इस्राइल-हमास संघर्ष के प्रति विवेकपूर्ण प्रतिक्रिया- भारत ने बार-बार यह सिद्ध किया है कि वह वैश्विक तनावों में 'स्थिरता का स्तंभ' (पिलर ऑफ स्टेबिलिटी) बनकर उभर सकता है। चीन के साथ सीमा विवादों पर भारत की नीति भी इसी दृष्टिकोण की पुष्टि करती है- सीमाओं की रक्षा के लिए शक्ति, लेकिन शांति के लिए संवाद। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने बार-बार यह दोहराया है कि 'बॉर्डर पर शांति और स्थिरता द्विपक्षीय संबंधों की पूर्वशर्त है।' यह वक्तव्य भारतीय नीति की स्पष्टता और आत्मविश्वास को दर्शाता है।

भारत की विदेश नीति की एक बड़ी विशेषता यह रही है कि आज उसका स्वरूप सिर्फ कूटनीतिक गलियारों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह आम नागरिकों के मन में भी विश्वास उत्पन्न करती है। गलवान संघर्ष के बाद जब देश में आक्रोश था, तब सरकार ने न केवल सेनाओं को पूरा समर्थन दिया, बल्कि विश्व मंच पर चीन को घेरने का भी प्रयास किया। 'आत्मनिर्भर भारत' और 'वोकल फॉर लोकल' जैसी पहलें देश को आर्थिक स्वतंत्रता की ओर ले जाने के साथ-साथ चीन पर निर्भरता कम करने की दिशा में ठोस कदम थीं। इसके साथ ही, कैलाश मानसरोवर यात्रा की बहाली, अरुणाचल में इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास, और एलएसी पर बेहतर प्रबंधन जैसे कार्यों ने आम नागरिकों के मन में यह विश्वास जगाया है कि भारत अब 'न सिर्फ़ सहन करता है, बल्कि सही समय पर सही भाषा में जवाब देना जानता है।'

भारत-चीन संबंधों का सुधार और वैश्विक मंचों पर भारत की संतुलित उपस्थिति यह दर्शाते हैं कि भारत की विदेश नीति अब केवल 'प्रतिक्रिया' नहीं, बल्कि 'रणनीति' के स्तर पर विकसित हो चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, विदेश मंत्री एस. जयशंकर और राजनयिक तंत्र की दूरदृष्टि ने भारत को विश्व राजनीति के केंद्र में स्थापित किया है। यह स्पष्ट है कि भारत अब न तो 'वेट ऐंड वॉच' की नीति अपनाता है और न ही 'बेंड ऐंड ब्लेम' की रणनीति पर चलता है। वह अब 'एक्ट एंड एसेस' यानी कार्रवाई करो और मूल्यांकन करो की नीतिगत सोच के साथ आगे बढ़ रहा है। आज के अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत की सबसे बड़ी ताकत यही है- संयम, संवाद और संप्रभुता की त्रयी पर टिका हुआ उसका विवेकपूर्ण, दृढ़ और संतुलित विदेश नीति दृष्टिकोण। यही दृष्टिकोण भारत को 21वीं सदी की वैश्विक राजनीति में एक निर्णायक शक्ति बनाएगा।

नकली वोटरों से लोकतंत्र कैसे रहेगा असली?

मुद्दा

- डॉ. रमेश ठाकुर
सदस्य, राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, भारत सरकार

लोकतांत्रिक देश में चुनाव की पवित्रता उस बुनियादी भरोसे पर टिकी होती है जहां केवल वैध नागरिक वोट डालते हैं। लेकिन जब इस भरोसे की नींव मतदाता सूची ही अविश्वसनीय हो जाए तो पूरा लोकतांत्रिक ढांचा सवालों के घेरे में आ जाता है। बिहार को लेकर हाल ही में सामने आई एक जनसांख्यिकीय रिपोर्ट ने इसी आशंका की चेताया है। रिपोर्ट में यह संकेत मिला है कि राज्य की मतदाता सूची में लाखों ऐसे नाम दर्ज हैं, जिनका कोई जनसांख्यिकीय आधार नहीं है। ये न केवल प्रशासनिक उदासीनता का मामला है, बल्कि संभावित रूप से लोकतंत्र की निष्पक्षता पर गंभीर संकट की चेतावनी भी है।

डॉ. विद्यु शेखर और डॉ. मिलन कुमार द्वारा तैयार की गई 'जनसांख्यिकीय पुनर्निर्माण और मतदाता सूची में फुलावः बिहार में वैध मतदाता आधार का अनुमान' रिपोर्ट, विभिन्न सरकारी स्रोतों जिसमें 2011 की जनगणना, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़े, सैंपल रजिस्ट्रेशन सिस्टम, राज्य आर्थिक सर्वेक्षण और प्रवासन के आधिकारिक आंकड़ों को शामिल किया गया है। इस अध्ययन में इन आंकड़ों के आधार पर बिहार में संभावित वैध मतदाताओं की संख्या का अनुमान लगाया गया है। चुनाव आयोग के अनुसार, 2024 के चुनावों के लिए बिहार में कुल 7.89 करोड़ पंजीकृत मतदाता हैं, लेकिन जनगणना और राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के आंकड़ों पर आधारित इस शोध का अनुमान है कि वैध मतदाताओं की संख्या केवल 7.12 करोड़ होनी चाहिए। इसका सीधा अर्थ है कि 77 लाख नाम ऐसे हैं, जिन्हें साफ-सुथरी और अद्यतन मतदाता सूची में जगह नहीं मिलनी चाहिए थी। यह फासला न तो सामान्य माना जा सकता है और न ही इसे मात्र तकनीकी चूक करार दिया जा सकता है। 77 लाख का यह अंतर राज्य की कुल मतदाता संख्या का लगभग 10 प्रतिशत है, जो किसी भी चुनाव के परिणाम को प्रभावित करने के लिए पर्याप्त है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि यह विसंगति राज्य के सभी हिस्सों में समान नहीं है, कुछ जिले तो ऐसे हैं जहां यह अंतर बेहद गंभीर स्तर तक पहुंच गया है। उदाहरण के लिए, दरभंगा में 21.5 प्रतिशत, मधुबनी में 21.4 प्रतिशत, मुज़फ्फरपुर में 11.9 प्रतिशत और राजधानी पटना में 11.2 प्रतिशत अतिरिक्त मतदाताओं के नाम दर्ज हैं। मात्र तीन जिलों मधुबनी, दरभंगा और मुज़फ्फरपुर में ही लगभग 15 लाख ऐसे मतदाताओं के नाम दर्ज हैं, जिन्हें जनसांख्यिकीय तौर पर मौजूद नहीं होना चाहिए। कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि और मतदातावृद्धि के आंकड़े एक-दूसरे से बिलकुल मेल नहीं खाते। उदाहरण के तौर पर शेखपुरा जिले की जनसंख्या 2011 से 2024 के बीच 2.22 प्रतिशत घटी है, लेकिन मतदाताओं की संख्या 11.7 प्रतिशत बढ़ गई। इसी तरह सीतामढ़ी की जनसंख्या में 11.3 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि मतदाताओं की संख्या 29.3 प्रतिशत बढ़ गई। ऐसी विसंगतियाँ किसी स्वाभाविक जनसंख्या परिवर्तन का परिणाम नहीं हो सकतीं। ये आंकड़े या तो प्रशासनिक लापरवाही की ओर इशारा करते हैं या जानबूझकर किए गए हेरफेर की ओर। दरअसल बिहार में मतदाता सूची से नाम हटाने की प्रक्रिया काफी कमजोर और ढीली है। यह काम ज़्यादातर लोगों द्वारा खुद फॉर्म भरने और फील्ड वेरिफिकेशन पर निर्भर करता है, जो अक्सर अधूरा या अनियमित होता है। कई बार इस तरह की खबरें आती हैं कि कई शहरी और अर्ध-शहरी इलाकों में घर-घर जाकर या तो अधूरी जांच होती है या होती ही नहीं है। इसके अलावा मतदाता सूची को मृत्यु पंजीकरण या प्रवासन से जुड़े सरकारी आंकड़ों से जोड़ने की कोई तात्कालिक व्यवस्था नहीं है। नतीजतन जो लोग गुजर चुके हैं या राज्य से बाहर चले गए हैं, उनके नाम भी वर्षों तक सूची में बने रहते हैं।

मतदाता सूची की इन विसंगतियों का कुछ दलों को सीधा फायदा होता है। बिहार की राजनीति लंबे समय से पहचान आधारित और जातीय वोट बैंक पर टिकी रही है। ऐसे में जब मतदाता सूची में संदिग्ध या फर्जी नाम बने रहते हैं, तो ये पार्टियाँ इसे अपने लिए 'बैकडोर वोटिंग' और चुनावी धांधली का जरिया बना लेती हैं। जब कभी सूची की सफाई की माँग उठती है, तो इसे 'अल्पसंख्यकों को निशाना बनाने' जैसा भावनात्मक मुद्दा बनाकर दबा दिया जाता है। बिहार की तरह पश्चिम बंगाल में भी यही पैटर्न दिखता है। सीमावर्ती इलाकों में घुसपैठ की आशंका के चलते वहां मतदाता सूची को लेकर लंबे समय से सवाल उठते रहे हैं, मगर तृणमूल कांग्रेस अक्सर इन जिलों में गहन जांच का विरोध करतीरही है। यह भी उसी रणनीति का हिस्सा लगता है, जैसा कि बिहार में देखागया। वहीं असम में एनआरसी प्रक्रिया से यह तो साबित हुआ ही कि अवैध प्रवासियों की पहचान मुश्किल है, लेकिन यह भी दिखा कि अगर राजनीतिक इच्छाशक्ति हो, तो मतदाता सूची को सुधारना नामुमकिन नहीं है। इस पूरे मामले का सबसे खतरनाक पहलू यह है कि फर्जी मतदाताओं की इतनी बड़ी संख्या सीधे चुनावी नतीजों को प्रभावित कर सकती है। 2020 के विधानसभा चुनावों में बिहार की 243 सीटों में से 90 सीटें ऐसी थीं, जहां जीत-हार का अंतर 10,000 से कम वोटों का था। अब अगर हर विधानसभा क्षेत्र में औसतन 25,000 से 50,000 तक फर्जी नाम दर्ज हैं, तो यह निष्पक्ष चुनाव की सोच को ही सवालों के घेरे में डाल देता है। ऐसे में यह पूछना बिल्कुल जायज़ है कि क्या मतदाता सूची में मौजूद ये फर्जी नाम लोकतंत्र की आत्मा को भीतर से खोखला नहीं कर रहे? भले ही यह रिपोर्ट बिहार तक सीमित है, लेकिन इसका संदेश पूरे देश के लिए बेहद अहम है। जब एक ऐसा राज्य, जहां आधार लिंकिंग, वोटर आईडी और मतदाता सूची संशोधन जैसी कोशिशें हो चुकी हैं, वहां इतनी बड़ी गड़बड़ी पाई जाती है, तो उन राज्यों का क्या हाल होगा जहां पारदर्शिता और निगरानी और भी कमज़ोर है? यह शोध रिपोर्ट महज़ आंकड़ों का विश्लेषण नहीं है, बल्कि एक गंभीर लोकतांत्रिक चेतावनी है। हर फर्जी नाम, हर मृत या पलायन कर चुके व्यक्ति का नाम जो मतदाता सूची में बना हुआ है, लोकतंत्र को हाईजैक करने का औजार है। यह किसी नकली नोट से भी ज़्यादा खतरनाक है, क्योंकि इसका नुकसान सिर्फ आर्थिक नहीं, बल्कि राजनीतिक औरसंस्थागत है जो एक पूरे राज्य का प्रतिनिधित्व बदल सकता है। बिहार की मतदाता सूची में दर्ज ये 77 लाख फर्जी नाम सिर्फ प्रशासनिक लापरवाही नहीं, बल्कि एक लोकतांत्रिक संकट की दस्तक हैं। यदि मतदाता सूची ही अविश्वसनीय हो जाए तो फिर चुनाव की पवित्रता, जनादेश की वैधता और शासन की नैतिक वैधता पर प्रश्नचिह्न लगना स्वाभाविक है। यह न केवल एक राज्य का संकट है, बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए चेतावनी है कि लोकतंत्र की रीढ़ की रक्षा अब प्राथमिकता बननी चाहिए। इस संदर्भ में, चुनाव आयोग द्वारा बिहार में चलाया जा रहा स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन एक महत्वपूर्ण और समयोचित हस्तक्षेप है। इस पहल को केवल आँकड़ों की समीक्षा भर न मानकर, एक लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व की पूर्ति के रूप में देखा जाना चाहिए। आयोग को चाहिए कि वह इस प्रक्रिया को और व्यापक बनाए, तकनीकी और विधिक उपायों से इसे मजबूत करे और राज्य सरकारों के सहयोग से हर मतदाता सूची को अधिक पारदर्शी, त्रुटिरहित और विश्वसनीय बनाए। बिहार से उठी यह आवाज़ देशभर में मतदाता सूची की शुचिता और पारदर्शिता की माँग को नई ताक़त देती है, क्योंकि अगर मतदाता ही नकली हो गया, तो फिर लोकतंत्र असली कैसे रह पाएगा?

पर्यावरण संरक्षण से जुड़ा पर्व

हरियाली अमावस्या

श्रीराम माहेश्वरी
लेखक साहित्यकार हैं।

हरियाली अमावस्या पर्व पर्यावरण संरक्षण की भावना से जुड़ा है। भारतीय संस्कृति में हरियाली अमावस्या पर्व का विशेष महत्व है। श्रावण मास में हरियाली अमावस्या के दिन भक्तगण पीपल वृक्ष की पूजा करते हैं। पीपल की पूजा के साथ भगवान श्री शिव जी का अभिषेक पूजा और माता पार्वती की पूजा करते हैं। इस दिन वृक्षारोपण करने वृक्षों का संरक्षण करने का श्रद्धालु संकल्प लेते हैं।

हरियाली अमावस्या व्रत के दिन श्रद्धालु कथा का वाचन करते और सुनते हैं। मान्यता है कि शिव पार्वती जी कथा सुनने से संकटों का निवारण होता है और मनोकामना पूर्ण होती है। इस दिन महिलाएं व्रत रखती हैं और सुहाग का सामान आपस में वितरित करती हैं। सुबह शाम पीपल पेड़ के नीचे दीपक जलाती हैं। भारत के अनेक राज्यों में यह पर्व बड़े उत्साह और उमंग से मनाया जाता है।

हरियाली अमावस्या व्रत कथा- एक समय की बात है। एक राजा महल में पुत्रवधूसहित परिवार के साथ सुखपूर्वक रहता था। उसकी पुत्रवधू ने एक दिन रसोई में मिठाई देखी तो वह सारी मिठाई खा गई। जब उससे पूछा गया कि मिठाई कहां गई तो उसने कहा सारी मिठाई चूहे खा गए। पुत्रवधू की बात सुनकर चूहे ने क्रोध किया और इस गलत आरोप का उसने बदला लेने का सोचा। कुछ दिन बाद महल में मेहमान आए। इस दिन चूहे ने बहू की साड़ी चुराई और उसे अतिथि के कमरे में जाकर रख दी। सुबह सेवकों ने साड़ी को अतिथि के कमरे में देखा तो बहू के चरित्र पर बातें करने लगे। यह बात राजा ने सुनी तो उसने अपनी पुत्रवधू के चरित्र पर संदेह करते हुए उसे महल से निकाल दिया। महल से निकलकर बहू एक झोपड़ी में रहने लगी और नियमित रूप से पीपल के वृक्ष के नीचे दीपक जलाने लगी। साथ ही वह पूजा करके गुड़धानी का भोगलगाकर लोगों में प्रसाद वितरित करने लगी।

एक दिन राजा उस पीपल के पेड़ के पास से गुजरे। उन्होंने देखा कि पेड़ के पास रोशनी जगमगा रही है। इस पर राजा को आश्चर्य हुआ। उन्होंने अपने सैनिकों से इस रोशनी का रहस्य पता लगाने के लिए कहा। सैनिक पेड़ के पास गए। वहां उन्होंने देखा कि दीपक आपस में बात कर रहे थे। एक दीपक बोला मैं राजा के महल से हूं। महल से निकाले जाने के बाद राजा की पुत्रवधू रोज मेरी पूजा करती है और मुझे प्रज्वलित करती है। अन्य दीपक ने पूछा कि राजाकी बहू को महल से क्यों निकाला गया। उसने बताया की एक दिन बहू ने मिठाई खाकर चूहे का झूठा नाम लगा दिया था। इससे नाराज चूहे ने राजा की बहू से बदला लेने के लिए उसकी साड़ी चुराकर अतिथि के कमरे में रख दी थी। यह देखकर राजा ने उसे महल से निकाल दिया। सैनिकों ने राजा को पूरी कहानी सुनाई। यह सुनकर राजा ने अपनी गलती मानी और अपनी पुत्रवधू को महल में वापस बुला लिया।

इस प्रकार पीपल की पेड़ की नियमित पूजा करने का फल राजा की बहू को मिलाऔर वह अपना सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगी। कथा से हमें शिक्षा मिलती है कि हमें झूठ नहीं बोलना चाहिए निराधार अफवाह पर विश्वास कर जल्दी निर्णय नहीं लेना चाहिए। पेड़ों और जीव जंतुओं का संरक्षण करना चाहिए। पेड़ लगाने और उनका संरक्षण करने से हरियाली बढ़ती है। इससे मानव जीवन सुखद और स्वास्थ्यप्रद रहता है। लोगों के बीच सामाजिक समरसता बढ़ती है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

चेनू उर्फ भईया उर्फ भगवान

व्यंग्य

जवाहर चौधरी

अपने 'भईया-लोग' भगवान तो नहीं पर भगवान से कम भी नहीं हैं। लोग कहते हैं कि देश भगवान भरोसे चल रहा है तो अनुभवीजन बिना देर किये इसकी गहराई को समझ जाते हैं। मानो तो भगवान जी हैं, न मानों तो जोखिम आपका। सितारे बुलंद हों तो पुलिस जनसेवक है, न हों तो अंतिम सत्य राम है। समझदार को इशारा काफी होता है। तो बोलो शांति ? शांति ? शांति ?

बराबरी, स्वतंत्रता और सहयोग के इरादे से शुरू हुए लोकतंत्र में भईया भगवान हो गए यह बिकास नहीं महाविकास है। चैनसिंग उर्फ चेनू उर्फ भईया उर्फ भगवान आज टीवी मीडिया से मुखातिब हैं। कल विपक्ष के एक नेता मीडिया के सामने कह गए थे कि कानून और व्यवस्था की स्थिति खराब है और सरकार गुंडों को नियंत्रित नहीं कर पा रही है। जो जेल में सुरक्षित रहता है वो अस्पताल में मारा जाता है। असामाजिक तत्वों ने आमजन का भी जीना मुश्किल कर दिया है। इसी के जवाब में आज मंच पर फैले चेनू अपनी बात रख रहे हैं।

'एक बात समझ लो आप लोग अच्छी तरह से कि जिसे ये लोग गुंडा-गुंडा कह रहे हैं उनकी सोच पुरानी है। अब गुंडा-कर्म एक कमाऊ इंडस्ट्री है देश की। गुंडे जी उच्चकोटी की समाज सेवा में लिप्त हैं। G-इंडस्ट्री जहाँ जहाँ काम कर रही है वहाँ हमारे खिलाफ कोई एफआईआर नहीं है। सरकार कोई भी हो त-इंडस्ट्री सेवा कर डालने से पीछे नहीं हटती है। काम जिम्मेदारी से करते हैं, इसलिए हमारा नाम है।'

एंकर को अपनी जिम्मेदारी और खतरे पता है, बोली - 'सर दरअसल G-इंडस्ट्री के बारे में जनता को पता नहीं है ! उनकी जानकारी में आप इजाफा कर सकते हैं।'

'G-इंडस्ट्री समाज में एक सक्रिय, आत्मनिर्भर और हाई टर्नओवर कंपनी है। विपक्ष ने इसे असामाजिक तत्व कह कर अपमानित किया है। सही समय आने पर G-इंडस्ट्री इसका हिन्दी में जवाब देगी। उन्हें यह देखना चाहिए कि देश बेरोजगारी के संकट से गुजर रहा है। एक हमारी इंडस्ट्री ही है जिसने युवा हाथों को काम दिया है। क्या ये देश सेवा नहीं है ! मैं दावे के साथ कह रहा हूँ कि है। यहाँ कोई असहमत हो तो सामने आ कर अपनी बात रखे।' चेनू ने हॉल में नजर दौड़ते हुए कहा।

एंकर को कोई बात नहीं सूझती है। ऐसे मौकों पर मुस्कराहट काम में लेती हैं, -'दर्शकों को एक बार फिर बता दें कि आज हमारे स्टूडियो में खासतौर से G-इंडस्ट्री के सीईओ चेनू सर मेहमान हैं और मजबूती के साथ अपना पक्ष रख रहे हैं। ... तो सर आपने बताया कि आपकी इंडस्ट्री इसलिए फलफूल रही है क्योंकि देश में बेरोजगारी है।'

'गरीबी बेरोजगारी पॉलिटिकाल इंडस्ट्री का रॉ-मटेरियाल है। चुनाव में यूज करने के बाद बाकी टाइम में ये लोग हमारे काम आते हैं। मतलब गरीब सेकंड हेंड, बेरोजगार सेकंड हेंड हम वापर लेते हैं। हम चाहते हैं इनकी मदद हो, सबका कल्याण हो। नेता भी खुश रहें, धरम-धंधे वाले भी, साथ में गरीब और बेरोजगार भी। अपने अपने पेट के हिसाब से सबको भरावन मिले। इसमें कोई बुराई है क्या ?'

'बुराई तो नहीं है सर, लेकिन आप दूसरे अच्छे काम भी तो करवा सकते हैं इनसे।'

'नजरिया बादलों आप लोग। अच्छे काम ही करते हैं। हमारी वजह से ही पुलिस को रोजगार मिला हुआ है, जेलों का कारोबार चलता है, अस्पतालों को हड्डियों के ज्यादातर केस कौन देता है, चाकू कट्टे की फेक्टरी में रोजगार किसकी वजह से है ... और बताओ जरा सरकारें कौन बनवाता है ?'

'सर ऐसी क्या बात है। अब तो सरकार हम भी बनवाते हैं।' एंकर ने मुस्कराते हुए कहा।

'गलतफहमी कोई भी पाल सकता है।' ceo बोले।

स्मृति शेष

डॉ. मनीष जैसल

लेखक रंगमंच और सिनेमा अध्ययन के अध्येता हैं।

नेपथ्य के नायक थे रतन थियाम

रतन थियाम का जन्म 1948 में मणिपुर के इम्फाल में हुआ। उनके पिता एक कवि और धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे, जिनसे उन्होंने संस्कृति और साहित्य का संस्कार पाया। प्रारंभिक शिक्षा मणिपुर में ही हुई, लेकिन रंगमंच की गूंज उन्हें नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) दिल्ली तक खींच लाई। वे 1971 में एनएसडी से स्नातक हुए और वहां उन्होंने रंगमंच की तकनीक, विचार और अभ्यास को नज़दीक से समझा। उनके गुरु इब्राहिम अल्काज़ी थे जिनसे उन्होंने अनुशासन, दृश्य-रचना और भारतीय रंगपरंपरा का गहरा अध्ययन किया। लेकिन रतन थियाम ने कभी रंगमंच को सिर्फ़ पश्चिमी ढांचे में नहीं देखा। उन्होंने भारतीय परंपरा, मिथक, दर्शन और पूर्वोत्तर की लोक-संवेदना को मिलाकर एक अनूठा रंगभाषा विकसित की जिसे 'थियम स्टाइल' के नाम से भी जाना जाता है। एनएसडी से निकलने के बाद उन्होंने मणिपुर लौटकर चौंगथांग पैरेडाइज थिएटर की स्थापना की, जिसे बाद में श्री जय थियेटर ग्रुप के नाम से जाना गया। उन्होंने अपनी नाट्य-यात्रा की शुरुआत उरूबंगो (यूरेपिडीस का ग्रीक नाटक) से की, जिसमें उन्होंने भारतीय लोकनाट्य और संगीत की आत्मा फूंकी।

रंगमंच ने अपना एक महान ऋषि खो दिया। एक ऐसा व्यक्तित्व, जिसने नाटक को केवल मंचन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे साधना का रूप दिया। रतन थियम नहीं रहे, यह वाक्य मात्र एक सूचना नहीं, बल्कि भारतीय रंगमंच के लिए एक गहरी, चुभती हुई शून्यता का एहसास है।

मणिपुर से उठकर अंतरराष्ट्रीय रंगमंच की ऊँचाइयों तक पहुँचने वाले रतन थियम का जीवन एक साधना की कथा है। वे न केवल रंगकर्मी थे, बल्कि एक विचारक, दार्शनिक और सौंदर्यशास्त्र के गहरे अध्येता भी थे। उनका रंगमंच किसी मनोरंजन की चीज़ नहीं, बल्कि आत्मा को झकझोरने वाला अनुभव था।

रतन थियाम का जन्म 1948 में मणिपुर के इम्फाल में हुआ। उनके पिता एक कवि और धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे, जिनसे उन्होंने संस्कृति और साहित्य का संस्कार पाया। प्रारंभिक शिक्षा मणिपुर में ही हुई, लेकिन रंगमंच की गूंज उन्हें नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा (एनएसडी) दिल्ली तक खींच लाई। वे 1971 में एनएसडी से स्नातक हुए और वहां उन्होंने रंगमंच की तकनीक, विचार और अभ्यास को नज़दीक से समझा। उनके गुरु इब्राहिम अल्काज़ी थे जिनसे उन्होंने अनुशासन, दृश्य-रचना और भारतीय रंगपरंपरा का गहरा अध्ययन किया। लेकिन रतन थियाम ने कभी रंगमंच को सिर्फ़ पश्चिमी ढांचे में नहीं देखा। उन्होंने भारतीय परंपरा, मिथक, दर्शन और पूर्वोत्तर की लोक-संवेदना को मिलाकर एक अनूठा रंगभाषा विकसित की जिसे 'थियम स्टाइल' के नाम से भी जाना जाता है।

एनएसडी से निकलने के बाद उन्होंने मणिपुर लौटकर चौंगथांग पैरेडाइज थिएटर की स्थापना की, जिसे बाद में श्री जय थियेटर ग्रुप के नाम से जाना गया। उन्होंने अपनी नाट्य-यात्रा की शुरुआत उरूबंगो (यूरेपिडीस का ग्रीक नाटक) से की, जिसमें उन्होंने भारतीय लोकनाट्य और संगीत की आत्मा फूंकी।

उनके प्रसिद्ध नाटकों में चक्रव्यूह, अंधा युग, उरूबंगो, उत्तर प्रियदर्शी, वेनिस का व्यापारी और हाल ही में कनुप्रिया शामिल हैं। इन नाटकों में एक चीज़ सामान्य थी – उनकी दृश्य संरचना, संगीत संयोजन और दार्शनिक गहराई। वे मंच को एक सजीव चित्र बना देते थे। उनकी निर्देशकीय दृष्टि में शब्द, भाव, शरीर और संगीत का एक विलक्षण समन्वय दिखाई देता था।

पिछले साल मैंने उनके साथ एक लंबी बातचीत की थी। वह साक्षात्कार आज भी मेरे यूट्यूब चैनल पर उपलब्ध है। अपने पत्रकारिता के जीवन में अनेक साक्षात्कार किए, लेकिन रतन थियम के साथ वह संवाद मेरे लिए एक रंगऋषि से मिलने जैसा था। उनका विनम्र स्वभाव, गहरी दृष्टि और थिएटर को लेकर अगाध समर्पण ने मुझे भीतर तक स्पर्श किया।

उन्होंने कहा था, 'थिएटर कोई तात्कालिक चीज़ नहीं है, यह चित्त की यात्रा है। यह हमें भीतर से बेहतर इंसान बनाता है।' वे मानते थे कि रंगमंच समाज का दर्पण नहीं, आत्मा है जो हमें समय-समय पर झकझोरता है। 'मैं मंच पर सिर्फ कथा नहीं लाता, मैं उसमें अपने देश का अनकहा इतिहास, लोगों का छूटा हुआ दर्द और अपनी आत्मा की गूंज रखता हूँ।'

उन्होंने मणिपुरी नृत्य, संगीत, वेशभूषा और लोककथाओं को आधुनिक रंगमंच की संरचना में इस तरह पिरोया कि हर प्रस्तुति सांस्कृतिक अनुभव बन गई। उनकी दृष्टि में पूर्वोत्तर सिर्फ़ एक भौगोलिक हिस्सा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा थी। वे मानते थे कि जब तक हम इस हिस्से को समझ नहीं पाएंगे, तब तक भारतीयता अधूरी रहेगी।

2024 में आईटीएम विवि ग्वालियर में उनके निर्देशन में कनुप्रिया का मंचन हुआ। यह भारत में इस म्यूजिकल प्ले पहला प्रीमियर था। धर्मवीर भारती की कविता पर आधारित यह नाटक, स्त्री दृष्टिकोण से महाभारत की पुर्नव्याख्या है। इसमें कृष्ण के प्रति द्रौपदी की अदृश्य पीड़ा और प्रेम की गूंज है। रतन थियम ने इस क्लासिक को मंच पर इस तरह प्रस्तुत किया कि दर्शकों की आँखें नम हो गईं।

उस मंचन के बाद उन्होंने मुझसे कहा था, 'मैं अब बहुत कम नाटक कर रहा हूँ। लेकिन 'कनुप्रिया' मेरे लिए एक प्रार्थना है, जिसे मंच पर बोलना ज़रूरी था।' रतन थियम के नाटकों में राजनीति केवल सत्ता की कहानी नहीं होती थी, वह व्यक्ति के भीतर और समाज के चारों ओर फैली हिंसा, अन्याय और

बौद्धिक ठहराव की कथा बन जाती थी।

अंधा युग की प्रस्तुति हो या चक्रव्यूह, उनका मंचन युद्ध के शोर के भीतर मनुष्य की चेतना की तलाश करता था। उनके लिए रंगमंच 'शो' नहीं, 'शोध' था। उन्होंने राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में निर्देशक और अध्यक्ष जैसे पदों पर रहते हुए कला शिक्षा की गुणवत्ता और विविधता को नया आयाम दिया। वहीं वे संगीत नाटक अकादमी के उपाध्यक्ष भी रहे। इन संस्थानों के माध्यम से उन्होंने युवा रंगकर्मियों को विचार, अनुशासन और संवेदना का पाठ पढ़ाया।

आपके नाटकों की शैली उन्हें भारतीय रंगमंच के सबसे विशिष्ट और मौलिक निर्देशकों में स्थापित करती है। उनके नाट्य प्रस्तुतियों में मणिपुरी नृत्य, शास्त्रीय संगीत, नेपथ्य का सूक्ष्म उपयोग, और प्रतीकों की गहराई अद्भुत समरसता में मिलते हैं। वे संवाद की अपेक्षा मौन, मुद्रा और प्रकाश के माध्यम से अधिक प्रभाव उत्पन्न करते हैं। उनकी शैली में दृश्य संयोजन इतना सशक्त होता है कि हर फ्रेम एक चित्र जैसा प्रतीत होता है। रंगों का मनोवैज्ञानिक उपयोग, देहभाषा की लयात्मकता और मंच पर धार्मिक-सांस्कृतिक प्रतीकों की पुर्नव्याख्या उनके नाटकों को दार्शनिक ऊँचाई प्रदान करती है। उनके लिए रंगमंच केवल कथा नहीं, एक आध्यात्मिक और बौद्धिक अन्वेषण है जहाँ दर्शक भी पात्रों की पीड़ा, प्रेम और प्रश्नों का हिस्सा बन जाते हैं। भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री (1989), संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (1987), और संगीत नाटक अकादमी फैलोशिप (2012) से सम्मानित किया। एडिनबरा फ्रिंज फेस्टिवल में 'चक्रव्यूह' को मिली अंतरराष्ट्रीय मान्यता ने उन्हें विश्व रंगमंच के मानचित्र पर स्थापित किया। लेकिन उनके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार वह गूंजता हुआ मौन था, जो प्रस्तुति के अंत में दर्शकों की आँखों से बहता था।

आज जब वे नहीं हैं, तब यह सवाल बार-बार मन में उठता है क्या कोई और मंच को वैसा ही आध्यात्मिक अनुभव बना सकेगा जैसा रतन थियाम बनाते थे? क्या कोई और कलाकार युद्ध और प्रेम, राजनीति और करुणा, स्त्री और समाज, परंपरा और आधुनिकता के बीच संवाद को इतनी संवेदनशीलता से प्रस्तुत कर पाएगा?

उनका जाना केवल एक कलाकार का जाना नहीं है, यह भारतीय आत्मा की संवेदना के एक अध्याय का पटाक्षेप है। उन्होंने हमें सिखाया कि मंच केवल प्रकाश, संवाद और अभिनय का स्थल नहीं यह आत्मा की सबसे ऊँची पुकार का केंद्र है। वे मंच से कभी अलविदा नहीं हुए वे हर उस मंचन में जीवित हैं, जहाँ विचार, संवेग और सौंदर्य मिलकर सत्य को जन्म देते हैं।

सामयिक

रागिनी श्रीवास्तव

लेखक कनाडा निवासी साहित्यकार हैं।

युद्ध का बदलता स्वरुप और मोदी का ब्लू रिवोल्यूशन

1971 के भारत पाक युद्ध तथा विश्व के अन्य युद्धों के भयावह परिणाम देखकर इस विषय पर सोचने के लिए विवश हुए और तभी डार्विन के विकासवाद और हरबर्ट स्पेंसर के वाक्यांश survival of the fittest (स्वस्थतम की उत्तरजीविता) का ध्यान आया अर्थात जो शक्तिशाली होगा वही जीवित रहेगा । राजनीति के साथ व्यापारिक दुनिया में, सर्वावल ऑफ फिटेस्ट, योग्यतम की उत्तरजीविता का सिद्धांत की विशेष भूमिका है। संस्कृत में इसी को दूसरे प्रकार से यों कहा गया है- 'दैवो दुर्बलघातकः' (भगवान भी दुर्बल को ही मारते हैं।)अब युद्ध का स्वरुप बदलता जा रहा है पहले युद्ध का एक अनुशासन होता था महाभारत काल में भीष्म पितामह सूर्योदय के समय युद्ध के आरम्भ की घोषणा करते थे और सूर्यास्त पर युद्ध समाप्ति की .इसी समय के बीच में युद्ध लड़ा जाता था,परन्तु अब आधुनिक तकनीक के साथ वायुमंडलीय हमले अकस्मात् किये जाते है जो बहुत अधिक घातक होते है। इसी प्रकार युद्ध में प्रयुक्त हथियारों में भी समय के साथ बहुत परिवर्तन हुआ है।

युद्ध का इतिहास मानव सभ्यता के इतिहास जितना ही पुराना है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक, युद्धों ने मानव इतिहास को आकार दिया है, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं को बदल दिया है, और लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। कुछ प्रमुख युद्धों में द्वितीय विश्व युद्ध, पहला विश्व युद्ध, और विभिन्न देशों के बीच हुए गृह युद्ध शामिल हैं।

देखा जाए तो हम लोग बचपन से ही युद्ध शब्द से परिचित है 1962 में भारत चीन युद्ध के साथ इस शब्द का परिचय हुआ बहुत छोटे होने के कारण इसका व्यापक अर्थ नहीं समझ पाए थे। फिर 1965 में भारत पाक युद्ध हुआ उस समय भी इसके कारण स्पष्ट नहीं हुए परन्तु मिडिल स्कूल तक आते आते पानीपत की लड़ाई,प्लासी की लड़ाई, हल्दी घाटी युद्ध आदि के बारे में जानकारी मिली,और यह भी समझ में आया की युद्ध का मुख्य कारण राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, या धार्मिक होता है। राजनीतिक कारणों में भूमि, सीमा, सत्ता की लड़ाई, या राष्ट्रीय गौरव शामिल हैं। सामाजिक कारणों में जाति, धर्म, न्याय, और समानता की लड़ाई शामिल हो सकती है। आर्थिक कारणों में वस्तुओं और संसाधनों की बराबरी के लिए, व्यापारिक अनियमितताओं, या आर्थिक अन्याय के खिलाफ लड़ाई शामिल होती है । वर्तमान समय में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा बढ़ाए गए टैक्स को टेरिफ वॉर कहा गया।

1971 के भारत पाक युद्ध तथा विश्व के अन्य युद्धों के भयावह परिणाम देखकर इस विषय पर सोचने के लिए विवश हुए और तभी डार्विन के विकासवाद और हरबर्ट स्पेंसर के वाक्यांश survival of the fittest (स्वस्थतम की उत्तरजीविता) का ध्यान आया अर्थात् जो शक्तिशाली होगा वही जीवित रहेगा । राजनीति के साथ व्यापारिक दुनिया में, सर्वावल ऑफ फिटेस्ट, योग्यतम की उत्तरजीविता का सिद्धांत की विशेष भूमिका है। संस्कृत में इसी को दूसरे प्रकार से यों कहा गया है- दैवो दुर्बलघातकः (भगवान भी दुर्बल को ही मारते हैं।)

अब युद्ध का स्वरुप बदलता जा रहा है पहले युद्ध का एक अनुशासन होता था महाभारत काल में भीष्म पितामह

सूर्योदय के समय युद्ध के आरम्भ की घोषणा करते थे और सूर्यास्त पर युद्ध समाप्ति की। इसी समय के बीच में युद्ध लड़ा जाता था, परन्तु अब आधुनिक तकनीक के साथ वायुमंडलीय हमले अकस्मात् किये जाते है जो बहुत अधिक घातक होते है। इसी प्रकार युद्ध में प्रयुक्त हथियारों में भी समय के साथ बहुत परिवर्तन हुआ है।

हिंदू धर्म में अस्त्र- शस्त्र जैसे धनुष -बाण, तलवार, कटार, भाले, गदा, ढाल के अतिरिक्त दैविक अस्त्र जैसे इन्द्र के अस्त्र- शस्त्र, त्रिशूल, सुदर्शन चक्र, पिनाक आदि हैं। अनेक अस्त्र ईश्वरों द्वारा देवताओं, राक्षसों या मनुष्यों को वरदान स्वरूप दिए जाते थे जैसे, ब्रह्मास्त्र, आग्नेयास्त्र।

दुनिया मे चाणक्य को बड़ा कूटनीतिज्ञ माना जाता है वे स्वयं एक बड़े अर्थशास्त्री थे इसलिए युद्ध को जितना हो सके avoid करते थे। इनकी एक स्पष्ट नीति थी युद्ध तब तक न किया जाए जब तक एक भी रास्ता खुला हो इसके साथ ही ये बिना हथियार उठाये परिस्थितियों को अपनी तरफ करने की क्षमता रखते थे। युद्ध मे कोई जीते - कोई हारे, पर दोनों पक्ष कमजोर हो जाते हैं। इसलिए ये लोग दुश्मन को मारने के लिए युद्ध के अलावा कुछ अन्य तरीके अपनाते थे।

जिनमें विष कन्या के बारे में विस्तृत प्रमाण है, विषकन्या वे कन्याएं होती थी जिन्हें बचपन से ही विष की थोड़ी थोड़ी मात्रा देकर उन्हें उस विष के प्रति आदि बना दिया जाता था ये कन्याएं अत्यधिक रूपवान होती थी तथा उन्हें नृत्य गान की भी शिक्षा भी दी जाती थी तत्पश्चात वे राज्य के गुप्तचर की भूमिका निभाती थी तथा जिस राजा या अन्य प्रशासनिक अधिकारी से गुप्त रहस्य जानने होते उनके पास इन्हें छल से भेज दिया जाता था और वे अपने वाक्चातुर्य एवं भाव भंगिमा के द्वारा उनसे गुप्त जानकारी हासिल कर अपने विष के प्रभाव से आवश्यकता उनका अंत भी कर सकती थी।

युद्ध के हथियारों का विकास भी एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो मानव इतिहास के साथ-साथ विकसित हुई है। प्रागैतिहासिक काल में, मनुष्य ने सरल पत्थर के औजारों और भालों का उपयोग किया, फिर धनुष और बाण, बंदूकें, टैंक,पैटर्न टैंक गोला,बारूद आदि और बाद में आग्नेयास्त्रों का विकास हुआ।

20वीं शताब्दी में, परमाणु हथियारों और मिसाइलों जैसे विनाशकारी हथियारों का उदय हुआ, वर्तमान में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और ड्रोन जैसी नई तकनीकों का उपयोग युद्ध के हथियारों में किया जा रहा है. एक राष्ट्र दूसरे को परमाणु हथियारों के प्रयोग को लेकर डरा धमका रहे है ऐसे में एल्बर्ट आइंस्टीन का एक वाक्य याद आता है, ''मैं नहीं जानता कि तीसरा विश्व युद्ध किन हथियारों से लड़ा जाएगा, लेकिन चौथा विश्व युद्ध छड़ियों और पत्थरों से लड़ा जाएगा' अल्बर्ट आइंस्टीन का यह उद्धरण बताता है कि एक संभावित तीसरा विश्व युद्ध इतना विनाशकारी होगा कि वह सभ्यता के अधिकांश हिस्से को नष्ट कर सकता है।''

अर्थात्, जीवित बचे लोग प्राचीन औजारों का उपयोग करके जीवित रहने के लिए मजबूर होंगे, जिससे मानवता प्रागैतिहासिक अवस्था में वापस चली जाएगी। यह उद्धरण मानवता के आत्म-विनाश की संभावना को उजागर करता है, खासकर परमाणु हथियारों के आगमन के साथ। इसका अर्थ है कि तीसरे विश्व युद्ध के विनाश से सीखे गए सबक इतने गहरे होंगे कि भविष्य के संघर्ष बहुत कम विनाशकारी साधनों से लड़े जाएंगे, शायद संसाधनों की कमी या संगठित समाज के पतन के कारण। जबकि आइंस्टीन ने शायद इन शब्दों को स्पष्ट रूप से नहीं कहा हो, लेकिन यह उनके युद्ध के खतरों और विनाशकारी परिणामों के बारे में ज्ञात विचारों को दर्शाता है।

विश्व की ताजा स्थिति और युद्ध के आसार को देखते हुए तीसरे विश्व युद्ध की कल्पना मात्रा से सिहर जाते है। चारों ओर युद्ध का वातावरण है चाहे रूस और यूक्रेन हो या इज़राइल और ईरान हो या फिर भारत और पाक, या विश्व का कोई अन्य देश। आसमान में बारूदों के विस्फोटों के काले धुए के बादल छाये है धन,जान की हानि हो रही है। पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है। काश ! सम्राट अशोक की तरह किसी राष्ट्राध्यक्ष का हृदय परिवर्तन हो सकता?

युद्ध का अंत कई तरीकों से हो सकता है, जैसे कि युद्धविराम, आत्मसमर्पण, या शांति संधि के माध्यम से । लेकिन युद्ध का अंत हमेशा स्पष्ट नहीं होता है, और यह एक जटिल प्रक्रिया हो सकती है परन्तु प्रयास और समझदारी से सब संभव है। जैसा कि हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ब्लू रिवोल्यूशन की जरूरत बताई है। ब्लू रिवोल्यूशन अर्थात् धुए और प्रदुषण से मुक्त धरती और नीला आसमान तथा स्वच्छ नीला समंदर जिसमें मानव जाति एवं जलीय जीव स्वच्छंद स्थाई रूप से रह सके और उनके कल्याण और विकास की चर्चा हो।

श्रद्धांजलि

रतन थियम यानी अंतिम सांस तक रंगकर्म

थियेटर आफ़ द रूट्स के पर्याय रंगकर्मी रतन थियम का जाना भारतीय रंगमंच की किताब के एक अध्याय के लुप्त होने जैसा है। भास, जो कि कालिदास से भी पहले हुए, उनके नाटकों के मंचन के लिए प्रसिद्धत्रयी में एक नाम रतन थियम का रहा। शेष दो थे कावलम नारायण पणिक्कर और हबीब तनवीर।

रतन थियम के परिचय में यह कहते हुए कि वे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के निदेशक और संगीत नाटक अकादमी की महत्वपूर्ण भूमिका में रहे, यह बताना ज्यादा जरूरी है कि वे उन रंगकर्मियों में से थे जो अपनी जन्मभूमि मणिपुर जाकर वापस अपनी जड़ों से जुड़े और आखरी सांस तक रंगकर्म के सिवा कुछ और नहीं किया, जैसे कि लोग सफल होने पर चलचित्र जगत का रुख कर जाते हैं।

थियम का परिवार चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रवर्तित गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के प्रति आस्थावान रहा। इसी का प्रचार राजा गरीब नवाज़ के बाद मणिपुर की गद्दी पर बैठे राजा भाग्यचंद्र के समय में मणिपुर में हुआ। ये कोई तीन सौ साल पुरानी बात हुई। थियम के जीवन के निर्माण का काल वह था जब वे चैतन्य महाप्रभु की जन्मस्थली नवद्वीप में रहे। पिता से उन्होंने कहा दिया था कि वहां एक अलग कमरा वे ले कर दे दें। उस एकांत कमरे में उन्होंने भारत और विश्व के साहित्य का लम्बे समय तक घनघोर अध्ययन किया।

वे मनमौजी थे। हवाई जहाज पर चढ़ने के लिए वे अपनी साइकिल बेच सकते थे। इम्फाल से सबसे नजदीकी हवाई अड्डे पर वे ऐसे ही गये। वे दिल्ली में सफल होने के बाद यह निर्णय भी ले सकते थे कि अब मणिपुर ही उनका अंतिम - अरण्य होगा। मणिपुर जाकर रतन थियम ने नये सिरे से वहां के पारंपरिक रंगमंच की युद्ध कला और असि- संचालन को सीखा। संस्कृत नाटकों में प्रयोग के साथ मणिपुर के रास को उन्होंने एक अभिनव सौंदर्य से मण्डित किया। उनके नाटक का आकर्षण ही कुछ ऐसा होता था कि कमलेशदत्त त्रिपाठी जैसे आचार्य उस अनुभव पर अलग से एक कविता लिखते हुए कह सकते थे कि थियम का नाटक देखना और देवालय की ओर जाना एक ही काम के दो स्वरूप हैं। रतन थियम रंगकर्म के वैश्विक मंच पर भारत की विशिष्ट पहचान थे। लगभग डेढ़ साल पहले ग्वालियर के कला समूह में जब वे अपनी रेपर्टरी के सदस्यों के साथ पधारे तब इन पंक्तियों के लेखक को उनकी प्रशस्ति में कुछ कहने का अवसर महाराज कुमार होजाइंगम्बा सिंह और माधवी सिंह जी ने दिया था। एक दुर्लभ पुस्तक 'थिएटर आफ़ द ईस्ट ' पर उन्होंने अपने हस्ताक्षर किए जो मेरे निजी संग्रह की एक निधि है। रतन थियम की स्मृति को प्रणाम।

(जयंत सिंह तोमर की फेसबुक वॉल से)

'द हंट' मस्ट वाच वेबसीरिज

समीक्षा

सुनील सक्सेना

'द हंट' राजीव गांधी की आत्मघाती हमले में हुई हत्या पर बनी वेबसीरिज है। दरअसल सत्य घटनाओं के बारे में दर्शक अमूमन पूरे घटनाक्रम से परिचित होते हैं । उसके आरंभ और अंत को वे पहले से ही जानते हैं । दर्शक के लिए सस्पेंस जैसी कोई बात बचती नहीं है । राजीव गांधी की हत्या कैसे हुई, उसमें किसका हाथ था, हत्या से जुड़े लोग पकड़े गए, उन्हें सजा हुई आदि-आदि के बारे में सभी जानते हैं । चुनांचे कोई भी महत्वपूर्ण घटना हो, पौराणिक या ऐतिहासिक विषय हो उसे लेकर फिल्म या वेबसीरिज बनाने में सबसे बड़ी चुनौती ये होती है कि दर्शक को पूरे समय कैसे बांधे रखा जाए ? उसे सिनेमा हॉल में या टीवी के सामाने तीन चार घंटे तक कैसे बिठाये रखा जाए । बताई जा रही कहानी के प्रति दर्शकों के आकर्षण को कैसे जिलाए रखा जाए ।

ऐसी विकट स्थिति में जब प्रोड्यूसर का करोड़ों रूपया लगा हो तो सारा दारोमदार निर्देशक के कंधों पर आजाता है कि वो किस तरह से जगजाहिर बात को अपने अंदाज में प्रस्तुत करता है । 'द हन्ट' में राजीव गांधी की हत्या के लिए बुने गए जाल, उससे जुड़े इनवेस्टीगेशन, को सिलसिलेवार पूरी शिद्दत के साथ बारीक खोजबीन करके रिक्रिऐट किया है, निर्देशक नागेश कुकनूर ने जो 'इकबाल' और डोर जैसी फिल्मों के लिए जाने जाते हैं । पटकथा कसी हुई और चुस्त है । कहीं कोई झोल नहीं है । इस वेबसीरिज की जान है इसकी कास्टिंग । एक-एक कलाकार के चयन पर बड़ी मेहनत की गई है ताकि वो निभाए जा रहे चरित्र में वास्तविक लगे। वेबसीरिज के अधिकतम सह-कलाकार साउथ के हैं जो छोटी-छोटी लेकिन अहम भूमिकाओं में अपने चरित्र के अनुसार एकदम फिट बैठते हैं । मुख्य आरोपी शिवरासन की भूमिका में केरल के अभिनेता शफीक मुस्तफा हैं। शफीक का अभिनय, उनका मेकअप आलादर्जे का है । आम कदकाठी वाले शफीक मुस्तफा अपने सशक्त अभिनय से शिवरासन के खौफ को जीवंत कर देते हैं ।

मेकअप इस वेबसीरिज का उल्लेखनीय और मजबूत पक्ष है । फिर चाहे शिवरासन की नकली आंख हो या राजीव गांधी की हत्या के समय प्रधानमंत्री रहे चंद्रशेखर के रोल में बॉलीवुड एक्टर विश्वजीत प्रधान का कायाकल्प हो । विश्वजीत प्रधान का मेकअप, गेटअप तो इतना जबरदस्त है कि टीवी स्क्रीन पर उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि चंद्रशेखर जीवित हो गए हैं ।

सात एपिसोड में फैली राजीव गांधी हत्याकांड की पूरी कहानी का फिल्मांकन कमाल का है । जिन लोकेशन पर इस वेबसीरिज को शूट किया है, सिनेमेटोग्राफर संगम गिरी की फोटोग्राफी इसे विश्वसनीय बना देती है । हमें लगता है फलां जगह पर इसी तरह से वारदात हुई होगी । दर्शक बिना अगर-मगर के कथानक से कनेक्ट हो जाता है । अमित सयाल, साहिल वेद जैसे उम्दा कलाकारों से सजी द हंट आपको 'बिंज वॉचिंग' के लिए मजबूर कर देगी । बिना किसी प्रोपेगंडा के पूरी ईमानदारी से नागेश कुकनूर ने इसे दर्शकों के सामने परोसा है । सोनी लिव पर इस वेबसीरिज को एक बार जरूर देखें । आप निराश नहीं होंगे ।

10 अनुबंधित डॉक्टरों में से सिर्फ 5 ने ही ली ज्वॉइनिंग, डॉक्टरों की कमी से मरीज हो रहे परेशान

जिला अस्पताल में डॉक्टरों के 60 पद स्वीकृत, इसमें भी 35 पद रिक्त

बैतूल। जिला अस्पताल में डॉक्टरों की कमी के कारण स्वास्थ्य सुविधाएं संकट से गुजर रही हैं। एक ओर मरीजों की संख्या लगातार बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर डॉक्टरों की अनुपलब्धता के चलते इलाज की स्थिति चिंताजनक हो गई है। स्थिति यह है कि ओपीडी में प्रतिदिन 600 से अधिक मरीज इलाज के लिए पहुंच रहे हैं। लेकिन डॉक्टरों की कमी की वजह से मरीजों को परेशान होना पड़ रहा है। हालात यह है कि विशेषज्ञ डॉक्टर की कमी और संसाधनों के अभाव में गंभीर मरीजों को प्राथमिक इलाज देकर रेफर कर दिया जाता है। इधर ओपीडी के भी हालात ठीक नहीं है। यहां भी मरीजों की लंबी-लंबी कतारे लगी रहती है। कई बार इलाज के लिए नंबर नहीं आने पर मरीजों को निजी अस्पताल जाना पड़ रहा है। यहां बता दें कि आदिवासी बाहुल्य जिला बैतूल में स्वास्थ्य सेवाओं को दुरूस्त करने के लिए सरकार करोड़ों रुपए खर्च कर रही है, पर यह खर्च बिल्डिंग बनाने में किया जा रहा है, जबकि डॉक्टरों की कमी से जिला अस्पताल की व्यवस्थाएं बिगड़ रही है। हाल ही में हुए चिकित्सकों के तबादले में कोई चिकित्सक बैतूल तो नहीं आए, लेकिन जिला अस्पताल में पदस्थ छह चिकित्सकों के तबादले हो गए हैं। जिसके बाद जिला अस्पताल में डॉक्टरों के रिक्त पदो की संख्या 35 पर पहुंच गई है।

10 अनुबंधित डॉक्टरों की नियुक्ति, 5 की ज्वाइनिंग: जिला अस्पताल में डॉक्टरों के 60 पद स्वीकृत हैं। जिसमें से 35 पद रिक्त है। जानकार बताते है कि जिला अस्पताल में प्रथम श्रेणी डॉक्टरों के 38 पद स्वीकृत है, जिसमें से वर्तमान समय 12 डॉक्टर कार्यरत है, वहीं 26 पद रिक्त पड़े है। जबकि द्वितीय श्रेणी डॉक्टरों के 22 पद स्वीकृत है। इसमें से 13 कार्यरत है ओर 9 पद रिक्त पड़े है। ऊपर से 3 प्रथम श्रेणी और 3 द्वितीय श्रेणी डॉक्टरों का स्थानांतरण हो चुका है। लेकिन एक भी डॉक्टर जिला अस्पताल को नहीं मिला। जिला अस्पताल में डॉक्टरों की कमी को दूर करने के लिए 10 अनुबंधित डॉक्टरों की नियुक्ति की गई है, लेकिन इसमें से मात्र 5 डॉक्टरों ने ही ज्वाइनिंग ली है। डॉक्टरों द्वारा ज्वाइन नहीं करने के कारण अस्पताल में आने वाले मरीज परेशान होते हैं।

बरसात में बढ़ जाती है बीमारियों की आशंकाएं

बरसात के मौसम में बीमारियों का ग्राफ तेजी से ऊपर चढ़ता है। डेंगू, मलेरिया, वायरल फीवर जैसी मौसमी बीमारियों के साथ-साथ नाक, कान, गला और स्किन से संबंधित संक्रमणों में भी इजाफा होता है। वहीं दूसरी ओर फिसलन और कीचड़ के कारण हड्डी टूटने और चोट लगने की घटनाएं भी होती है। अभी जिला अस्पताल में ओपीडी करीब 600 से ऊपर रोजाना रहती है। यहां जिला मुख्यालय के अलावा बड़ी संख्या में ग्रामीण क्षेत्र के मरीज भी अपना उपचार करवाने पहुंचते है। लेकिन अस्पताल में आवश्यकता अनुरूप डॉक्टर की उपलब्धता नहीं होने से मरीजों को परेशान होना पड़ता है और अक्सर अस्पताल की व्यवस्थाएं बिगड़ती है, वह अलग है।

डॉक्टरों के यह पद पड़े है रिक्त: जानकार सूत्र बताते है कि अभी अस्पताल में मेडिकल विशेषज्ञ के 4 पद में से 2 पद रिक्त, स्त्री रोग विशेषज्ञ 4 पदों में से 1 रिक्त, शिशु रोग विशेषज्ञ के 7 में से 5 रिक्त, नेत्र रोग विशेषज्ञ के 2 में से 1 रिक्त, रेडियोलॉजिस्ट के 2 में से 2 रिक्त, पैथालाजिस्ट के 2 में से 2 रिक्त, निश्चेतना विशेषज्ञ 2 में से 2 रिक्त, ईएनटी विशेषज्ञ 2 में से 2 रिक्त, हृदय रोग विशेषज्ञ 1 पद रिक्त, क्षय रोग विशेषज्ञ 1 पद रिक्त, चिकित्सा अधिकारी के 15 पद 1 रिक्त, दंत चिकित्सक द्वितीय श्रेणी 2 पद 1 रिक्त, आयुष चिकित्सक 1 पद रिक्त, ट्रामा सेंटर प्रथम श्रेणी मेडिकल विशेषज्ञ 1 पद रिक्त, अस्थि रोग विशेषज्ञ 2 पद 2 रिक्त, सर्जिकल 2 पद 1 रिक्त, निश्चेतना विशेषज्ञ 2 पद 2 रिक्त, ट्रामा सेंटर में चिकित्सा अधिकारी 6 पद 6 रिक्त हैं।

इनका कहना है -

जिला चिकित्सालय में डॉक्टरों की कमी को दूर करने के लिए शासन को मांग पत्र भेजे जाते है। आशा है कि शासन इन पदो की जल्द ही प्रतिपूर्ति करेगा। 10 अनुबंधित डॉक्टरों की नियुक्ति हुई है, जिसमें से 5 ने ज्वाइंनिंग ले ली है, 5 डॉक्टरों की परीक्षा है। जिसके बाद इन डॉक्टरों द्वारा भी ज्वाइन करने की संभावना है।

- डॉ. जगदीश घोरे, सिविल सर्जन, जिला अस्पताल बैतूल

सीईओ जिला पंचायत ने भीमपुर सीएससी का किया निरीक्षण

स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को लेकर दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

बैतूल। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन ने मंगलवार को भीमपुर निरीक्षण के दौरान चिखली के गोडकी ढाना गांव के आंगनवाड़ी केंद्र में जमीन पर बैठकर एएनएम, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और आशा कार्यकर्ताओं के साथ आत्मीयता भरी बैठक की। बैठक में श्री जैन ने न केवल स्वास्थ्य सेवाओं की जमीनी स्थिति को समझा, बल्कि कार्यकर्ताओं की परेशानियों, सुझावों और अनुभवों को भी पूरी संवेदनशीलता के साथ सुना। इस दौरान सीईओ श्री जैन ने क्षेत्र में स्वास्थ्य और पोषण संबंधी सेवाओं की समीक्षा की। सीईओ श्री जैन ने ऑनलाइन स्वास्थ्य पोर्टल्स और पंजी रजिस्टरों की भी जांच की और उनमें सुधार के लिए संबंधित कर्मचारियों को स्पष्ट निर्देश दिए। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अक्षत जैन ने भीमपुर स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सीएससी का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने लेबर रूम की व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा बर्थ वेटिंग एरिया और केएमसी कॉर्नर का निरीक्षण कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। सीईओ श्री जैन ने चिखली के गोडकी ढाना ग्राम में आयोजित वीएचएनडी टीकाकरण कार्यक्रम का भी निरीक्षण किया। साथ ही उन्होंने एचबीएनसी गृह आधारित नवजात शिशु देखभाल तथा हाई रिस्क महिलाओं की स्वास्थ्य जांच संबंधी कार्यों का भी अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान डॉ. प्रांजल उपाध्याय, बीएमओ डॉ. पंकज उइके, बीपीएम श्री तिवारी मोरले, सीडीपीओ श्रीमती रामबाई तथा अंतरा फाउंडेशन से डॉ. सोनू राय सहित अन्य स्वास्थ्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

चिरमाटेकरी गांव में 1 सप्ताह से उल्टी-दस्त का प्रकोप, दो की मौत, एक दर्जन बीमार

बैतूल/भौंरा। शाहपुर तहसील के चिरमाटेकरी गांव में उल्टी दस्त का प्रकोप बढ़ता जा रहा है। उल्टी-दस्त से दो ग्रामीणों की मौत हो चुकी है, एक दर्जन ग्रामीण उल्टी दस्त से पीड़ित हैं। गांव में करीब एक सप्ताह से बीमारी फैली हुई है। ग्रामीण आसपास के गांव में प्राइवेट डॉक्टरों एवं डॉक्टरों एवं बैतूल के निजी अस्पताल में इलाज करा रहे हैं। शाहपुर से 12 किमी एवं भौरा सिर्फ 5 किमी दूर होने के बाद भी स्वास्थ्य विभाग टीम को गांव पहुंचने में एक सप्ताह लग गया। इससे विभाग के मैदानी टीम की लापरवाही उजागर हो रही है। मंगलवार को गांव के युवक गणेश धुर्वे ने शाहपुर पहुंचकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के डॉक्टर अभिनव शुक्ला को गांव में उल्टी दस्त की बीमारी फैलने की सूचना दी।

जिले के 1593 मतदान केन्द्र पर मन की बात को लेकर तैयारियां पूरी

बैतूल। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के महत्वाकांक्षी मासिक रेडियो, टेलीविजन कार्यक्रम मन की बात का आयोजन भी इस माह के अंतिम रविवार होगा। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार ने बताया कि मन की बात कार्यक्रम को लेकर जिले के सभी 30 संगठनात्मक मंडलो के प्रभारियों ने 22 व 23 जुन को मंडल बैठके ली। एवं जिले के सभी 1593 बूथो पर कार्यक्रम की तैयारियों पर मंडल में चर्चा की इसी कडी में आगामी दो दिनों में शक्तिकेन्द्र व बूथ समिति की बैठक आयोजित की जावेगीं। श्री पवार ने कहा कि मन की बात केवल एक कार्यक्रम मात्र नही हैं। बल्कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मादी का जनता के साथ सीधा संवाद है जिसमें वे सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रेरणादायक घटनाओं के साथ साथ राष्ट्रीय मुददो पर चर्चा करते है। अनसुनी कहानियों के माध्यम से समाज में होने वाले सकारात्मक बदलाव का भी जिक्र मन की बात कार्यक्रम में होता है। यह कार्यक्रम ऑल इंडिया रेडियो, दूरदर्शन सहित मोबाईल एप्प व समाचार चैनलो के साथ साथ विभिन्न डिजीटल प्लेटफार्म पर देखा व सूना जा सकता है। कार्यक्रम को लेकर प्रभारी , स्थान व शामिल होने वालो की सूचीबद्व तैयारियॉ पूरी हो चुकी है। हर पदाधिकारी व जनप्रतिनिधि इस मन की बात कार्यक्रम को लेकर विशेष रूप से उत्साहित है। समाज के साथ बैठकर कार्यक्रम को सूने और देखे साथ ही राष्ट्रीय, सामाजिक व आर्थिक मुददो पर श्री मोदी जी के मार्गदर्शन को आत्मसात कर विकसित भारत बनाने के संकल्प को पूरा करें।

संविदा शिक्षक ने वॉट्सऐप पर डाला आपत्तिजनक वीडियो, प्रकरण दर्ज

बैतूल। प्राथमिक स्कूल हर्राढ़ाना (दूधिया) में पदस्थ संविदा शिक्षक पर वॉट्सऐप स्टेटस पर महिलाओं के खिलाफ आपत्तिजनक वीडियो शेयर करने का आरोप है। आरोपी शिक्षक द्वारा साझा किया गया दो मिनट 21 सेकेंड का यह वीडियो किसी मुशायरे का बताया जा रहा है। मामले में पुलिस ने शिक्षक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर ली है। संविदा शिक्षक फैजान अंसारी द्वारा व्हाट्सऐप पर शेयर किए गए विवादित वीडियो में एक शायर महिलाओं की स्थिति और पुरुष सत्ता का जिक्र करते हुए दिख रहा है। इसे लेकर राज्य कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष सचिन राय ने शिकायत दर्ज कराई है। श्री राय ने शिकायत में कहा कि शिक्षक द्वारा साझा किया गया वीडियो महिलाओं की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाला है और सामाजिक सौहार्द को बिगाडने वाला है। उन्होंने वीडियो में दिख रहे व्यक्ति के खिलाफ भी कार्रवाई की मांग की है। मंगलवार देर शाम मध्यप्रदेश राज्य कर्मचारी संघ के जिलाध्यक्ष सचिन राय के नेतृत्व में कर्मचारियों ने चिचोली थाने में संविदा शिक्षक फैजान पर केस शिकायत दर्ज कराई। शिकायत में बताया गया कि आरोपी शिक्षक ने अपने मोबाइल के वॉट्सऐप स्टेटस पर महिलाओं के खिलाफ आपत्तिजनक वीडियो साझा किया, जिसकी कई लोगों ने निंदा की। शिकायत दर्ज कराने थाने पहुंचे कर्मचारियों में वीरेन्द्र धुर्वे, अतुल आर्य, अनिल गोस्वामी, सुनील वागद्रे, अजय मालवीय, ओ.पी. सरोने, वी.आर. यादव और प्रवीण नरवने शामिल थे। मामले में आरोपी बनाए गए शिक्षक के मोबाइल पर उनका पक्ष जानने काल किया गया। लेकिन उनका फोन लगातार स्विच आफ आया। चिचोली टीआई हरिओम पटेल ने बताया कि आरोपी शिक्षक के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 353(2) के तहत अपराध दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। डिजिटल सबूत जुटाए जा रहे हैं और अन्य कानूनी प्रक्रियाएं भी जारी हैं।

बैतूल कलेक्टर ने स्कूली बच्चों की समस्या का मौके पर ही किया समाधान

प्रवेश से वंचित बच्चों को मिला हक, खुश हुए छात्र और अभिभावक

बैतूल। नवीन शिक्षण सत्र की शुरुआत से पहले जहां बच्चे नई कक्षा में जाने के लिए उत्साहित रहते हैं, वहीं आठनेर ब्लॉक के ग्राम सातनेर के कुछ बच्चों को उस समय निराशा हाथ लगी जब उन्हें 8वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बावजूद 9वीं में प्रवेश नहीं दिया गया। कारण बताया गया कि बच्चों की उम्र 14 वर्ष से कम होना। इस समस्या को लेकर ग्राम सातनेर के शासकीय हायर सेकंडरी स्कूल के 8 विद्यार्थी अपने अभिभावकों के साथ बुधवार को कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी से मिलने कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचे। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने सभी बच्चों और उनके परिजनों को अपने कक्ष में बैठाकर पूरी बात गंभीरता से सुनी। छात्रों ने बताया कि उनकी उम्र 13 वर्ष है और 8वीं उत्तीर्ण कर चुके हैं, फिर भी स्कूल के प्राचार्य उन्हें यह कहकर प्रवेश नहीं दे रहे कि जब तक वे 14 वर्ष के नहीं हो जाते, तब तक उन्हें 9वीं कक्षा में प्रवेश नहीं मिलेगा। छात्रों ने बताया कि ऐसे लगभग 22 विद्यार्थी है। जिन्हें प्रवेश नहीं दिया जा रहा हैं। कलेक्टर ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य श्री विवेक पांडे एवं जिला शिक्षा अधिकारी श्री अनिल सिंह कुशवाहा को तलब कर समस्या का मौके पर ही निराकरण करने के निर्देश दिए। जांच में पाया गया कि विद्यालय प्राचार्य को प्रवेश नियमों की सही जानकारी नहीं थी, जिससे यह स्थिति उत्पन्न हुई। कलेक्टर ने स्पष्ट निर्देश दिए कि ऐसे सभी विद्यार्थी जिन्हें उम्र के आधार पर प्रवेश से वंचित किया गया है, उन्हें तत्काल प्रवेश दिया जाए। बच्चों के सामने ही समस्या का निराकरण हुआ, जिससे छात्र और अभिभावक काफी प्रसन्न हुए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने बच्चों को चॉकलेट देकर उनका मुंह मीठा कराया और कहा कि वे निश्चिंत होकर पढ़ाई करें। बच्चे खुशी-खुशी अपने गांव लौटे और कहा कि अब वे पूरे उत्साह से स्कूल जा सकेंगे।

14 दिन बाद बरसा पानी, जिले में अब तक 15 इंच हुई बारिश

बैतूल। लंबे इंतजार के बाद बुधवार को शहर में आधा घंटा बारिश हुई। इसके बाद कुछ देर बूंदाबांदी चलती रही। बारिश और ठंडी हवा चलने से दिन के तापमान में एक डिग्री के आसपास गिरावट आई है। रात का तापमान भी एक डिग्री नीचे खिसका है। जिससे लोगों को उमस और गर्मी से थोड़ी राहत मिली है। हालांकि मंगलवार को जहां हल्की फुहारें पड़ी थीं, वहीं घोड़ाडोंगरी क्षेत्र में लगभग 3 इंच बारिश दर्ज की गई। मौसम विभाग ने अगले दो दिन हल्की बारिश होने की संभावना जताई है, वहीं जुलाई के आखिर में ही अच्छी बारिश की उम्मीद है। जिले में अब तक औसत 35 फीसदी यानी 15 इंच बारिश दर्ज की जा चुकी है। बता दे कि बैतूल में 9 जुलाई के बाद बारिश पर ब्रेक लग गया था। हालांकि कहीं-कहीं जरूर बारिश दर्ज की गई, लेकिन यह बारिश सिर्फ हल्की फुहारों तक सीमित रही। तेज बारिश नहीं हुई। जिसके बाद बुधवार को बारिश होने से लोगों को राहत मिली। जिले में अब तक औसत 35 फीसदी यानी 15 इंच बारिश दर्ज की जा चुकी है। सबसे ज्यादा घोड़ाडोंगरी में 27 इंच (63 प्रतिशत) हुई बारिश। विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा का आंकड़ा इस प्रकार है - बैतूल 10.2 इंच, चिचोली 15.6 इंच, शाहपुर 20.6 इंच, मुलताई 14.7 इंच, प्रभात-पट्टन 15.5 इंच, आमला 12 इंच, भैंसदेही 9.8 इंच, आठनेर 9.6 इंच और भीमपुर 14.9 इंच। सारणी क्षेत्र में 22.1 इंच वर्षा के बाद सतपुड़ा बांध का जल स्तर 1430 फुट पर स्थिर है।

उज्जैन में होगा अभा भार्गव सभा का वार्षिक सम्मेलन

बैतूल। अखिल भारतीय भार्गव सभा का सम्मेलन दिसम्बर माह में उज्जैन में किया जाएगा। इस निर्णय गत दिवस भोपाल में आयोजित हुई अखिल भारतीय भार्गव सभा की बैठक में लिया गया। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि उज्जैन में बनने वाली स्थायी कुंभ सिटी में भार्गव आश्रम का निर्माण कराया जाए जैसा की हरिद्वार में भार्गव आश्रम बना हुआ है। इससे उज्जैन जाने वाले धर्मावलंबियों और श्रद्धालुओं को ठहरने आदि की सुविधा उपलब्ध हो सके। भोपाल में गत दिवस हुई अखिल भारतीय भार्गव महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श कर निर्णय लिए गए। बैठक में सर्वसम्मति से तय किया गया कि आगामी दिसम्बर माह में 21, 22 एवं 23 दिसम्बर को अभा भार्गव सभा का वार्षिक सम्मेलन मध्यप्रदेश के उज्जैन में किया जाएगा। बैठक को संबोधित करते हुए बैतूल से राष्ट्रीय कार्यकारिणी के निर्वाचित सदस्य मयंक भार्गव ने सुझाव दिया कि उज्जैन में मध्यप्रदेश शासन द्वारा बनाई जा रही स्थायी कुंभ सिटी में भूमि लेकर स्थायी भार्गव आश्रम का निर्माण किया जाए।

नशे से दूरी जरूरी कार्यक्रम के तहत जनजागरूकता अभियान चलाया

बैतूल। बचपन प्ले एवं अकेडमिक हॉईट्स पब्लिक स्कूल आमला में नशा मुक्ति पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आमला थाना प्रभारी सत्यप्रकाश सक्सेना एवं विशेष अतिथि एसआई राममोहन यादव, एएसआई मूलचन्द अनन्त, आरक्षक रामराव पान्द्रे, नागेन्द्र सिंह राजपूत, अनन्त यादव, खेल एवं युवा कल्याण विभाग ब्लॉक समन्वयक रामनारायण शुक्ला एवं शास कन्या उच्चतर माध्यमिक शाला आमला से खेल शिक्षक हरिभाऊ झरबडे शामिल थे। कार्यक्रम का शुभारंभ बच्चों द्वारा आये हुए अतिथियों का पुष्पों द्वारा स्वागत कर किया गया। तत्पश्चात बच्चों द्वारा नशा मुक्ति को लेकर एक गीत प्रस्तुत किया गया।

आमला नगर में एक सैकड़ा से ज्यादा मकान जर्जर

नपा के पास सर्वे तक के लिए कोई अधिकृत टीम नहीं

बैतूल/आमला। अब इसे लापरवाही कहें, मनमर्जी कहें, भर्राशाही कहें या फिर विडंबना माने! जो भी हो लेकिन शहर में प्रशासन की इस लापरवाही का बड़ा खामियाजा किसी दिन निर्दोष लोगों को भुगतना पड़ेगा। यूं तो शहर में अलग-अलग विभागों की लापरवाही और इससे संभावित किसी बड़ी दुर्घटना से इनकार नहीं किया जा सकता है, ऐसे कई उदाहरण दिए जा सकते हैं, फिर भी इस समय वर्षाकाल को देखते हुए शासन के निर्देशानुसार शहर की ऐसी जर्जर इमारतें जो किसी भी वक्त भरभरा कर गिरने की कगार पर है, नगर पालिका प्रशासन इसको लेकर गंभीर दिखाई नहीं पड़ता है, और हर साल नगर पालिका में दैनिक वेतन कर्मचारी ही इस गंभीर मामले को अपनी क्षमता के मुताबिक कुछ लोगों को नोटिस आदि देकर शासन के निर्देशों की औपचारिकता पूरी कर देते हैं। नगर पालिका प्रशासन की यह लापरवाही आने वाले समय में किसी भी बड़े हादसे को आमंत्रित करती दिखाई पड़ रही है।

शहर में केवल सात लोगों को नोटिस: इस बारे में जब हमने नगर पालिका राजस्व प्रभारी बबन कुंभारे से बात की तो उन्होंने बताया कि लगभग सात लोगों को नोटिस जारी किया गया है किंतु कोई कार्यवाही हम लोग नहीं कर पाते हैं यही शाखा के सहायक पी.चौहान ने हमें बताया है की शाखा में कर्मचारियों की कमी है हम लोग खुद सर्वे आदि करके प्रस्ताव बनाकर नोटिस भेज देते हैं, किंतु कई लोग ऐसे हैं जो बेहद जर्जर भवन में ही निवास कर रहे हैं और मकान खाली करने को तैयार नहीं है जिससे खतरा बना रहता है।

सर्वे के लिए विशेषज्ञ टीम ही नहीं: यहां देखा गया है कि शहर की क्षतिग्रस्त और जर्जर इमारत के सर्वे के लिए नगर पालिका में कोई विशेषज्ञों की टीम ही नहीं है, ऐसे में जर्जर इमारत का सही आंकड़ा और सर्वे की रिपोर्ट महज एक अनाड़ी कर्मचारी के भरोसे है ऐसे में अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस तरह के गंभीर मामलों में जो लोगों की जान माल से जुड़े हो वहां प्रशासन की लापरवाही शहर में कितना बड़ा नुकसान कर सकती है।

कई शासकीय भवन भी बेहद जर्जर: शहर के कई रिहायशी इलाकों, मेंन रोड के अलावा शहर के कई शासकीय भवन जिसमें शहर का कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परिसर भी शामिल है यहां भी कई कमरे बेहद जर्जर हालत में है और अब ज्यादा बारिश झेलने की ताकत नहीं रखते हैं। इस पर भी नगर पालिका प्रशासन का कोई ध्यान नहीं है, जैसा कि हमें जानकारी है कि शहर के मेंन रोड इलाके के भी कई दुकान मकान कई दशकों पुराने हैं तो कुछ शासकीय इमारतें भी ढहने की कगार पर है किंतु नगर पालिका प्रशासन शायद यहां किसी बड़ी दुर्घटना के इंतजार में है हैरानी यहां इस बात की भी है कि इस तरह के गंभीर मामलों पर भी नगर पालिका गंभीर दिखाई नहीं पड़ती है। इस मामले में हमारे द्वारा कई बार नगर पालिका अधिकारी नितिन बिंजवे को फोन किया गया, किंतु उन्होंने फोन का जवाब नहीं दिया है।

इनका कहना है -

शहर के जर्जर भवन आदि के लिए एक विशेषज्ञ की टीम गठित की जाएगी ये मामला वाकई बेहद गंभीर है इस पर हम गंभीरता से काम करेंगे।

- नितिन गाडरे नगर पालिका अध्यक्ष आमला

कम उम्र में भी बढ़ रहे हैं कोलोरेक्टल कैंसर के मामले, समय रहते जांच और जागरूकता है बचाव का उपाय

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में संस्थान जनस्वास्थ्य से जुड़े उभरते खतरों के प्रति जन-जागरूकता और समय पर निदान एवं उपचार को लगातार बढ़ावा दे रहा है। इसी कड़ी में एम्स भोपाल के विशेषज्ञों ने भारत में कोलोरेक्टल कैंसर के बढ़ते मामलों, विशेषकर युवाओं में इसके प्रचलन को लेकर चिंता व्यक्त की है। कोलोरेक्टल कैंसर, जो बड़ी आंत (कोलन या रेक्टम) को प्रभावित करता है, पहले केवल पश्चिमी देशों की बीमारी मानी जाती थी, लेकिन अब भारत में भी आधुनिक जीवनशैली के कारण इसके मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। वैश्विक स्तर पर यह पुरुषों और महिलाओं में तीसरा सबसे आम कैंसर है। भारत में यह हर एक लाख में लगभग 4.4 लोगों को प्रभावित करता है। जोखिम कारकों में 50 वर्ष से अधिक आयु, पुरुष लिंग, पारिवारिक इतिहास, लिंच सिंड्रोम जैसी आनुवंशिक स्थितियां, कम फाइबर युक्त आहार, मोटापा, धूम्रपान, अत्यधिक शराब सेवन और आंत की सूजन संबंधी बीमारियां शामिल हैं।

इंडियन जर्नल ऑफ कैंसर (2021) की एक रिपोर्ट के अनुसार, 25त नए कोलोरेक्टल कैंसर मरीज 40 वर्ष से कम आयु के थे, जो एक गंभीर संकेत है। शुरुआती चरणों में इसके लक्षण स्पष्ट नहीं होते या थकान, वजन घटना, या एनीमिया के रूप में सामने आते हैं। जैसे-जैसे कैंसर बढ़ता है, मल त्याग की आदतों में बदलाव, पेट दर्द, गैस बनना और मल में खून आना जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। कई बार यह बीमारी टीबी जैसी दिखती है, जिससे सही निदान में देर हो सकती है। विशेषज्ञों का कहना है कि मल में खून आने को बवासीर या फिशर समझकर खुद से दवा शुरू करना खतरनाक हो सकता है। सही समय पर जांच कराने से इलाज की सफलता की संभावना काफी बढ़ जाती है। 45 वर्ष की आयु से स्क्रीनिंग (जैसे कॉलोनोस्कोपी या स्टूल टेस्ट) की सिफारिश की जाती है, और जिनमें पारिवारिक इतिहास हो, उनमें यह और पहले आवश्यक है। उपचार कैंसर के चरण पर निर्भर करता है, जिसमें सर्जरी, कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी, टार्गेटेड और इम्यूनोथेरेपी शामिल हो सकते हैं। लेप्रोस्कोपिक या रोबोटिक सर्जरी से जल्दी स्वस्थ होने और कम जटिलताओं के लाभ मिलते हैं।

रोटरी क्लब भोपाल मिडटाउन सेवा रथ शुरू

भोपाल। सेवा कार्यों के लिए प्रतिबद्ध रोटरी क्लब भोपाल मिडटाउन की सेवा रथ योजना का बुधवार को शुभारंभ हमीदिया अस्पताल परिसर से किया गया।रोटरी मिड टाउन के अध्यक्ष हम सिंह गुर्जर और मानद सचिव श्रीमती रश्मि गुर्जर ने बताया कि सेवा रथ का शुभारंभ इरोट्रिजिला 3040 के

मंडल अध्यक्ष सुशील मल्होत्रा एवं प्रथम महिला रूबी मल्होत्रा द्वारा किया गया। इस सेवा रथ का प्रयोजन विभिन्न प्रकार की सेवाएं समाज के जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाना है। यह सेवा रथ प्रति शनिवार नियत समय पर विभिन्न सेवाओं जैसे कि भोजन सामग्री, खिलौने, वस्त्र, पुस्तकों आदि का वितरण आवश्यकता अनुसार समाज के जरूरतमंद लोगों तक किया जाएगा। इस सेवा रथ के शुभारंभ कार्यक्रम में हमीदिया अस्पताल स्थित मरीजों और उनके परिजनों को फल एवं भोजन के पैकेट वितरित किए गए। इस अवसर पर रोटेरियन सुनील भार्गव, अमित तनेजा वीरेंद्र गुर्जर, आभास जैन और संजय निगम सहित बड़ी संख्या में रोटेरियन उपस्थित थे।

डिप्टी कमिश्नर के घर मिली बाघ की खाल

ईओडब्ल्यू को छापे में मिली 5.89 करोड़ की प्रॉपर्टी

जबलपुर (नप्र)। आदिम जाति कल्याण विभाग के डिप्टी कमिश्नर जगदीश सरवटे के जबलपुर स्थित घर से बाघ की खाल बरामद की गई है। यह खाल करीब 30 साल पुरानी बताई जा रही है, जिसे आसन के रूप में बैठने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा था।

आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ (ईओडब्ल्यू) की टीम बुधवार को सरवटे के आधारताल स्थित घर पहुंची थी। खाल मिलने के बाद वन विभाग ने जगदीश सरवटे के खिलाफ वन्य प्राणी संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत मामला दर्ज करते हुए खाल को जब्त कर लिया है। डीएफओ ने बताया कि वन्य प्राणी अधिनियम 1972 की धारा 9 और 50 के तहत मामला दर्ज किया, जिसमें 7 साल तक की सजा का प्रावधान है। आरोपी डिप्टी कमिश्नर सरवटे को जल्द ही पूछताछ के लिए बुलाया जाएगा।

बता दें कि आर्थिक अपराध अन्वेषण ब्यूरो ने मंगलवार को जगदीश सरवटे के जबलपुर, सागर और भोपाल स्थित ठिकानों

जगदीश सरवटे, डिप्टी कमिश्नर

पर छापा मारा था। जिसमें सरवटे से 5 करोड़ 89 लाख 95 हजार 624 रुपए की अनुपातहीन संपत्ति मिली थी।

जांच एजेंसी बुधवार को भी सरवटे के जबलपुर के आधारताल और रामपुर स्थित उनके आवासों पर सर्चिंग में जुटी रही, जबकि करमचंद चौक स्थित बैंक लॉकरों की भी तलाशी ली जा रही है।

खाल मिलने पर वन विभाग भी करेगा पूछताछ- ईओडब्ल्यू को सरवटे के बंगले में तलाशी के दौरान बाघ की खाल मिलने के बाद इसकी सूचना तत्काल जबलपुर वन विभाग को दी गई। डीएफओ ऋषि शुक्ला ने बताया कि बरामद की गई खाल लगभग 30 वर्ष पुरानी, जिसकी कीमत का आकलन फिलहाल नहीं किया जा सका है। वन विभाग यह जांच करेगा कि यह खाल कहां से लाई गई और किसने दी। इस मामले में सरवटे से वन विभाग अलग से पूछताछ करेगा।

तीन शहरों में सर्चिंग, एक के बाद एक खुलासे- डिप्टी कमिश्नर जगदीश सरवटे के खिलाफ भ्रष्टाचार की शिकायत मिलने के बाद भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 की धारा 13(1)(बी), 13(2) के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई थी।22 जुलाई को ईओडब्ल्यू की टीमों ने जबलपुर के शंकर शाह नगर रामपुर स्थित सरकारी आवास, आधारताल स्थित पैतृक मकान और भोपाल के बाग मुगलिया में एक साथ छापे मारे।

समुद्र मंथन दिवस आज

कलाओं में बघेश्वर व मणिधर प्रदर्शनी का शुभारंभ मुख्यमंत्री आज करेंगे

भोपाल। समुद्र मंथन दिवस (24 जुलाई) को भोपाल के रवीन्द्र भवन परिसर में हरिहर राष्ट्रीय नाट्य समारोह अंतर्गत 'कलाओं में बघेश्वर और मणिधर' प्रदर्शनी का शुभारंभ एवं वीर भारत न्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'लोक में मणिधर-बघेश्वर' का लोकार्पण मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव करेंगे। प्रदर्शनी और पुस्तक की विशेषता बताते हुए मुख्यमंत्री ज के संस्कृति सलाहकार एवं वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी ने कहा कि समुद्र मंथन में हरि और हर की अद्वितीय भूमिका रही है और संसार के विकासक्रम में शिव और शक्ति के अनन्य सहचर बाघ और नाग निरंतर सक्रिय रहे हैं और दोनों ही निरंतर अनेक परंपराओं के जनक भी है। इनके माध्यम से भी हम समाज के विकास की विभिन्न धाराओं को देख और पहचान सकते हैं। उन्होंने कहा कि कलाओं में नाग एवं बाघ की प्रदर्शनी 24 से 29 जुलाई तक रवीन्द्र भवन में प्रदर्शित की जा रही है। प्रदर्शनी का शुभारंभ मुख्यमंत्री करेंगे। इस अवसर वीर भारत न्या ?स द्वारा प्रकाशित पुस्तक लोक में मणिधर-बघेश्वर का लोकार्पण भी होगा। मध्यप्रदेश जनजातीय लोक कला एवं बोली विकास अकादमी के सहयोग से प्रकाशित इस पुस्तक में 100 से पारम्परिक लोक एवं जनजातीय कलाओं में नाग एवं बाघ की दुर्लभ छवियों को संकलित किया गया है।

मैपकास्ट में बच्चों ने जाना पाई का महत्व

भोपाल। मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद (एमपीसीएसटी) के सेंटर फॉर क्रिएटिव लर्निंग में पाई Appro&imation Day के उपलक्ष्य में एक रोचक और ज्ञानवर्धक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सरस्वती शिशु मंदिर शारदा विहार, भोपाल के कक्षा 6 से 10 तक के करीब 250 विद्यार्थियों ने भाग लिया और गणित व विज्ञान की अवधारणाओं को रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से अनुभव किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों को (पाई) की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, गणित में उसके अनुप्रयोग, और अंतरिक्ष विज्ञान एवं अभियंत्रण में उसकी महत्ता से अवगत कराया गया। बच्चों ने पाई से संबंधित गणितीय गतिविधियों में भाग लिया, जैसे ङ्क बाइनरी संख्याएं, रिवर्स इंजीनियरिंग, वृत गणना और अन्य रोचक प्रयोग। STEM आधारित गतिविधियों के माध्यम से गणित, विज्ञान और इंजीनियरिंग की आपसी कड़ियों को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया। बच्चों ने विभिन्न शैक्षिक खिलौनों और मॉडलों के माध्यम से गणितीय और वैज्ञानिक अवधारणाओं को प्रत्यक्ष रूप से देखा और सीखा।

फार्माकोविजिलेंस और औषधि प्रतिकूल प्रतिक्रिया रिपोर्टिंग पर जनजागरूकता अभियान आयोजित

भोपाल। कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के मार्गदर्शन में एम्स भोपाल आमजन के बीच स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता बढ़ाने हेतु सामुदायिक सहभागिता पर आधारित कार्यक्रमों का आयोजन लगातार कर रहा है। इसी कड़ी में, फार्माकोलॉजी विभाग द्वारा सामुदायिक एवं परिवार चिकित्सा विभाग के सहयोग से रायसेन जिले के धामधुसर स्थित आयुष्मान आरोग्य मंदिर एवं शासकीय प्राथमिक शाला में फार्माकोविजिलेंस और आम नागरिकों द्वारा प्रतिकूल औषधीय घटनाओं की रिपोर्टिंग पर केंद्रित जनजागरूकता अभियान का आयोजन किया गया।

प्रदेश अध्यक्ष, प्रदेश संगठन महामंत्री, जिलाध्यक्ष ने क्रांतिकारी चन्द्रशेखर आजाद को किया याद

बाल गंगाधर तिलक को पुष्पांजलि अर्पित कर किया नमन

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व विधायक श्री हेमंत खण्डेलवाल एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी, प्रदेश महामंत्री व विधायक श्री भगवानदास सबनानी एवं जिला अध्यक्ष श्री रविंद्र यति ने बुधवार को महान क्रांतिकारी, अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद की जयंती पर गीतांजलि चौराहा स्थित प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन किया। जिसके पश्चात् 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के अंतर्गत कार्यकर्ताओं के साथ पौधारोपण भी किया। इस अवसर जन अभियान परिषद प्रदेश उपाध्यक्ष श्री मोहन नागर, जिला संगठन प्रभारी श्री महेंद्र सिंह यादव, जिला मीडिया प्रभारी श्री राजेंद्र गुप्ता, श्री आरके सिंह बघेल, श्री राजकुमार विश्वकर्मा, श्री शैलेंद्र निगम, श्री राजू अनेजा, जोन अध्यक्ष व पार्षद श्रीमती बृजला सचान, श्रीमती आरती अनेजा सहित जिला पदाधिकारी, मंडल पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक को किया नमन

महान स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की जयंती के अवसर पर सांस्कृतिक प्रकोष्ठ द्वारा मध्य विधानसभा के तिलक चौराहे पर प्रकोष्ठ के जिला संयोजक श्री शैलेंद्र निगम, एवं सह संयोजक श्री रवि पंवार के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा उन्हें पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। इस अवसर पर पार्टी की प्रदेश उपाध्यक्ष श्रीमती सीमा सिंह एवं जिले के मंत्री श्री राजकुमार विश्वकर्मा, जिला मीडिया प्रभारी श्री राजेंद्र गुप्ता, मंडल अध्यक्ष श्री अभिषेक पुरोहित, मंडल अध्यक्ष श्री पीयूष सिंह सिसोदिया, श्री शेखर श्रीवास्तव, श्री राहुल यति उपस्थित रहे।

जब पुलिस ही असहाय हो जाए तो राज्य में न्याय कैसे मिलेगा?

प्रमोद पावन आत्महत्या मामला- भाजपा की नाकामी की क्रूर सच्चाई उजागर करता है : जीतू पटवारी

भोपाल। मध्य प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी ने पुलिसकर्मी प्रमोद पावन की आत्महत्या को भाजपा सरकार की विफलता, माफियाओं के बेलगाम आतंक, और जातिगत उत्पीड़न की शर्मनाक तस्वीर बताया है।

मात्र एक घटना नहीं, एक खतरनाक चलन- मध्य प्रदेश में पिछले 6 महीनों में 10 पुलिसकर्मियों ने आत्महत्या की है! यह आंकड़ा भाजपा शासन की प्रशासनिक क्रूरता और पुलिस बल के भीतर गहराते मानसिक, पारिवारिक और सामाजिक तनाव को दर्शाता है। श्री पावन ने आत्महत्या से पहले साफ शब्दों में कहा- मेरे ही टीआई मुझे प्रताड़ित कर रहे हैं रेत माफिया कुचलने की धमकी दे रहा है। यह बयान केवल किसी एक व्यक्ति की व्यथा नहीं है, यह पूरे पुलिस महकमे के भीतर जहर बन चुके दबाव, भ्रष्टाचार, जातिवाद और माफिया-संरक्षण की गवाही है। भाजपा सरकार के राज में पुलिसकर्मी भी सुरक्षित नहीं! मध्य प्रदेश में भाजपा के शासनकाल में माफियाओं को खुली छूट दी गई है। पुलिसकर्मी मानसिक दबाव, कार्यभार, राजनीतिक हस्तक्षेप और जातिवादी उत्पीड़न का शिकार हो रहे हैं। प्रमोद पावन जैसे ईमानदार जवानों को आत्महत्या जैसे कदम उठाने पर विवश होना प्रदेश की कानून व्यवस्था की पराजय है।

बेटी को लेकर कुएं में कूदी महिला, दोनों की मौत

दो दिन पहले पति ने सुसाइड किया था; फेसबुक पर लिखा- बड़ी बेटी का ध्यान रखना

दमोह (नप्र)। दमोह में एक महिला अपनी दो साल की बच्ची को लेकर कुएं में कूद गई। दोनों की पानी में डूबने से मौत हो गई। महिला के पति ने भी दो दिन पहले ही घर की छत से कूदकर सुसाइड कर लिया था। महिला सीमा पटेल के भाई धीरेंद्र ने ससुराल पक्ष पर बहन की हत्या करने का आरोप लगाया है। पुलिस का कहना है कि जांच कर रहे हैं। मामला दमोह के पथरिया थाना क्षेत्र के सजियाहार गांव में बुधवार सुबह करीब 4 बजे का है। महिला की बड़ी बेटी 4 साल की है।

सीमा पटेल, मृतक

अंशु पटेल, मृतक

फेसबुक पर लिखा- आज दुनिया छोड़कर जा रही

घटना से कुछ घंटे पहले सीमा ने अपने फेसबुक अकाउंट पर लिखा था, 'मैं आज दुनिया छोड़कर जा रही हूं। मैं नहीं जी पा रही हूं, सब मेरी बेटी (बड़ी बेटी) का ध्यान रखना।' इस पोस्ट के कुछ घंटे पहले दूसरी पोस्ट में लिखा था, क्या दिन थे आपके साथ... पता ही नहीं चला और आप छोड़कर चले गए।सीमा का पति निहाल पटेल गांव का समृद्ध किसान था। सरपंच के चुनाव में काफी पैसा खर्च करने के बावजूद हार गया था।

भोपाल में युवक को बंधक बनाकर मारपीट

चोरी के संदेह में की गई पिटाई, युवक का आरोप कबाड़ा कारोबारियों ने पीटा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हनुमानगंज इलाके में युवक को रूम में बंद कर मारपीट का मामला सामने आया है। मारपीट का आरोप कबाड़ खाने के कबाड़ा कारोबारियों पर लगा है। आरोपियों ने फरियादी युवक को चोरी के संदेह में पीटा है। घटना मंगलवार की है, बुधवार को पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।पुलिस के मुताबिक शोएब नाम का युवक मंगलवार की देर रात करीब दो बजे थाने पहुंचा और उसने पुलिस को बताया कि उसे भैय्या कबाड़ी ने बंधक बना लिया था। कमरे में बंद कर उसे पाइप, डंडे और बेल्ट से उसके साथ करीब 12 घंटे तक मारपीट की थी। उसे भूखा और प्यासा रखा गया। आरोपी किसी चोरी के संबंध में उससे पूछताछ कर रहे थे। युवक के शरीर पर गंभीर चोट के निशान हैं। उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

नहीं हो सकी आरोपियों की गिरफ्तारी- युवक की एक्स-रे और अन्य जांचे कराई जा रही है। पुलिस ने युवक के कथनों के आधार पर भैय्या कबाड़ी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। हालांकि इस मामले में अभी तक किसी की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है।

रायसेन के बेगमगंज में चलती कार में लगी आग

डिवाइडर से टकराई, ड्राइवर ने कूदकर बचाई जान; शॉर्ट सर्किट की आशंका

रायसेन (नप्र) रायसेन जिले के बेगमगंज में कृषि उपज मंडी के पास बुधवार दोपहर करीब 3:30 बजे चलती कार में अचानक आग लग गई। आग लगने के कारण गाड़ी डिवाइडर से टकरा गई। ड्राइवर ने कूदकर जान बचाई। जानकारी के मुताबिक, व्यापारी ओंकार साहू अपनी आई-10 कार से यात्रा कर रहे थे। कार से अचानक धुआं उठता देख ओंकार साहू ने वाहन को किनारे लगाने का प्रयास किया, लेकिन धुएं के कारण दृश्यता कम हो गई और कार डिवाइडर से टकरा गई।

ओंकार साहू ने तुरंत कार से कूदकर जान बचाई।

दमकल के पहुंचने से पहले जल गई कार - घटना के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जुट गई। नगर पालिका की दमकल को सूचना दी गई, लेकिन दमकल के पहुंचने से पहले ही कार का अधिकांश हिस्सा जल चुका था। बाद में आग पर काबू पा लिया गया। हादसे में कार पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। प्रारंभिक जानकारी में शॉर्ट सर्किट से आग लगने की वजह बताई जा रही है।

हनुमानगंज में दुकान में आग

लाखों के ड्राई फ्रूट्स जलकर राख; डेढ़ घंटे में काबू पाया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हनुमानगंज स्थित एक ड्राई फ्रूट्स की दुकान में देर रात भीषण आग लग गई। करीब डेढ़ घंटे में आग काबू में आ सकी। आग से लाखों के ड्राई फ्रूट्स जलकर राख हो गए। जानकारी के अनुसार, शहर के व्यस्ततम एवं पुराने मार्केट हनुमानगंज गल्ला बाजार में ड्राई फ्रूट्स किराना व्यापारी अमित बत्रा की दुकान में मंगलवार-बुधवार की रात आग लगी थी।

- **दुकान से धुआं उठते देख दमकल को दी जानकारी** -भोपाल किराना व्यापारी महासंघ के महामंत्री विवेक साहू ने बताया कि वे हनुमानगंज मार्केट में ही रहते हैं। रात में एक दुकान में कुछ जलने की बदबू एवं धुआं निकलते देखा। यह दुकान शंकर बत्रा एवं अमित बत्रा की थी। जहां भीषण आग लगी थी। फायर ब्रिगेड के साथ पुलिसकर्मी भी पहुंचे। इसके बाद फायर कर्मियों ने आग पर काबू पाया। करीब डेढ़ घंटे में आग बुझ सकी।
- **शार्ट सर्किट से आग लगने की संभावना** - कारोबारी अमित बत्रा एवं शंकर बत्रा ने बताया कि प्रथम दृष्टता आग शॉर्ट सर्किट की वजह से लगना हो सकता है। अभी नुकसान का आकलन करना मुश्किल है।

मेयर, एमआईसी-पार्षदों को अब 'झुकना' नहीं पड़ेगा

भोपाल निगम मीटिंग हॉल में साउंड सिस्टम अपग्रेड; कल होगी परिषद की बैठक

भोपाल (नप्र)। भोपाल नगर निगम की मीटिंग में अब सवाल-जवाब के दौरान मेयर, एमआईसी सदस्य और पार्षदों को झुकना नहीं पड़ेगा। गुरुवार को होने वाली मीटिंग से पहले साउंड सिस्टम अपग्रेड किया गया है। पिछले 2 दिन से सिस्टम की टेस्टिंग भी की जा रही है। निगम अध्यक्ष सूर्यवंशी ने बताया कि बैठक में साउंड सिस्टम की वजह से कई बार

बीच मीटिंग में रूकावट आती थी। इसलिए इसे ठीक करवाया गया है। वहीं, मेयर, एमआईसी सदस्य और पार्षदों की टेबल पर लगे माइक की लंबाई भी बढ़ाई गई है। मीटिंग हॉल में मेयर मालती राय, नेता प्रतिपक्ष शबिस्ता जकी और सभी एमआईसी सदस्य-पार्षदों के सवाल-जवाब के लिए माइक लगे हैं।

बीजेपी पार्षद दल की बैठक होगी - परिषद की मीटिंग से पहले बुधवार शाम को बीजेपी पार्षद दल की बैठक होगी। यह बैठक महापौर राय लेंगी, जिसमें एमआईसी मेंबर भी शामिल होंगे। दूसरी ओर, कांग्रेस पार्षद दल की बैठक में सत्ता पक्ष को घेरने की प्लानिंग बनाई जा रही है।

नाम बदलने के दो प्रस्ताव भी आएंगे - परिषद की बैठक में इलाके और चौराहे का नाम बदलने के 2 प्रस्ताव भी आएंगे। पुराने शहर स्थित ओल्ड अशोका गार्डन का नाम बदलकर 'राम बाग' होगा, जबकि विवेकानंद पार्क के पास चौराहे का नाम 'विवेकानंद चौक' किया जाएगा। ये दोनों ही प्रस्ताव एमआईसी ने पास कर दिए हैं।

25 करोड़ रुपए से 6 विसर्जन कुंड बनेंगे - निगम की बैठक 24 जुलाई को सुबह 11 बजे से आईएसबीटी स्थित निगम ऑफिस में होगी। इसका एजेंडा तय हो गया है। इसके अनुसार, बरकतउल्ला यूनिवर्सिटी में 4.45 करोड़ रुपए से कुंड बनाया जाएगा। इसमें शेड, मॉनिटरिंग टॉवर, रिटेनिंग वॉल, पॉथ-वे, बाउंड्रीवॉल, हार्टिकल्चर ड्रेन कलवर्ट, इलेक्ट्रिफिकेशन एवं इंट्रेस गेट होंगे।

इसी तरह नीलबड़ में 6.01 करोड़ रुपए, संजीव नगर में 4.77 करोड़ रुपए, मालीखेड़ा में 2.49 करोड़ रुपए और प्रेमपुरा में 7.34 करोड़ रुपए से कुंड बनाए जाएंगे।सुलभ शौचालय का शुल्क बढ़ाने समेत कई विषयों पर विपक्ष सत्ता पक्ष को घेरने की रणनीति बना रहा है।

शहर सरकार को घेरने की तैयारी में विपक्ष - विपक्ष 'शहर सरकार' को घेरने की तैयारी में है। नेता प्रतिपक्ष शबिस्ता जकी ने बताया कि बैठक में सड़क, पानी समेत कई मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। दूसरी ओर लगातार बैठक देरी से होने का मुद्दा भी उठाया जाएगा। कांग्रेस पार्षद योगेंद्र सिंह चौहान 'गुड्डू' ने बताया कि दीनदयाल रसोई में 5 रुपए में खाना मिल रहा है। दूसरी ओर, टॉयलेट्स के रेट बढ़ाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया, पिछले दिनों एमआईसी की बैठक हुई थी। इसमें सुलभ इंटरनेशनल ने 25 स्थानों पर संचालित सार्वजनिक शौचालय में उपयोगकर्ता शुल्क दर 6 से बढ़ाकर 10 रुपए किए जाने की मंजूरी चाही थी। एमआईसी ने इस प्रस्ताव को पास कर दिया था। इसके बाद से ही कांग्रेस विरोध कर रही है।

कम खर्च में ज्यादा फायदा देने वाले फलदार और छायादार पौधों का बहुतायत में करें रोपण : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

- **निजी सेक्टर और किसानों को भी जोड़ें पौधरोपण से**
- **किसान बगीचा लगाएं और उद्यानिकी विभाग उपलब्ध कराये पौधे**
- **मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने की 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान की समीक्षा**

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि किसान हो या आमजन, खरीदकर पौधे लगाने और उन्हें बड़ा करने में लागत अधिक आती है, इसलिए सबको नर्सरी और बगीचा लगाने के लिए प्रेरित तो करें, परंतु उन्हें पौधे उद्यानिकी विभाग उपलब्ध कराये। कम खर्च में ज्यादा फायदा देने वाले फलदार और छायादार पौधों का बहुतायत में रोपण कराया जाये। पौधरोपण के कार्य में निजी सेक्टर और किसानों को भी जोड़ा जाये। अधिक लाभ देने वाली पौध प्रजाति का चयन किया जाये, जिससे भविष्य में इनकी मांग के अनुरूप आपूर्ति (पौध उत्पादन) भी तैयार की जा सके। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान की बैठक में समीक्षा कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के किसानों और निजी क्षेत्रों को भी 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान से जोड़ा जाए। सभी विभाग लक्ष्य की पूर्ति के लिए पौधरोपण में तेजी लाएं और रोपे गए पौधों की मॉनिटरिंग भी बेहतर तरीके से करें। उद्यानिकी विभाग किसानों को फलदार वृक्ष लगाने के लिए प्रेरित करे, जिससे निकट भविष्य में फलों को बेचकर उनकी आय में वृद्धि हो सके। 'एक बगिया मां के नाम' के माध्यम से राज्य सरकार स्व-सहायता समूहों की महिलाओं की आय बढ़ाने के लिए भी संकल्पित है। फलों की बगिया विकसित करने के लिए उन्हें

तीन साल तक आर्थिक मदद दी जाएगी।

वन विभाग ने लगाए हैं अब तक 5 करोड़ 38 लाख से अधिक पौधे

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर प्रदेशभर में गत 5 जून से 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान चलाया जा रहा है, जो 30 सितंबर तक चलेगा। प्रमुख सचिव पर्यावरण ने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस से प्रारंभ 'एक पेड़ मां के नाम अभियान' की मॉनीटरिंग के लिए मेरी लाइफ पोर्टल तैयार किया गया है। गत 5 जून से अब तक प्रदेश के विभिन्न विभागों और जिलों में करीब 5 करोड़ 54 लाख से अधिक पौधरोपण कर पोर्टल पर दर्ज कर दिया गया है। इस अभियान में अकेले वन विभाग ने ही वर्ष 2025-26 में 3.40 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा था। इस लक्ष्य के विरूद्ध 22 जुलाई तक 5 करोड़ 38 लाख से अधिक पौधों का रोपण कर दिया गया है। कुल पौधरोपण की 95 प्रतिशत से अधिक उपलब्धि वन विभाग ने हासिल की है। वन विभाग ने व्यापक कार्ययोजना तैयार की थी, जिसमें पौधरोपण क्षेत्रों को अभियान से जोड़ने, शासन के निर्देशानुसार पौधरोपण की तैयारियां, संयुक्त वन प्रबंधन समितियों की सक्रिय भागीदारी, प्लांटेशन मॉनिटरिंग सिस्टम से पौधों की निगरानी और 'मेरी लाइफ' पोर्टल पर पौधरोपण की नियमित जानकारी अपलोड करना भी शामिल है।

अभियान की अब तक की प्रगति

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान में उच्च शिक्षा विभाग ने 1.60 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। अब तक प्रदेश के सभी शासकीय विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालय परिसरों में 1 लाख से अधिक देशी फलदार पौधे लगाए जा चुके हैं। इसी प्रकार नगरीय विकास एवं आवास विभाग ने 1 करोड़ पौधरोपण का लक्ष्य रखा है। लक्ष्य के विरूद्ध प्रदेश के सभी नगरीय निकायों में 4.15 लाख छायादार और औषधीय पौधे लगाए जा चुके हैं। यह अभियान नगरीय क्षेत्र में अर्बन फॉरेस्ट (ग्रीन कवर) तैयार करने में बेहद सहायक सिद्ध होगा। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग ने बड़े पैमाने पर स्व-सहायता समूह की महिलाओं को पौधरोपण अभियान से जोड़ा है। अब तक 7 हजार से अधिक महिलाओं को पौधरोपण स्थल का भ्रमण कराया गया है। विभाग की योजना रोपित किए गए सभी पौधों के रख-रखाव की जिम्मेदारी महिला स्व-सहायता समूहों को सौंपने की है।

करीब 50 हजार पौधे रोजाना लगा रहा स्कूल शिक्षा विभाग

अभियान के तहत स्कूल शिक्षा विभाग ने 86 लाख 27 हजार से अधिक पौधरोपण का लक्ष्य तय किया है। प्रदेश के सभी स्कूलों और खुले मैदान में अब तक 5 लाख 37 हजार 625 आम, अमरूद, नीम, पीपल, बरगद, सागौन एवं शीशम जैसे फलदार एवं छायादार पौधे लगाए जा चुके हैं। बैठक में स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. संजय गोयल ने बताया कि विभाग ने स्कूली बच्चों को इस अभियान से सक्रियता से जोड़ा है। विभाग प्रतिदिन बच्चों से पौधरोपण कराकर बच्चों की माता के साथ फोटो खिंचवाकर इन्हें मेरी लाइफ पोर्टल पर दर्ज कर रहा है। उन्होंने बताया कि सबके सामूहिक सहयोग एवं प्रयासों से विभाग द्वारा रोजाना 50 हजार पौधे लगाए जा रहे हैं।

ग्वालियर में कार ने कांवड़ियों को कुचला, 4 की मौत

इनमें तीन एक ही परिवार के; हादसे के बाद खाई में पलटी गाड़ी, कार सवार फरार

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में आगरा-मुंबई नेशनल हाईवे पर एक कार ने सड़क किनारे चल रहे कांवड़ियों को कुचल दिया। इसके बाद कार पलट गई। हादसे में तीन कांवड़ियों की मौके पर ही मौत हो गई है, जबकि एक घायल ने हॉस्पिटल में दम तोड़ दिया। दो की हालत गंभीर है। मृतकों में तीन एक ही परिवार के हैं। हादसा नेशनल हाईवे के शिवपुरी लिंक रोड स्थित शीतला माता मंदिर गेट के पास मंगलवार देर रात करीब 1 बजे हुआ। हादसे के बाद कार समेत कांवड़िए सड़क किनारे खाई में जा गिरे थे। कंपू, जनकगंज, झांसी रोड, माधौगंज थानों की पुलिस मौके पर पहुंची और सभी को खाई से निकालकर जेएएच के ट्रॉमा सेंटर पहुंचाया। डॉक्टरों ने तीन कांवड़ियों को मृत घोषित कर दिया। सीएसपी हीना खान ने बताया, कार काफी स्पीड में थी। इसी दौरान टायर फट गया, जिस कारण अचानक बेकाबू होकर कांवड़ियों को कुचलते हुए हाईवे से नीचे झाड़ियों में पलट गई। पुलिस पहुंची तो कार में कोई

नहीं मिला। कार सवारों की तलाश की जा रही है।

सभी कांवड़िए एक ही गांव के रहने वाले थे - जानकारी के अनुसार, दो दिन पहले सिमरिया पंचायत में बंजारों का पुरा से एक परिवार और समाज के 13 लोग कांवड़ भरने के लिए निकले थे। सभी भदावना के शिवमंदिर के झरने से जल लेकर घाटीगांव के सिमरिया लौट रहे थे। कांवड़ में भरे जल से बुधवार को महादेव का अभिषेक करना था। शीतला माता मंदिर तिराहा पर पहुंचे ही थे कि हादसा हो गया। घटनास्थल से उनका गांव 35 किमी ही दूर था।

हादसे में इनकी गई जान

- पूरन बंजारा निवासी सीडना का चक सिमरिया घाटीगांव
- रमेश बंजारा निवासी सिमरिया घाटीगांव
- दिनेश बंजारा निवासी सिमरिया घाटीगांव
- धर्मेंद्र उर्फ छोटू निवासी घाटीगांव

मुख्यमंत्री ने ग्वालियर में सड़क दुर्घटना में चार कांवड़ियों के निधन पर गहन दुख व्यक्त किया,4-4 लाख रुपए की अनुग्रह सहायता - मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ग्वालियर जिले की भितरवार विधानसभा क्षेत्र में पवित्र कांवड़ यात्रा के दौरान हुई सड़क दुर्घटना में 4 कांवड़ियों के आकस्मिक निधन पर गहन दुःख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मृतक कावड़ियों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बाबा महाकाल से दिवंगतों की आत्मा की शांति एवं श्रीचरणों में स्थान देने के लिए प्रार्थना की है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शोकाकुल परिजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं प्रकट करते हुए चारों मृतकों के निकटतम परिजनों को 4-4 लाख रुपए की अनुग्रह सहायता राशि प्रदान करने के निर्देश दिए हैं। ज्ञात हो कि 22 जुलाई 2025 की अर्द्धरात्रि लगभग 12:30 से 1 बजे के मध्य ग्वालियर के शीतला माता मंदिर चौराहा, शिवपुरी लिंक रोड पर घाटीगांव निवासी छह कांवड़ियों को एक अनियंत्रित कार द्वारा टक्कर मारे जाने से 4 कांवड़ियों की मृत्यु हो गई और 2 कांवड़िये घायल हो गए थे। कार चालक मौक़े से फ़रार हो गया था, जिसे बाद में पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया है। जिला प्रशासन ग्वालियर द्वारा चिकित्सकों को बेहतर एवं निःशुल्क इलाज करने के निर्देश दिए है। पीड़ितों को प्रशासन की ओर से हर संभव मदद भी उपलब्ध कराई जा रही है।

उल्लेखनीय है कि सड़क दुर्घटना में घाटीगांव निवासी मृतकों में श्री वकील पुत्र गिरवर (40 वर्ष), श्री रमेश पुत्र पांडेय (38 वर्ष), श्री दिनेश पुत्र बेताल (21 वर्ष) एवं श्री छोटू पुत्र अंतराम (18 वर्ष) शामिल हैं तथा दो कांवड़िये घायल हैं।

टीकमगढ़ में रेत माफियाओं ने वन अमले से की मारपीट

● छुड़ा ले गए ट्रैक्टर, रेंज ऑफिसर बोले-एक सुरक्षाकर्मी के शामिल होने की बात सामने आई है

टीकमगढ़ (नप्र)। टीकमगढ़ के मधुवन वन क्षेत्र की बड़माड़ई बीट में बुधवार दोपहर 12 बजे अवैध रेत खनन रोकने पहुंचे वन विभाग के कर्मचारियों पर खनिज माफियाओं ने हमला कर दिया। मंगलवार रात खनन माफिया वन भूमि से रेत का अवैध खनन कर रहे थे, इस दौरान उनका ट्रैक्टर मिट्टी में फंस गया। जिसके बाद वह उसे वहीं छोड़कर भाग गए। बुधवार सुबह वन विभाग की टीम को मामले की सूचना मिली जिसके बाद टीम मौके पर पहुंची। उन्होंने जेसीबी की मदद से ट्रैक्टर निकालकर जब्त किया। टीम जब ट्रैक्टर को वन विभाग ले जा रही थी, तभी बाइक पर सवार एक दर्जन माफिया वहां पहुंच गए। माफियाओं ने वन कर्मियों से मारपीट की और गाली-गलौज करते हुए ट्रैक्टर-ट्राली छीनकर ले गए।

घटना के बाद वन अमला कोतवाली पहुंचा और दी लिखित शिकायत - इस घटना के बाद वन विभाग के अधिकारी और कर्मचारी कोतवाली पहुंचे और एक दर्जन माफियाओं के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई। कोतवाली पुलिस ने मामला संज्ञान में लेते हुए जांच और कार्रवाई शुरू कर दी है। वन विभाग के रेंज ऑफिसर सौरभ जैन ने बताया कि विभाग की जांच में सुरक्षा श्रमिक महेंद्र सिंह ठाकुर की संलिप्तता सामने आई है। उनके खिलाफ विभागीय कार्रवाई शुरू कर दी गई है और पुलिस में भी रिपोर्ट दी गई है। साथ ही कहा कि अवैध खनन के मामलों में विभाग सख्त रुख अपनाएगा और किसी भी दोषी को नहीं छोड़ा जाएगा, चाहे वह विभाग का कर्मचारी ही क्यों न हो। घटना के दौरान आरोपियों का वीडियो भी बनाया है। फिलहाल पूरे मामले की पुलिस जांच जारी है और रेत माफियाओं की पहचान कर उनके खिलाफ एफआईआर की प्रक्रिया प्रचलन में है।

भोपाल में महिला डॉक्टर ने फांसी लगाकर सुसाइड किया

● शव को फंदे से उतारकर अस्पताल लेकर पहुंचे थे परिजन, डॉक्टरों ने डेथ डिक्लेयर की

भोपाल (नप्र)। भोपाल के टीटी नगर इलाके में रहने वाली महिला डॉक्टर ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। घटना मंगलवार रात की है। पुलिस ने मर्ग कायम कर मामले की जांच शुरू कर दी है। सुसाइड नोट नहीं मिलने से खुदकुशी के कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। बुधवार दोपहर पीएम के बाद बॉडी परिजनों के हवाले कर दी गई है। एएसआई दिग्विजय वैष्णव ने बताया कि शिवांगी यादव पिता कृष्ण कुमार यादव (27) को परिजनों ने मंगलवार की रात आठ बजे फंदे पर लटका देखा था। उसको फंदे से उतारकर परिजन जेपी अस्पताल ले गए। यहां डॉक्टर ने चैक करने के बाद उसे मृत घोषित कर दिया।

महाकाल मंदिर प्रशासन के खिलाफ कांग्रेस का प्रदर्शन

उज्जैन में बीजेपी विधायक पर कार्रवाई की मांग; कार्यकर्ता बोले- परमिशन किस आधार पर मिली

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने महाकाल मंदिर प्रशासक कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। उनकी मांग है कि विधायक गोलू शुक्ला के बेटे रुद्राक्ष को गिरफ्तार कर जेल भेजा जाए। साथ ही महाकाल प्रशासक अपना इस्तीफा दें। दरअसल, श्रावण माह के दूसरे सोमवार पर भस्म आरती के दौरान महाकाल मंदिर के गर्भगृह में इंदौर-3 के भाजपा विधायक गोलू शुक्ला और उसके बेटे रुद्राक्ष के जबरन घुसे थे। कार्यकर्ताओं का कहना है कि मंदिर के गर्भगृह में जबरन घुसकर कुकर्म किया गया है। हमारी एक ही मांग है कि महाकाल प्रशासक इस्तीफा दे और विधायक के बेटे को गिरफ्तार कर तुरंत कार्रवाई की जाए। साथ ही, हमें यह जानकारी भी चाहिए कि विधायक को गर्भगृह में प्रवेश की अनुमति किसने दी। प्रदर्शन के बीच कांग्रेस की एक कार्यकर्ता ने कहा कि महाकाल मंदिर बीजेपी के बाप का हो गया है। यहां मंत्री, विधायक और उनके पुत्र गर्भगृह में जा सकते है लेकिन आम आदमी

का प्रवेश पूरी तरह बंद है।

विधायक को परमिशन किस आधार पर दी गई - मंदिर की देहरी तक पहुंचने के मामले में 2 साल पहले कांग्रेस नेता और पूर्व पार्षद माया त्रिवेदी के खिलाफ महाकाल समिति ने एफआईआर दर्ज की थी। उन्होंने कहा कि एक बार तो मुझे देहली तक भी नहीं जाने दिया गया था। मुझे धरना देना पड़ा, तब जाकर मुझे जल चढ़ाने की अनुमति दी गई। इतनी हठधर्मिता थी और जब पता चला कि मैं कांग्रेस से हूं, मुझे रोक दिया गया। ऐसे में उन्होंने कहा कि ऐसा लगता है मानो महाकाल मंदिर अब बीजेपी के बाप का हो गया है। यहां सिर्फ भाजपा के मंत्री, विधायक और उनके पुत्र ही गर्भगृह में जा सकते हैं, लेकिन आम आदमी का प्रवेश पूरी तरह रोक दिया गया है।

उज्जैन जिला प्रशासन नहीं कर रहा ठोस कार्रवाई -नगर निगम नेता प्रतिपक्ष रवि राय ने कहा कि हम मंदिर समिति के सदस्यों से आग्रह करने आए हैं कि बीजेपी के विधायक और उनके पुत्र मंदिर के गर्भगृह में जबरन घुसते हैं और वहां मौजूद अधिकारियों व पुजारियों के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। ऐसे इन्हें रोका जाए और उनके खिलाफ प्रकरण दर्ज किया जाए।यह वही विधायक पुत्र हैं, जिन्होंने देवास के मां चामुंडा के दरबार में रात 12:30 बजे मंदिर खुलवाया था और पुजारी के साथ धक्का-मुक्की की था। उस मामले में देवास जिला प्रशासन ने तत्काल एफआईआर दर्ज की थी, लेकिन इस बार उज्जैन जिला प्रशासन कोई ठोस कार्रवाई नहीं कर रहा है। हमारी मांग है कि जो भी जांच समिति बनाई जाए, उसमें निष्पक्ष लोगों को शामिल किया जाए।

रिश्वत में 50 हजार रुपए लेते पकड़ाया सहकारिता विभाग अधिकारी

● सागर में सैल्समेन पद की अनुशंसा करने मांगे थे 1 लाख

सागर (नप्र)। सागर में आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) की टीम ने सहकारिता विभाग के संयुक्त पंजीयक को 50 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगेहाथ पकड़ा है। वह सेल्समैन के पद की अनुशंसा करने के एवज में रिश्वत की मांग कर रहे थे। मामले में ईओडब्ल्यू की टीम कार्रवाई कर रही है। छतरपुर निवासी शिकायतकर्ता ने आर्थिक अपराध शाखा सागर में शिकायत की थी। बताया कि उसने सेल्समैन पद पर भर्ती के लिए आवेदन किया था। सेल्समैन के पद की अनुशंसा संयुक्त पंजीयक शिवेंद्र देव पांडे को करना है। इसी को लेकर उनसे मिला था। जिस पर उन्होंने अनुशंसा करने के एवज में 1 लाख रुपए रिश्वत की मांग की। बाद में बात 50 हजार रुपए में पक्की हुई। शिकायत मिलते ही ईओडब्ल्यू ने जांच शुरू की। जांच में शिकायत सही पाई गई। जिसके बाद बुधवार को कार्रवाई के लिए टीम पहुंची। शिकायतकर्ता को रिश्वत की राशि 50 हजार रुपए लेकर भेजा गया।

रिश्वत की राशि के साथ रंगेहाथ पकड़ा - शिकायतकर्ता ने संयुक्त पंजीयक कार्यालय में पहुंचकर रिश्वत की राशि संयुक्त पंजीयक शिवेंद्र देव पांडे को दी। तभी ईओडब्ल्यू की टीम ने दबिश देकर उन्हें रिश्वत की राशि के साथ रंगेहाथ पकड़ लिया।

MPIDC MP INDUSTRIAL DEVELOPMENT CORPORATION LTD.

रोज़गारपरक औद्योगिक विकास की राह पर मध्यप्रदेश

उद्योग एवं रोज़गार वर्ष 2025
इन्वेस्ट मध्यप्रदेश

₹ 400 करोड़ से अधिक की औद्योगिक इकाइयों का भूमिपूजन
एवं
उद्योगपतियों से संवाद

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव
द्वारा

24 जुलाई 2025 । सायं 4:00 बजे । औद्योगिक क्षेत्र अचारपुरा, भोपाल

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

नए उद्योग लाएंगे विकास के नए अवसर
• गारमेंट सेक्टर • टेक्सटाइल सेक्टर
• हाई टेक इलेक्ट्रॉनिक्स • फार्मा सेक्टर • कृषि उपकरण

D-11069/25 सीधा प्रसारण @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP